

فَأَنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١١٨﴾ قَالَ اللَّهُ هَذَا يَوْمٌ يَنْفَعُ الصَّادِقِينَ

तो बेशक तू ही है ग़ालिब हिकमत वाला²⁹⁴ **अल्लाह** ने फ़रमाया कि यह²⁹⁵ है वोह दिन जिस में सच्चों को²⁹⁶

صَدَقْتَهُمْ^ط لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا^ط

उन का सच काम आएगा उन के लिये बाग़ हैं जिन के नीचे नहरें रवां हमेशा हमेशा उन में रहेंगे

رَاضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَاضُوا عَنْهُ^ط ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١١٩﴾ لِلَّهِ مُلْكُ

अल्लाह उन से राज़ी और वोह **अल्लाह** से राज़ी यह है बड़ी काम्याबी **अल्लाह** ही के लिये है

السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا فِيهِنَّ^ط وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٢٠﴾

आस्मानों और ज़मीन और जो कुछ इन में है सब की सल्तनत और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है²⁹⁷

﴿١٦٥﴾ ﴿٦ سُوْرَةُ الْأَنْعَامِ مَكِّيَّةٌ ٥٥﴾ ﴿٢٠﴾ ﴿٢٠﴾

सूरए अन्आम मक्किय्या है, इस में एक सो पेंसठ आयतें और बीस रूकूअ हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो बड़ा मेहरबान रहम वाला¹

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُمَاتِ وَالنُّوْرَ^٥

सब ख़ूबियां **अल्लाह** को जिस ने आस्मान और ज़मीन बनाए² और अंधेरियां और रोशनी पैदा की³

हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की मौत क़बले नुज़ूल इस से साबित न हो सकेगी। 293 : और मेरा उन का किसी का हाल तुझ से पोशीदा नहीं। 294 : हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को मा'लूम है कि कौम में बा'ज लोग कुफ़्र पर मुसिर रहे, बा'ज शरफ़े ईमान से मुशरफ़ हुए, इस लिये आप की बारगाहे इलाही में येह अर्ज़ है कि उन में से जो कुफ़्र पर काइम रहे उन पर तू अज़ाब फ़रमाए तो बिल्कुल हक़ व बजा और अदलो इन्साफ़ है क्यूं कि उन्होंने ने हुज्जत तमाम होने के बा'द कुफ़्र इख़्तियार किया और जो ईमान लाए उन्हें तू बख़्शे तो तेरा फ़ज़्लो करम है और तेरा हर काम हिकमत है। 295 : रोज़े क़ियामत 296 : जो दुन्या में सच्चाई पर रहे जैसे कि हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلَام 297 : सादिक् को सवाब देने पर भी और काज़िब को अज़ाब फ़रमाने पर भी। **मस्अला** : कुदरत मुम्किनात से मुतअल्लिक होती है न कि वाजिबात व मुहालात से, तो मा'ना आयत के येह हैं कि **अल्लाह** तआला हर अम्रे मुम्किनुल वुजूद पर क़ादिर है। (म) **मस्अला** : किज़्ब वग़ैरा उयूबो क़बाएह **अल्लाह** عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के लिये मुहाल हैं इन को तहते कुदरत बताना और इस आयत से सनद लाना गुलत व बातिल है। 1 : सूरए अन्आम मक्की है इस में बीस रूकूअ और एक सो पेंसठ आयतें तीन हज़ार एक सो कलिमे और बारह हज़ार नव सो पेंतीस हर्फ़ हैं। हज़रते इब्ने अब्बास عَلَيْهِمَا السَّلَام ने फ़रमाया कि येह कुल सूत एक ही शब में ब मक़ाम मक्कए मुकर्रमा नाज़िल हुई और इस के साथ सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते आए जिन से आस्मानों के किनारे भर गए। येह भी एक रिवायत में है कि वोह फ़िरिश्ते तस्बीहो तक्दीस करते आए और सथियदे आलम عَلَيْهِ السَّلَام "سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيمِ" फ़रमाते हुए सर ब सुजूद हुए। 2 : हज़रते का'ब अहबार عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया तौरैत में सब से अव्वल येही आयत है, इस आयत में बन्दों को शाने इस्तिग़ना के साथ हम्द की ता'लीम फ़रमाई गई और पैदाइशे आस्मान व ज़मीन का ज़िक्र इस लिये है कि इन में नाज़िरीन के लिये बहुत अज़ाइबे कुदरत व ग़राइबे हिकमत और इब्रतें व मनाफ़ेअ हैं। 3 : या'नी हर एक अंधेरी और रोशनी ख़्वाह वोह अंधेरी शब की हो या कुफ़्र की या जहल की या जहन्म की और रोशनी ख़्वाह दिन की हो या ईमान व हिदायत व इल्म व जन्नत की। **ظُلُمَات** को जम्अ और **نُور** को वाहिद के सोगे से ज़िक्र फ़रमाने में इस तरफ़ इशारा है कि बातिल की राहें बहुत कसीर हैं और राहे हक़ सिर्फ़ एक दीने इस्लाम।

ثُمَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُونَ ① هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ طِينٍ

इस पर⁴ काफ़िर लोग अपने रब के बराबर ठहराते हैं⁵ वोही है जिस ने तुम्हें⁶ मिट्टी से पैदा किया

ثُمَّ قَضَىٰ أَجَلًا ٧ وَأَجَلٌ مُّسَيِّئٌ عِنْدَ اللَّهِ ثُمَّ أَنْتُمْ تَبْتَرُونَ ② وَهُوَ

फिर एक मीआद का हुक्म रखा⁷ और एक मुकररा वा'दा उस के यहां है⁸ फिर तुम लोग शक करते हो और वोही

اللَّهُ فِي السَّمَوَاتِ وَفِي الْأَرْضِ ٨ يَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَجَهْرَكُمْ وَيَعْلَمُ مَا

अल्लाह है आस्मानों का और ज़मीन का⁹ उसे तुम्हारा छुपा और ज़ाहिर सब मा'लूम है और तुम्हारे

تَكْسِبُونَ ③ وَمَا تَأْتِيهِمْ مِنْ آيَةٍ مِنْ آيَاتِ رَبِّهِمْ إِلَّا كَانُوا عَنْهَا

काम जानता है और उन के पास कोई भी निशानी उन के रब की निशानियों से नहीं आती मगर उस से मुंह

مُعْرِضِينَ ④ فَقَدْ كَذَّبُوا بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ ٩ فَسَوْفَ يَأْتِيهِمْ

फेर लेते हैं तो बेशक उन्होंने ने हक़ को झुटलाया¹⁰ जब उन के पास आया तो अब उन्हें ख़बर हुवा

أَنْبَاءُ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ⑤ أَلَمْ يَرَوْا كَمَا أَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ

चाहती है उस चीज़ की जिस पर हंस रहे थे¹¹ क्या उन्होंने ने न देखा कि हम ने उन से पहले¹² कितनी संगतें

مِنْ قَرْنٍ مَكَّنَّهِمْ فِي الْأَرْضِ مَا لَمْ نُكَيِّنْ لَكُمْ وَأَرْسَلْنَا السَّمَاءَ

(क़ौमों) खपा दीं उन्हें हम ने ज़मीन में वोह जमाव दिया¹³ जो तुम को न दिया और उन पर

عَلَيْهِمْ مِدْرَارًا ١٠ وَجَعَلْنَا الْأَنْهَارَ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمْ فَأَهْلَكْنَا مِنْهُمْ

मूस्ताधार पानी भेजा¹⁴ और उन के नीचे नहरें बहाई¹⁵ तो उन्हें हम ने उन के गुनाहों

بِدُنُوبِهِمْ وَأَنْشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قَرْنًا آخَرِينَ ⑥ وَلَوْ نَرَاكَ عَلَيَّكَ

के सबब हलाक किया¹⁶ और उन के बा'द और संगत उठाई¹⁷ और अगर हम तुम पर काग़ज़

4 : या'नी बा वुजूद ऐसे दलाइल पर मुत्तलअ होने और ऐसे निशानहाए कुदरत देखने के 5 : दूसरों को, हत्ता कि पथ्थरों को पूजते हैं बा वुजूदे कि इस के मुक़िर (इक्क़ारी) हैं कि आस्मानों और ज़मीन का पैदा करने वाला अल्लाह है। 6 : या'नी तुम्हारी अस्ल हज़रते आदम को जिन की नस्ल से तुम पैदा हुए। फ़ाएहा : इस में मुशिरकीन का रद है जो कहते थे कि हम जब गल कर मिट्टी हो जाएंगे फिर कैसे जिन्दा किये जाएंगे ? उन्हें बताया गया कि तुम्हारी अस्ल मिट्टी ही से है तो फिर दोबारा पैदा किये जाने पर क्या तअज़्जुब ! जिस कादिर ने पहले पैदा किया उस की कुदरत से बा'दे मौत जिन्दा फ़रमाने को बईद जानना नादानी है। 7 : जिस के पूरा हो जाने पर तुम मर जाओगे। 8 : मरने के बा'द उठाने का। 9 : उस का कोई शरीक नहीं। 10 : यहां हक़ से या कुरआने मजीद की आयात मुराद हैं या सय्यिदे आलम صَلَّ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ और आप के मो'जिज़ात। 11 : कि वोह कैसी अज़मत वाली है और उस की हंसी बनाने का अन्जाम कैसा वबाल व अज़ाब। 12 : पिछली उम्मतों में से 13 : कुव्वत व माल और दुन्या के कसीर सामान दे कर 14 : जिस से खेतियां शादाब हों 15 : जिस से बाग़ परवरिश पाए और दुन्या की जिन्दगानी के लिये ऐशो राहत के अस्बाब बहम पहुंचे 16 : कि उन्होंने ने अम्बिया की तक्ज़ीब की और उन का येह सरो सामान उन्हें हलाकत

كِتَابِي قَرُطَائِسٍ فَلَمَسُوهُ بِأَيْدِيهِمْ لَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَذَا

में कुछ लिखा हुआ उतारते¹⁸ कि वोह उसे अपने हाथों से छूते जब भी काफिर कहते कि येह नहीं

الْأَسْحَرُ مُبِينٌ ٥ وَقَالُوا لَوْلَا أَنْزَلَ عَلَيْهِ مَلَكٌ ٦ وَلَوْ أَنْزَلْنَا مَلَكًا

मगर खुला जादू और बोले¹⁹ इन पर²⁰ कोई फिरिश्ता क्यूं न उतारा गया और अगर हम फिरिश्ता उतारते²¹

لَقُضِيَ الْأَمْرُ ثُمَّ لَا يُنظَرُونَ ٨ وَلَوْ جَعَلْنَاهُ مَلَكًا لَجَعَلْنَاهُ رَجُلًا

तो काम तमाम हो गया होता²² फिर उन्हें मोहलत न दी जाती²³ और अगर हम नबी को फिरिश्ता करते²⁴ जब भी उसे मर्द ही बनाते²⁵

وَاللَّبْسَاءُ عَلَيْهِمْ مَا يَلْبَسُونَ ٩ وَلَقَدْ آسْتَهْزِئُ بِرُسُلٍ مِّن قَبْلِكَ

और उन पर वोही शुबा रखते जिस में अब पड़े हैं और जरूर ऐ महबूब तुम से पहले रसूलों के साथ भी टट्टा किया गया

فَحَاقَ بِالَّذِينَ سَخِرُوا مِنْهُمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ١٠ قُلْ

तो वोह जो उन से हंसते थे उन की हंसी उन्हीं को ले बैठी²⁶ तुम फरमा दो²⁷

سِيرُوا فِي الْأَرْضِ ثُمَّ انظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكذِبِينَ ١١ قُلْ

ज़मीन में सैर करो फिर देखो कि झुटलाने वालों का कैसा अन्जाम हुआ²⁸ तुम फरमाओ

से न बचा सका । 17 : और दूसरे कर्न (ज़माने) वालों को उन का जा नशीन किया, मुहड़ा येह है कि गुज़री हुई उम्मतों के हाल से इब्रत व नसीहत हासिल करना चाहिये कि वोह लोग बा वुजूदे कुव्वतो दौलत व कस्रते मालो इयाल के कुफ़्रो तुग़यान की वजह से हलाक कर दिये गए तो चाहिये कि उन के हाल से इब्रत हासिल कर के ख़्वाबे गफ़्लत से बेदार हों । 18 शाने नुज़ूल : येह आयत नज़् बिन हारिस और अब्दुल्लाह बिन उमय्या और नौफल बिन खुवैलिद के हक़ में नाज़िल हुई जिन्होंने ने कहा था कि मुहम्मद (ﷺ) पर हम हरगिज़ ईमान न लाएंगे जब तक तुम हमारे पास अब्लाह की तरफ़ से किताब न लाओ जिस के साथ चार फिरिश्ते हों वोह गवाही दें कि येह अब्लाह की किताब है और तुम उस के रसूल हो । इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और बताया गया कि येह सब हीले बहाने हैं अगर कागज़ पर लिखी हुई किताब उतार दी जाती और वोह उसे अपने हाथों से छू कर और टटोल कर देख भी लेते और येह कहने का मौक़अ भी न होता कि नज़् बन्दी कर दी गई थी किताब उतरती नज़् आई, था कुछ भी नहीं । तो भी येह बद नसीब ईमान लाने वाले न थे उस को जादू बताते और जिस तरह शक्कुल क़मर को जादू बताया और उस मो'जिज़ को देख कर ईमान न लाए इस तरह इस पर भी ईमान न लाते, क्यूं कि जो लोग इनादन इन्कार करते हैं वोह आयात व मो'जिज़ात से मुन्तफ़ेअ नहीं हो सकते । 19 : मुशिरकीन 20 : या'नी सय्यिदे आलम (ﷺ) और फिर भी येह ईमान न लाते 22 : या'नी अज़ाब वाजिब हो जाता और येह सुन्ते इलाहियह है कि जब कुफ़्फ़र कोई निशानी त़लब करें और उस के बा'द भी ईमान न लाएं तो अज़ाब वाजिब हो जाता है और वोह हलाक कर दिये जाते हैं । 23 : एक लम्हे की भी और अज़ाब मुअख़्ख़र न किया जाता तो फिरिश्ते का उतारना जिस को वोह त़लब करते हैं उन्हें क्या नाफ़ेअ होता । 24 : येह उन कुफ़्फ़र का जवाब है जो नबी (ﷺ) को कहा करते थे येह हमारी तरह बशर हैं और इसी ख़ब्त् (जून) में वोह ईमान से महरूम रहते थे । इन्हें इन्सानों में से रसूल मब़्क़स फ़रमाने की हिक़मत बताई जाती है कि इन के मुन्तफ़ेअ होने और ता'लीमे नबी से फ़ैज़ उठाने की येही सूत है कि नबी सूते बशरी में जल्वा गर हो, क्यूं कि फिरिश्ते को उस की अस्ती सूत में देखने की तो येह लोग ताब न ला सकते, देखते ही हैबत से बेहोश हो जाते या मर जाते । इस लिये अगर बिलफ़र्ज़ रसूल फिरिश्ता ही बनाया जाता 25 : और सूते इन्सानी ही में भेजते, ताकि येह लोग उस को देख सकें उस का कलाम सुन सकें उस से दीन के अहक़ाम मा'लूम कर सकें, लेकिन अगर फिरिश्ता सूते बशरी में आता तो उन्हें फिर वोही कहने का मौक़अ रहता कि येह बशर है तो फिरिश्ते को नबी बनाने का क्या फ़ाएदा होता । 26 : वोह मुब़लाए अज़ाब हुए । इस में नबिय्ये करीम (ﷺ) की तसल्ली व तस्कीने ख़ातिर है कि आप रन्जीदा व मलूल न हों, कुफ़्फ़र का पहले अम्बिया के साथ भी येही दस्तूर रहा है और इस का वबाल उन कुफ़्फ़र को उठाना पड़ा है, नीज़ मुशिरकीन को तम्बीह है कि पिछली उम्मतों के हाल से इब्रत हासिल करें और अम्बिया के साथ तरीके अदब मल्हूज़ रखें ताकि पहलों की तरह मुब़लाए अज़ाब न हों । 27 : ऐ हबीब (ﷺ) ! इन तमस्ख़ुर (ठठ्ठु) करने वालों से कि तुम 28 : और

لَمِن مَّا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ قُلَّ لِلَّهِ ط كَتَبَ عَلَى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ط

किस का है जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में²⁹ तुम फ़रमाओ **अल्लाह** का है³⁰ उस ने अपने करम के जिम्मे पर रहमत लिख ली है³¹

لِيَجْمَعَنَّكُمْ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ ط الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ

वेशक ज़रूर तुम्हें क़ियामत के दिन जम्अ करेगा³² इस में कुछ शक नहीं वोह जिन्हों ने अपनी जान नुक़सान में डाली³³

فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ١٢ ۞ وَلَهُ مَا سَكَنَ فِي اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ ط وَهُوَ السَّمِيعُ

ईमान नहीं लाते और उसी का है जो कुछ बसता है रात और दिन में³⁴ और वोही है सुनता

الْعَلِيمُ ١٣ ۞ قُلْ أَغَيْرَ اللَّهِ أُتَّخَذُ وَلِيًّا فَأَطِرِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ

जानता³⁵ तुम फ़रमाओ क्या **अल्लाह** के सिवा किसी और को वाली बनाऊं³⁶ वोह **अल्लाह** जिस ने आस्मान व ज़मीन पैदा किये

وَهُوَ يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ ط قُلْ إِنِّي أُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَسْلَمَ

और वोह खिलाता है और खाने से पाक है³⁷ तुम फ़रमाओ मुझे हुक्म हुवा है कि सब से पहले गरदन रखू³⁸

وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ١٤ ۞ قُلْ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي

और हरगिज़ शिर्क वालों में न होना तुम फ़रमाओ अगर मैं अपने रब की ना फ़रमानी करूं तो मुझे

عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ١٥ ۞ مَنْ يُصْرَفْ عَنْهُ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَاحَهُ ط

बड़े दिन³⁹ के अज़ाब का डर है उस दिन जिस से अज़ाब फेर दिया जाए⁴⁰ ज़रूर उस पर **अल्लाह** की मेहर (रहमत) हुई

وَذَلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِينُ ١٦ ۞ وَإِنْ يَسْسُكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا

और येही खुली काम्याबी है और अगर तुझे **अल्लाह** कोई बुराई⁴¹ पहुंचाए तो उस के सिवा उस का कोई दूर करने वाला

उन्हों ने कुफ़्र व तकज़ीब का क्या समरा पाया । 29 : अगर वोह इस का जवाब न दें तो 30 : क्यूं कि इस के सिवा कोई जवाब ही नहीं है और वोह इस के खिलाफ नहीं कर सकते क्यूं कि बुत जिन को मुशिरकीन पूजते हैं वोह बेजान हैं किसी चीज़ के मालिक होने की सलाहियत नहीं रखते खुद दूसरे के मम्लुक हैं, आस्मान व ज़मीन का वोही मालिक हो सकता है जो हय्यु व कय्यूम, अज़ली व अबदी, कादिरे मुल्लक, हर शै पर मुतसरिफ़ व हुक्मरान हो, तमाम चीज़ें उस के पैदा करने से वुजूद में आई हों, ऐसा सिवाए **अल्लाह** के कोई नहीं, इस लिये तमाम समावी व अर्जी काएनात का मालिक उस के सिवा कोई नहीं हो सकता । 31 : या'नी उस ने रहमत का वा'दा किया और उस का वा'दा खिलाफ नहीं हो सकता क्यूं कि वा'दा खिलाफ़ी व किज़्ब उस के लिये मुहाल है । और रहमत आ़म है दीनी हो या दुन्यवी अपनी मा'रिफ़त और तौहीद और इल्म की तरफ़ हिदायत फ़रमाना भी रहमत में दाख़िल है और कुफ़्र को मोहलत देना और उक़ूबत में ता'जील न फ़रमाना भी, कि इस से उन्हें तौबा और इनाबत का मौक़अ भी मिलता है । (मैल रूफ़ी) 32 : और आ'माल का बदला देगा 33 : कुफ़्र इख़्तियार कर के 34 : या'नी तमाम मौजूदात उसी की मिलक है और वोह सब का ख़ालिक, मालिक, रब है । 35 : उस से कोई चीज़ पोशीदा नहीं । 36 शाने नुज़ूल : जब कुफ़्र ने हुज़ुरे अक्दस صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ को अपने बाप दादा के दीन की दा'वत दी तो येह आयत नाज़िल हुई । 37 : या'नी ख़ल्क सब उस की मोहताज़ है, वोह सब से बे नियाज़ । 38 : क्यूं कि नबी अपनी उम्मत से दीन में साबिक होते हैं । 39 : या'नी रोज़े क़ियामत 40 : और नजात दी जाए 41 : बीमारी या तंगदस्ती या और कोई बला ।

هُوَ ٥٠ وَإِنْ يَسْسُكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ٥١ وَهُوَ الْقَاهِرُ

नहीं और अगर तुझे भलाई पहुंचाए⁴² तो वोह सब कुछ कर सकता है⁴³ और वोही ग़ालिब है

فَوْقَ عِبَادِهِ ٥٢ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ ٥٣ قُلْ أَمْيُّ شَيْءٍ أَكْبَرُ شَهَادَةً ٥٤

अपने बन्दों पर और वोही है हिक्मत वाला ख़बरदार तुम फ़रमाओ सब से बड़ी गवाही किस की⁴⁴

قُلْ اللَّهُ شَهِيدٌ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ٥٥ وَأُوحِيَ إِلَيَّ هَذَا الْقُرْآنُ

तुम फ़रमाओ कि **अल्लाह** गवाह है मुझ में और तुम में⁴⁵ और मेरी तरफ़ इस कुरआन की वह्य हुई है

لَأُنذِرَكُمْ بِهِ وَمَنْ بَدَعَ ٥٦ أَيْبُكُمْ لَتَشْهَدُونَ أَنَّ مَعَ اللَّهِ إِلَهَةً

कि मैं इस से तुम्हें डराऊं⁴⁶ और जिन जिन को पहुंचे⁴⁷ तो क्या तुम⁴⁸ येह गवाही देते हो कि **अल्लाह** के साथ

أُخْرَى ٥٧ قُلْ لَا أَشْهَدُ ج ٥٨ قُلْ إِنَّمَا هُوَ إِلَهُ وَاحِدٌ وَإِنِّي بَرِيءٌ مِّمَّا

और खुदा हैं तुम फ़रमाओ⁴⁹ कि मैं येह गवाही नहीं देता⁵⁰ तुम फ़रमाओ कि वोह तो एक ही मा'बूद है⁵¹ और मैं बेज़ार हूँ उन से जिन को

تَشْرِكُونَ ٥٩ الَّذِينَ اتَّيْنَهُمُ الْكِتَابَ يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ

तुम शरीक ठहराते हो⁵² जिन को हम ने किताब दी⁵³ इस नबी को पहचानते हैं⁵⁴ जैसा अपने

42 : मिस्ल सिह्दत व दौलत वगैरा के । 43 : कादिरे मुत्लक है हर शौ पर जाती कुदरत रखता है, कोई उस की मशिय्यत के खिलाफ़ कुछ नहीं कर सकता तो कोई उस के सिवा मुस्तहिक्के इबादत कैसे हो सकता है । येह रदे शिर्क की दिल में असर करने वाली दलील है । 44 शाने नुजूल : अहले मक्का रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ से कहने लगे कि ऐ मुहम्मद ! (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ) हमें कोई ऐसा दिखाइये जो आप की रिसालत की गवाही देता हो, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई । 45 : और इतनी बड़ी और काबिले क़बूल गवाही और किस की हो सकती है । 46 : या'नी **अल्लाह** तआला मेरी नुबुव्वत की शहादत देता है इस लिये कि उस ने मेरी तरफ़ इस कुरआन की वह्य फ़रमाई और येह ऐसा मो'जिज़ा है कि तुम बा वुजूद फ़सीह, बलीग, साहिबे ज़बान होने के इस के मुक़ाबले से आज़िज़ रहे तो इस किताब का मुज़्ज़ पर नाज़िल होना **अल्लाह** की तरफ़ से मेरे रसूल होने की शहादत है, जब येह कुरआन **अल्लाह** तआला की तरफ़ से यकीनी शहादत है और मेरी तरफ़ वह्य फ़रमाया गया ताकि मैं तुम्हें डराऊं कि तुम हुक्मे इलाही की मुख़ालफ़त न करो । 47 : या'नी मेरे बा'द क़ियामत तक आने वाले जिन्हें येह कुरआने पाक पहुंचे ख़्वाह वोह इन्सान हों या जिन् उन सब को मैं हुक्मे इलाही की मुख़ालफ़त से डराऊं । हदीस शरीफ़ में है कि जिस शख़्स को कुरआने पाक पहुंचा गोया कि उस ने नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ को देखा और आप का कलामे मुबारक सुना । हज़रते अनस बिन मालिक رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ने फ़रमाया कि जब येह आयत नाज़िल हुई तो रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने क़िस्रा और क़ैसर वगैरा सलातीन को दा'वते इस्लाम के मक्तूब भेजे । (مدارك وغارات) इस की तफ़्सीर में एक क़ौल येह भी है مَنْ بَلَغَ مِنْ में "मरफूज़ल महल है और मा'ना येह है कि इस कुरआन से मैं तुम को डराऊं और वोह डराए जिन्हें येह कुरआन पहुंचे । तिरमिज़ी की हदीस में है कि **अल्लाह** तरो ताज़ा करे उस को जिस ने हमारा कलाम सुना और जैसा सुना वैसा पहुंचाया, बहुत से पहुंचाए हुए सुनने वाले से ज़ियादा अहल होते हैं । और एक रिवायत में है सुनने वाले से ज़ियादा अफ़क़ह (ग़ौरो फ़िक़र करने वाले) होते हैं । इस से फ़ुक्हा की मन्ज़िलत मा'लूम होती है । 48 : ऐ मुशिरकीन ! 49 : ऐ हबीबे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ! 50 : जो गवाही तुम देते हो और **अल्लाह** के साथ दूसरे मा'बूद ठहराते हो । 51 : उस का कोई शरीक नहीं 52 मस्अला : इस आयत से साबित हुवा कि जो शख़्स इस्लाम लाए उस को चाहिये कि तौहीदो रिसालत की शहादत के साथ इस्लाम के हर मुख़ालिफ़ अक़ीदा व दीन से बेज़ारी का इज़हार करे । 53 : या'नी उलमाए यहूदो नसारा जिन्हों ने तौरैत व इन्जील पाई । 54 : आप के हुल्ये शरीफ़ और आप की ना'त व सिफ़त से जो उन किताबों में मज़कूर है ।

أَبْنَاءَهُمْ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ٢٠ وَمَنْ

बेटों को पहचानते हैं⁵⁵ जिन्होंने ने अपनी जान नुकसान में डाली वोह ईमान नहीं लाते और उस से

أَظْلَمُ مِمَّنْ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ ٥ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ

बढ़ कर ज़ालिम कौन जो **अल्लाह** पर झूठ बांधे⁵⁶ या उस की आयतें झुटलाए बेशक ज़ालिम फ़लाह

الظَّالِمُونَ ٢١ وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَبِعًا ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا آيِنَ

न पाएंगे और जिस दिन हम सब को उठाएंगे फिर मुश्रिकों से फ़रमाएंगे कहां हैं

شُرَكَاءُكُمْ الَّذِينَ كُنْتُمْ تَزْعُمُونَ ٢٢ ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فِتْنَتُهُمْ إِلَّا أَنْ

तुम्हारे वोह शरीक जिन का तुम दा'वा करते थे फिर उन की कुछ बनावट न रही⁵⁷ मगर येह कि

قَالُوا وَاللَّهِ رَبَّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِينَ ٢٣ أَنْظُرْ كَيْفَ كَذَبُوا عَلَيَّ أَنفُسِهِمْ

बोले हमें अपने रब **अल्लाह** की क़सम कि हम मुश्रिक न थे देखो कैसा झूठ बांधा खुद अपने ऊपर⁵⁸

وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ٢٤ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَسْتَمِعُ إِلَيْكَ ج

और गुम गई उन से जो बातें बनाते थे और उन में कोई वोह है जो तुम्हारी तरफ़ कान लगाता है⁵⁹

وَجَعَلْنَا عَلَى قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا ٥ وَإِنْ

और हम ने उन के दिलों पर ग़िलाफ़ कर दिये हैं कि उसे न समझें और उन के कानों में टेंट (ठोंसी हुई रूई) और अगर

يَرَوْا كَلِمًا آيَةً لَا يُؤْمِنُوا بِهَا حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوكَ يُجَادِلُونَكَ يَقُولُ

सारी निशानियां देखें तो उन पर ईमान न लाएंगे यहां तक कि जब तुम्हारे हुज़ूर तुम से झगड़ते हाज़िर हों तो

الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ٢٥ وَهُمْ يَنْهَوْنَ

काफ़िर कहें येह तो नहीं मगर अगलों की दास्ताने⁶⁰ और वोह उस से रोकते⁶¹

55 : या'नी बिगैर किसी शको शुबा के। 56 : उस का शरीक ठहराए या जो बात उस की शान के लाइक़ न हो उस की तरफ़ निस्वत करे।

57 : या'नी कुछ मा'ज़िरत न मिली। 58 : कि उग्र भर के शिक़ ही से मुकर गए। 59 : अबू सुफ़यान, वलीद व नज़र और अबू जहल वग़ैरा

(عَلَيْهِ السَّلَام) की तिलावते कुरआने पाक सुनने लगे तो नज़र से उस के साथियों ने कहा कि मुहम्मद (عَلَيْهِ السَّلَام) क्या कहते हैं? कहने लगा मैं नहीं जानता ज़बान को हरकत देते हैं और पहलों के किससे कहते हैं जैसे मैं तुम्हें सुनाया करता हूँ। अबू सुफ़यान

ने कहा कि इन की बातें मुझे हक़ मा'लूम होती हैं। अबू जहल ने कहा कि इस का इक्कार करने से मर जाना बेहतर है। इस पर येह आयते करीमा

नाज़िल हुई। 60 : इस से उन का मतलब कलामे पाक के वहुये इलाही होने का इन्कार करना है। 61 : या'नी मुश्रिकीन लोगों को कुरआन

शरीफ़ से या रसूले करीम (عَلَيْهِ السَّلَام) से और आप पर ईमान लाने और आप का इत्तिबाअ करने से रोकते हैं। शाने नुज़ूल : येह आयत

कुपफ़ारे मक्का के हक़ में नाज़िल हुई जो लोगों को सय्यिदे आलम (عَلَيْهِ السَّلَام) से और आप पर ईमान लाने और आप की मजलिस

में हाज़िर होने और कुरआने करीम सुनने से रोकते थे और खुद भी दूर रहते थे कि कहीं कलामे मुबारक उन के दिल में असर न कर जाए।

عَنْهُ وَيَتَوَنَّنَ عَنْهُ ۗ وَإِنْ يُهْلِكُونَ إِلَّا أَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٦﴾

और उस से दूर भागते हैं और हलाक नहीं करते मगर अपनी जानें⁶² और उन्हें शुकुर नहीं

وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ وَقَفُوا عَلَى النَّارِ فَقَالُوا أَلَيْتَنَا رُدُّوْنَا لَنَكْتَبَ بِآيَاتِ

और कभी तुम देखो जब वोह आग पर खड़े किये जाएंगे तो कहेंगे काश किसी तरह हम वापस भेजे जाएं⁶³ और अपने रब की आयतें

رَبِّنَا وَنَكُونُ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢٧﴾ بَلْ بَدَأَهُم مَّا كَانُوا يُخْفُونَ

न झूटलाएं और मुसल्मान हो जाएं बल्कि उन पर खुल गया जो पहले

مِنْ قَبْلُ ۗ وَلَوْ رُدُّوْنَا لَعَادُوا لِآيَاتِنَا عَنْهُمْ وَكَذِبُونَ ﴿٢٨﴾

छुपाते थे⁶⁴ और अगर वापस भेजे जाएं तो फिर वोही करें जिस से मन्अ किये गए थे और बेशक वोह जरूर झूटे हैं

وَقَالُوا إِن هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا وَمَا نَحْنُ بِبَعُوثِينَ ﴿٢٩﴾ وَلَوْ

और बोले⁶⁵ वोह तो येही हमारी दुन्या की जिन्दगी है और हमें उठना नहीं⁶⁶ और कभी

تَرَىٰ إِذْ وَقَفُوا عَلَىٰ رَبِّهِمْ ۖ قَالَ أَلَيْسَ هَذَا بِالْحَقِّ ۗ قَالُوا بَلَىٰ وَ

तुम देखो जब अपने रब के हुजूर खड़े किये जाएंगे फरमाएगा क्या येह हक नहीं है⁶⁷ कहेंगे क्यूं नहीं हमें

رَبِّنَا ۗ قَالَ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿٣٠﴾ قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ

अपने रब की कसम फरमाएगा तो अब अजाब चखो बदला अपने कुफ्र का बेशक हार में रहे वोह जिन्हों ने अपने

كذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ ۗ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَتْهُمْ السَّاعَةُ بَغْتَةً قَالُوا يَحْسِرْتُنَا

रब से मिलने का इन्कार किया यहां तक कि जब उन पर कियामत अचानक आ गई बोले हाए अफसोस

عَلَىٰ مَا فَرَّطْنَا فِيهَا وَهُمْ يَحْسِرُونَ ۗ أُوذِيَ الرَّهْمُ عَلَىٰ ظُهُورِهِمْ ۗ إِلَّا

हमारा इस पर कि इस के मानने में तक्सीर की और वोह अपने⁶⁸ बोझ अपनी पीठ पर लादे हुए हैं अरे कितना

हजरते इब्ने अब्बास رضى الله عنهما ने फरमाया कि येह आयत हुजूर के चचा अबू तालिब के हक में नाजिल हुई जो मुशिरकीन को तो हुजूर की ईजा रसानी से रोकते थे और खुद ईमान लाने से बचते थे । 62 : या'नी इस का जरूर खुद उन्हीं को पहुंचता है । 63 : दुन्या में 64 : जैसा कि ऊपर इसी रुकूअ में मज़कूर हो चुका कि मुशिरकीन से जब फरमाया जाएगा कि तुम्हारे शरीक कहां हैं तो वोह अपने कुफ्र को छुपा जाएंगे और **alwala** की कसम खा कर कहेंगे कि हम मुशिरक न थे । इस आयत में बताया गया कि फिर जब उन्हें जाहिर हो जाएगा जो वोह छुपाते थे या'नी उन का कुफ्र इस तरह जाहिर होगा कि उन के आ'जा व जवारेह उन के कुफ्रों शिक की गवाहियां देंगे तब वोह दुन्या में वापस जाने की तमन्ना करेंगे । 65 : या'नी कुफ्र जो बअूस व आखिरत के मुन्किर हैं और इस का वाक़िआ येह था कि जब नबिये करीम **صلى الله عليه وسلم** ने कुफ्र को कियामत के अहवाल और आखिरत की जिन्दगानी, ईमानदारों और फरमां बरदारों के सवाब, काफ़िरों और ना फरमानों पर अजाब का जिक्र फरमाया तो काफ़िर कहने लगे कि जिन्दगी तो बस दुन्या ही की है । 66 : या'नी मरने के बा'द । 67 : क्या तुम मरने के बा'द जिन्दा नहीं किये गए ? 68 : गुनाहों के ।

سَاءَ مَا يَزُرُونَ ﴿٣١﴾ وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا لَعِبٌ وَلَهْوٌ ۗ وَلَلدَّارُ

बुरा बोझ उठाए हैं⁶⁹ और दुनिया की जिन्दगी नहीं मगर खेलकूद⁷⁰ और बेशक

الْآخِرَةُ خَيْرٌ لِّ الَّذِينَ يَتَّقُونَ ۗ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٣٢﴾ قَدْ نَعْلَمُ إِنَّهُ

पिछला घर भला उन के लिये जो डरते हैं⁷¹ तो क्या तुम्हें समझ नहीं हमें मा'लूम है कि

لَيَحْزُنَكَ الَّذِي يَقُولُونَ فَإِنَّهُمْ لَا يُكَذِّبُونَكَ وَلَكِنَّ الظَّالِمِينَ

तुम्हें रन्ज देती है वोह बात जो येह कह रहे हैं⁷² तो वोह तुम्हें नहीं झुटलाते⁷³ बल्कि ज़ालिम

بِآيَاتِ اللَّهِ يَجْحَدُونَ ﴿٣٣﴾ وَلَقَدْ كَذَّبْتَ رَسُولٌ مِّن قَبْلِكَ فَصَبِرُوا

अल्लाह की आयतों से इन्कार करते हैं⁷⁴ और तुम से पहले रसूल झुटलाए गए तो उन्होंने ने सब्र किया

عَلَىٰ مَا كَذَّبُوا وَأُودُوا حَتَّىٰ أَنتَهُمْ نَصْرًا ۗ وَلَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَاتِ

उस झुटलाने और ईजाएं पाने पर यहां तक कि उन्हें हमारी मदद आई⁷⁵ और अल्लाह की बातें बदलने वाला

اللَّهِ ۗ وَلَقَدْ جَاءَكَ مِنْ نَّبَايِ الْمُرْسَلِينَ ﴿٣٤﴾ وَإِنْ كَانَ كَبُرَ

कोई नहीं⁷⁶ और तुम्हारे पास रसूलों की खबरें आ ही चुकी हैं⁷⁷ और अगर उन का मुंह

عَلَيْكَ إِعْرَاضُهُمْ فَإِنْ اسْتَطَعْتَ أَنْ تَبْتَغِيَ نَفَقًا فِي الْأَرْضِ أَوْ

फेरना तुम पर शाक़ गुज़रा है⁷⁸ तो अगर तुम से हो सके तो ज़मीन में कोई सुरंग तलाश कर लो या

69 : हदीस शरीफ में है कि काफ़िर जब अपनी क़ब्र से निकलेगा तो उस के सामने निहायत कबीह भयानक और बहुत बदबूदार सूत आएगी वोह काफ़िर से कहेगी तू मुझे पहचानता है ? काफ़िर कहेगा कि नहीं, तो वोह काफ़िर से कहेगी : मैं तेरा ख़बीस अमल हूँ दुनिया में तू मुझ पर सुवार रहा था आज मैं तुझे पर सुवार होउंगा और तुझे तमाम ख़ल्क में रुस्वा करूंगा फिर वोह उस पर सुवार हो जाता है । 70 : जिसे बका नहीं जल्द गुज़र जाती है और नेकियां और ताअतें अगर्चे मोमिनीन से दुनिया ही में वाक़ेअ हों लेकिन वोह उमूरे आखिरत में से हैं । 71 : इस से साबित हुवा कि आ'माले मुत्तकीन के सिवा दुनिया में जो कुछ है सब लहवो लअब है । 72 शाने नुज़ूल : अख़स बिन शरीक और अबू जहल की बाहम मुलाकात हुई तो अख़स ने अबू जहल से कहा : ऐ अबुल हक़म ! (कुपफ़ार अबू जहल को अबुल हक़म कहते थे) येह तन्हाई की जगह है और यहां कोई ऐसा नहीं जो मेरी तेरी बात पर मुत्तलअ हो सके अब तू मुझे ठीक ठीक बता कि मुहम्मद (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ) सच्चे हैं या नहीं । अबू जहल ने कहा कि अल्लाह की क़सम ! मुहम्मद (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ) बेशक सच्चे हैं, कभी कोई झूटा हर्फ़ उन की ज़बान पर न आया मगर बात येह है कि येह कुसय की औलाद हैं और लिवा, सिकायत, हिजाबत, नदवा वगैरा तो सारे ए'जाज़ इन्हें हासिल ही हैं नुबुव्वत भी इन्हीं में हो जाए तो बाकी क़रशियों के लिये ए'जाज़ क्या रह गया । तिरमिज़ी ने हज़रत अलिय्ये मुर्तज़ा से रिवायत की, कि अबू जहल ने हज़रत नबिय्ये करीम (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ) से कहा हम आप की तक्ज़ीब नहीं करते हम तो उस किताब की तक्ज़ीब करते हैं जो आप लाए, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई । 73 : इस में सय्यिदे आलम (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ) की तस्कीने ख़ातिर है कि कौम हुज़ूर के सिद्क का ए'तिक़ाद रखती है लेकिन उन की ज़ाहिरी तक्ज़ीब का बाइस उन का हसद व इनाद है । 74 : आयत के येह मा'ना भी होते हैं कि ऐ हबीबे अकरम आप की तक्ज़ीब आयाते इलाहिहियह की तक्ज़ीब है और तक्ज़ीब करने वाले ज़ालिम । 75 : और तक्ज़ीब करने वाले हलाक किये गए । 76 : उस के हुक्म को कोई पलट नहीं सकता रसूलों की नुसरत और उन की तक्ज़ीब करने वालों का हलाक उस ने जिस वक़्त मुक़द्दर फ़रमाया है जरूर होगा । 77 : और आप जानते हैं कि उन्हें कुपफ़ार से कैसी ईजाएं पहुंचीं येह पेशे नज़र रख कर आप दिल मुत्मइन रखें । 78 : सय्यिदे आलम (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ) को बहुत ख़वाहिश थी कि सब लोग इस्लाम ले आएँ, जो इस्लाम से महरूम रहते उन की महरूमी आप पर बहुत शाक़ रहती ।

سُلْبًا فِي السَّبَاءِ فَتَأْتِيهِمْ بَايَةٌ ۖ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلْنَاهُمْ عَلَى الْهُدَىٰ

आस्मान में जीना फिर उन के लिये निशानी ले आओ⁷⁹ और **اللَّهُ** चाहता तो उन्हें हिदायत पर इकठ्ठा कर देता

فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْجَاهِلِينَ ۝۳۵ إِنَّمَا يَسْتَجِيبُ الَّذِينَ يَسْمَعُونَ ۖ وَ

तो ऐ सुनने वाले तू हरगिज़ नादान न बन मानते तो वोही हैं जो सुनते हैं⁸⁰ और

الْمَوْتَىٰ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ ثُمَّ إِلَيْهِ يُرْجَعُونَ ۝۳۶ وَقَالُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ آيَةٌ

उन मुर्दा दिलों⁸¹ को **اللَّهُ** उठाएगा⁸² फिर उस की तरफ़ हाँके जाएंगे⁸³ और बोले⁸⁴ उन पर कोई निशानी क्यों न उतरी

مِّن رَّبِّهِ ۖ قُلْ إِنَّ اللَّهَ قَادِرٌ عَلَىٰ أَنْ يُنَزِّلَ آيَةً وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا

उन के रब की तरफ़ से⁸⁵ तुम फ़रमाओ कि **اللَّهُ** क़ादिर है कि कोई निशानी उतारे लेकिन उन में बहुत निरे

يَعْلَمُونَ ۝۳۷ وَمَا مِنْ دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا طَيْرٍ يَطِيرُ بِجَنَاحَيْهِ إِلَّا أَوَّلًا

जाहिल है⁸⁶ और नहीं कोई ज़मीन में चलने वाला और न कोई परिन्द कि अपने पंरों उड़ता है मगर

أُمَّةً مِّثْلِكُمْ مَا فَرَّطْنَا فِي الْكِتَابِ مِنْ شَيْءٍ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّهِمْ

तुम जैसी उम्मतें⁸⁷ हम ने इस किताब में कुछ उठा न रखा⁸⁸ फिर अपने रब की तरफ़

يُحْشَرُونَ ۝۳۸ وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا صُمٌّ وَبُكْمٌ فِي الظُّلُمَاتِ ۖ مَن

उठाए जाएंगे⁸⁹ और जिन्हों ने हमारी आयतें झुटलाई बहरे और गूगे हैं⁹⁰ अंधेरों में⁹¹ **اللَّهُ**

79 : मक्सूद उन के ईमान की तरफ़ से सथियदे आलम **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की उम्मीद मुन्क़तअ करना है ताकि आप को उन के ए'राज़ करने और ईमान न लाने से रन्जो तकलीफ़ न हो । 80 : दिल लगा कर समझने के लिये वोही पन्द पज़ीर होते (नसीहत क़बूल करते) हैं और दिने हक़ की दा'वत क़बूल करते हैं । 81 : या'नी कुफ़फ़ार 82 : रोज़े क़ियामत 83 : और अपने आ'माल की जज़ा पाएंगे । 84 : कुफ़फ़ारे मक्का 85 : कुफ़फ़ार की गुमराही और उन की सरकशी इस हद तक पहुंच गई कि वोह कसीर आयत व मो'जिज़ात जो उन्हों ने सथियदे आलम **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** से मुशाहदा किये थे उन पर क़नाअत न की और सब से मुकर गए और ऐसी आयत त़लब करने लगे जिस के साथ अज़ाबे इलाही हो, जैसा कि उन्हों ने कहा था "اللَّهُمَّ إِن كَانَ هَذَا هُوَ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِكَ فَأَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِنَ السَّمَاءِ" या रब ! अगर येह हक़ है तेरे पास से तो हम पर आस्मान से पथ़र बरसा । (त़्फ़ीर राबुसुद) 86 : नहीं जानते कि उस का नुज़ूल उन के लिये बला है कि इन्कार करते ही हलाक कर दिये जाएंगे । 87 : या'नी तमाम जानदार ख़्वाह वोह बहाइम हों या दरिन्दे या परिन्द तुम्हारी मिस्ल उम्मतें हैं । येह मुमासलत (मिस्ल होना) जमीअ वुजूह से तो है नहीं बा'ज से है, उन वुजूह के बयान में बा'ज मुफ़स्सरीन ने फ़रमाया कि येह हैवानात तुम्हारी तरह **اللَّهُ** को पहचानते, वाहिद जानते, उस की तस्बीह पढ़ते, इबादत करते हैं । बा'ज का कौल है कि वोह मख़्तूक होने में तुम्हारी मिस्ल हैं । बा'ज ने कहा कि वोह इन्सान की तरह बाहमी उल्फ़त रखते और एक दूसरे से तफ़हीमो तफ़हहम (बात समझते और समझाया) करते हैं । बा'ज का कौल है कि रोज़ी त़लब करने, हलाकत से बचने, नर मादा का इम्तियाज़ रखने में तुम्हारी मिस्ल हैं । बा'ज ने कहा पैदा होने, मरने, मरने के बा'द हि़साब के लिये उठने में तुम्हारी मिस्ल हैं । 88 : या'नी जुम्ला इलूम और तमाम "مَا كَانَ وَمَا يَكُونُ" का इस में बयान है और जमीअ अशया का इल्म इस में है, इस किताब से येह कुरआने करीम मुराद है या लौहे महफूज़ । (मजल रफ़ी) 89 : और तमाम दवाब व तुयूर का हि़साब होगा, इस के बा'द वोह ख़ाक कर दिये जाएंगे । 90 : कि हक़ मानना और हक़ बोलना उन्हें मुयस्सर नहीं । 91 : जहल और हैरत और कुफ़्र के ।

يَسْأَلُ اللَّهُ يُضِلُّهُ ٥ وَمَنْ يَشَأْ يُجْعَلْهُ عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ٣٩ قُلْ

जिसे चाहे गुमराह करे और जिसे चाहे सीधे रस्ते डाल दे⁹² तुम फरमाओ

أَرَءَيْتُمْ إِنْ أَنْتُمْ عَذَابُ اللَّهِ أَوْ أَنْتُمْ السَّاعَةُ أَغَيَّرَ اللَّهُ تَدْعُونَ ٦

भला बताओ तो अगर तुम पर **अल्लाह** का अज़ाब आए या क्रियामत काइम हो क्या **अल्लाह** के सिवा किसी और को पुकारोगे⁹³

إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ٤٠ بَلْ إِيَّاهُ تَدْعُونَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُونَ إِلَيْهِ

अगर सच्चे हो⁹⁴ बल्कि उसी को पुकारोगे तो वोह अगर चाहे⁹⁵ जिस पर उसे पुकारते हो

إِنْ شَاءَ وَتَنْسَوْنَ مَا تَشْرِكُونَ ٤١ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ أُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ

उसे उठा ले और शरीकों को भूल जाओगे⁹⁶ और बेशक हम ने तुम से पहली उम्मतों की तरफ़ रसूल भेजे

فَأَخَذْنَاهُمْ بِالْبَأْسَاءِ وَالضَّرَّاءِ لَعَلَّهُمْ يَتَضَرَّعُونَ ٤٢ فَلَوْلَا إِذْ

तो उन्हें सख्ती और तकलीफ़ से पकड़ा⁹⁷ कि वोह किसी तरह गिड़गिड़ाए⁹⁸ तो क्यूं न हुवा कि जब

جَاءَهُمْ بِأَسْنَاءٍ تَضَرَّعُوا وَلَكِنْ قَسَتْ قُلُوبُهُمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ

उन पर हमारा अज़ाब आया तो गिड़गिड़ाए होते लेकिन उन के दिल सख्त हो गए⁹⁹ और शैतान ने उन के काम

مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ٤٣ فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِّرُوا بِهِ فَتَحْنَا عَلَيْهِمُ أَبْوَابَ

उन की निगाह में भले कर दिखाए फिर जब उन्होंने ने भुला दिया जो नसीहतें उन को की गई थीं¹⁰⁰ हम ने उन पर हर चीज़

كُلِّ شَيْءٍ ٥ حَتَّىٰ إِذَا فَرِحُوا بِآؤْتُوًّا أَخَذْنَاهُمْ بِغَتَّةٍ فَإِذَا هُمْ

के दरवाजे खोल दिये¹⁰¹ यहां तक कि जब खुश हुए उस पर जो उन्हें मिला¹⁰² तो हम ने अचानक उन्हें पकड़ लिया¹⁰³ अब वोह

مُبْلِسُونَ ٤٤ فَقَطَّعَ دَائِرَ الْقَوْمِ الَّذِينَ ظَلَمُوا ٥ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ

आस टूटे रह गए तो जड़ काट दी गई ज़ालिमों की¹⁰⁴ और सब खूबियों सराहा **अल्लाह** रब

92 : इस्लाम की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए । 93 : और जिन को दुनिया में मा'बूद मानते थे उन से हाज़त रवाई चाहोगे । 94 : अपने इस दा'वे में कि **مَعَادُ اللَّهِ** बुत मा'बूद हैं तो इस वक़्त पुकारो मगर ऐसा न करोगे । 95 : तो उस मुसीबत को 96 : जिन्हें अपने ए'तिकादे बातिल में मा'बूद जानते थे और उन की तरफ़ इल्तिफ़ात भी न करोगे क्यूं कि तुम्हें मा'लूम है कि वोह तुम्हारे काम नहीं आ सकते । 97 : फ़क़्रो इफ़लास और बीमारी वगैरा में मुब्तला किया । 98 : **अल्लाह** की तरफ़ रुजूअ करें, अपने गुनाहों से बाज़ आए । 99 : वोह बारगाहे इलाही में आजिज़ी करने के बजाए कुफ़्रो तकज़ीब पर मुसिर रहे । 100 : और वोह किसी तरह पन्द पज़ीर न हुए न पेश आई हुई मुसीबतों से न अम्बिया की नसीहतों से । 101 : सिद्दहतो सलामत और वुस्अते रिज़क़ व ऐश वगैरा के । 102 : और अपने आप को उस का मुस्तहिक़ समझे और क़ारून की तरह तकबुर करने लगे 103 : और मुब्तलाए अज़ाब किया । 104 : और सब के सब हलाक कर दिये गए कोई बाक़ी न छोड़ा गया ।

الْعَلِيِّنَ ٢٥ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَخَذَ اللَّهُ سَمْعَكُمْ وَأَبْصَارَكُمْ وَخَتَمَ

सारे जहां का¹⁰⁵ तुम फ़रमाओ भला बताओ तो अगर **अल्लाह** तुम्हारे कान आंख ले ले और तुम्हारे

عَلَى قُلُوبِكُمْ مَنْ إِلَهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُمْ بِهِ ١ أَنْظِرْ كَيْفَ نَصْرَفُ الْآيَاتِ

दिलों पर मोहर कर दे¹⁰⁶ तो **अल्लाह** के सिवा कौन खुदा है कि तुम्हें ये चीजें ला दे¹⁰⁷ देखो हम किस किस रंग से आयतें बयान करते हैं

ثُمَّ هُمْ يَصْدِفُونَ ٢٦ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُ اللَّهِ بَغْتَةً أَوْ

फिर वोह मुंह फेर लेते हैं तुम फ़रमाओ भला बताओ तो अगर तुम पर **अल्लाह** का अज़ाब आए अचानक¹⁰⁸ या

جَهْرَةً هَلْ يُهْلِكُ إِلَّا الْقَوْمَ الظَّالِمُونَ ٢٧ وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ

खुल्लम खुल्ला¹⁰⁹ तो कौन तबाह होगा सिवा ज़ालिमों के¹¹⁰ और हम नहीं भेजते रसूलों को

إِلَّا مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ ٢٨ فَمَنْ آمَنَ وَأَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَ

मगर खुशी और डर सुनाते¹¹¹ तो जो ईमान लाए और संवरे¹¹² उन को न कुछ अन्देशा

لَهُمْ يَحْزَنُونَ ٢٩ وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا يُسْأَلُهُمُ الْعَذَابُ بِمَا

न कुछ ग़म और जिन्होंने हमारी आयतें झुटलाई उन्हें अज़ाब पहुंचेगा

كَانُوا يَفْسُقُونَ ٣٠ قُلْ لَا أَقُولُ لَكُمْ عِنْدِي خَزَائِنُ اللَّهِ وَلَا أَعْلَمُ

बदला उन की बे हुकमी का तुम फ़रमा दो मैं तुम से नहीं कहता मेरे पास **अल्लाह** के खज़ाने हैं और न ये कहूं कि मैं आप

الْغَيْبِ وَلَا أَقُولُ لَكُمْ إِنِّي مَلَكٌ ٣١ إِنْ أَتَيْتُمْ إِلَّا مَا يُوحَىٰ إِلَىٰ قُلُوبِ هَلْ

ग़ैब जान लेता हूं और न तुम से ये कहूं कि मैं फ़रिश्ता हूं¹¹³ मैं तो उसी का ताबेअ हूं जो मुझे वह्य आती है¹¹⁴ तुम फ़रमाओ क्या

105 : इस से मा'लूम हुवा कि गुमराहों, बे दीनों, ज़ालिमों की हलाकत **अल्लाह** तआला की ने'मत है इस पर शुक्र करना चाहिये। **106** : और इल्मो मा'रिफ़त का तमाम निज़ाम दरहम बरहम हो जाए **107** : इस का जवाब येही है कि कोई नहीं, तो अब तौहीद पर दलील काइम हो गई कि जब **अल्लाह** के सिवा कोई इतनी कुदरत व इख़्तियार वाला नहीं तो इबादत का मुस्तहिक सिर्फ वोही है और शिक'बद तरीन जुल्म व जुर्म है। **108** : जिस के आसार व अ़लामात पहले से मा'लूम न हों **109** : आंखों देखते **110** : या'नी काफ़िरों के, कि उन्होंने ने अपनी जानों पर जुल्म किया और येह हलाकत उन के हक़ में अज़ाब है। **111** : ईमानदारों को जन्त व सवाब की बिशारतें देते और काफ़िरों को जहन्नम व अज़ाब से डराते। **112** : नेक अमल करे। **113** : कुफ़र का तरीका था कि वोह सय्यिदे अ़लाम **عَلَى اللَّهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** से तरह तरह के सुवाल किया करते थे, कभी कहते कि आप रसूल हैं तो हमें बहुत सी दौलत और माल दीजिये कि हम कभी मोहताज न हों, हमारे लिये पहाड़ों को सोना कर दीजिये, कभी कहते कि गुज़्रता और आयिन्दा की ख़बरें सुनाइये और हमें हमारे मुस्तक़िबल की ख़बर दीजिये क्या क्या पेश आएगा ? ताकि हम मनाफ़ेअ हासिल कर लें और नुक़सानों से बचने के पहले से इन्तिज़ाम कर लें, कभी कहते हमें क़ियामत का वक़्त बताइये कब आएगी ? कभी कहते कि आप कैसे रसूल हैं जो खाते पीते भी हैं, निकाह भी करते हैं। उन को इन तमाम बातों का इस आयत में जवाब दिया गया कि येह कलाम निहायत बे महल और जाहिलाना है, क्यूं कि जो शख्स किसी अम्र का मुद्ई हो उस से वोही बातें दरयाफ़्त की जा सकती हैं जो उस के दा'वे से तअल्लुक रखती हों ग़ैर मुतअल्लिक़ बातों का दरयाफ़्त करना और उन को उस दा'वे के ख़िलाफ़ हुज्जत बनाना इन्तिहा दरजे का जहल है। इस लिये इशाद हुवा कि आप फ़रमा दीजिये कि मेरा दा'वा येह तो नहीं कि मेरे पास **अल्लाह** के ख़ज़ाने हैं जो तुम मुझ से

يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ ۗ أَفَلَا تَتَفَكَّرُونَ ۝٥٠ وَأَنْذِرْ بِهِ الَّذِينَ

बराबर हो जाएंगे अन्धे और अंधारे¹¹⁵ तो क्या तुम गौर नहीं करते और इस कुरआन से उन्हें डराओ जिन्हें

يَخَافُونَ أَنْ يُحْشَرُوا ۗ إِلَىٰ رَبِّهِمْ لَيْسَ لَهُمْ مِنْ دُونِهِ وَلِيٌّ وَلَا شَفِيعٌ

खौफ हो कि अपने रब की तरफ यूँ उठाए जाएं कि **अल्लाह** के सिवा न उन का कोई हिमायती हो न कोई सिफारिश

لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ۝٥١ وَلَا تَطْرُدِ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ بِالْعُدْوَةِ وَ

इस उम्मीद पर कि वोह परहेज गार हो जाएं और दूर न करो उन्हें जो अपने रब को पुकारते हैं सुब्ह और

الْعَشِيِّ يُرِيدُونَ وَجْهَهُ ۗ مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِنْ شَيْءٍ وَمَا مِنْ

शाम उस की रिज़ा चाहते¹¹⁶ तुम पर उन के हिसाब से कुछ नहीं और उन पर

حِسَابِكَ عَلَيْهِمْ مِنْ شَيْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُونَ مِنَ الظَّالِمِينَ ۝٥٢ وَ

तुम्हारे हिसाब से कुछ नहीं¹¹⁷ फिर उन्हें तुम दूर करो तो यह काम इन्साफ़ से बर्द है और

كَذَلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُم بِبَعْضٍ لِيَقُولُوا أَهَؤُلَاءِ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِنْ

यूँही हम ने उन में एक को दूसरे के लिये फ़ितना बनाया कि मालदार काफ़िर मोहताज मुसलमानों को देख कर¹¹⁸ कहें क्या यह हैं जिन पर **अल्लाह** ने एहसान किया

بَيْنَنَا ۗ أَلَيْسَ اللَّهُ بِأَعْلَمَ بِالشَّاكِرِينَ ۝٥٣ وَإِذَا جَاءَكَ الَّذِينَ

हम में से¹¹⁹ क्या **अल्लाह** खूब नहीं जानता हक़ मानने वालों को और जब तुम्हारे हुज़ूर वोह हाज़िर हों जो

मालो दौलत का सुवाल करो और मैं उस की तरफ़ इल्तिफ़ात न करूँ तो रिसालत से मुन्कर हो जाओ, न मेरा दा'वा ज़ाती ग़ैबदानी का है कि अगर मैं तुम्हें गुजश्ता या आयिन्दा की ख़बरें न बताऊँ तो मेरी नुबुव्वत मानने में उज़्र कर सको, न मैं ने फ़िरिश्ता होने का दा'वा किया है कि खाना पीना निकाह करना काबिले ए'तिराज़ हो, तो जिन चीज़ों का दा'वा ही नहीं किया उन का सुवाल बे महल है और उस की इजाबत (जवाब देही) मुझ पर लाजिम नहीं, मेरा दा'वा नुबुव्वत व रिसालत का है और जब इस पर ज़बर दस्त दलीलें और कवी बुरहानें काइम हो चुकीं तो ग़ैर मुतअल्लिक बातें पेश करना क्या मा'नी रखता है। **फ़ाएदा** : इस से साफ़ वाजेह हो गया कि इस आयत करीमा को सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** के ग़ैब पर मुत्तलअ किये जाने की नफ़ी के लिये सनद बनाना ऐसा ही बे महल है जैसा कुपफ़ार का इन सुवालात को इन्कारे नुबुव्वत की दस्तावेज़ बनाना बे महल था। इलावा बरीं इस आयत से हुज़ूर सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** के इल्मे अताई की नफ़ी किसी तरह मुराद ही नहीं हो सकती क्यूँ कि इस सूरत में तआरुज़ बैनल आयात का काइल होना पड़ेगा **وَهُوَ سَاطِلٌ** (और यह बातिल है)। मुफ़स्सरीन का यह भी कौल है कि हुज़ूर का **لَا أَقُولُ لَكُمْ** "अल्ले" फ़रमाना ब तरीके तवाजोअ है। **114** (मारक وغازن واصل وغيره) और येही नबी का काम है तो मैं तुम्हें वोही दूंगा जिस का मुझे इज़्ज होगा, वोही बताऊंगा जिस की इजाज़त होगी, वोही करूंगा जिस का मुझे हुक्म मिला हो। **115** : मोमिन व काफ़िर, आलिम व जाहिल। **116** शाने नुज़ूल : कुपफ़ार की एक जमाअत सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की ख़िदमत में आई तो उन्होंने ने देखा कि हुज़ूर के गिर्द ग़रीब सहाबा की एक जमाअत हाज़िर है जो अदना दरजे के लिबास पहने हुए हैं, यह देख कर वोह कहने लगे कि हमें इन लोगों के पास बैठते शर्म आती है अगर आप इन्हें अपनी मजलिस से निकाल दें तो हम आप पर इमान ले आएँ और आप की ख़िदमत में हाज़िर रहें। हुज़ूर ने इस को मन्ज़ूर न फ़रमाया, इस पर यह आयत नाज़िल हुई। **117** : सब का हिसाब **अल्लाह** पर है वोही तमाम ख़ल्क को रोजी देने वाला है उस के सिवा किसी के ज़िम्मे किसी का हिसाब नहीं, हासिले मा'ना यह कि वोह ज़ईफ़ फुकरा जिन का ऊपर ज़िक्र हुवा आप के दरबार में कुर्ब पाने के मुस्तहिक़ हैं उन्हें दूर न करना ही बजा है। **118** : ब तरीके हसद **119** : कि उन्हें इमान व हिदायत नसीब की बा वुजूदे कि वोह लोग फ़कीर ग़रीब हैं और हम रईस सरदार हैं। इस से उन का मतलब **अल्लाह** तआला पर ए'तिराज़ करना है कि गुरबा

يَوْمُونَ بِأَيْتِنَا فَقُلْ سَلَمٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلَى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ لَا

हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं तो उन से फ़रमाओ तुम पर सलाम तुम्हारे रब ने अपने जिम्मे करम पर रहमत लाजिम कर ली है¹²⁰

أَنَّهُ مَن عَمِلَ مِنْكُمْ سُوءًا أَوْ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابَ مِن بَعْدِهَا وَأَصْلَحَ فَأَنَّهُ

कि तुम में जो कोई नादानी से कुछ बुराई कर बैठे फिर इस के बाद तौबा करे और संवर जाए तो बेशक **اللَّهُ**

غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٥٣﴾ وَكَذَلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ لَّيْسَتَيْنِ سَبِيلُ

बख़्खाने वाला मेहरबान है और इसी तरह हम आयतों को मुफ़्स्सल बयान फ़रमाते हैं¹²¹ और इस लिये कि मुजरिमों का

الْمُجْرِمِينَ ﴿٥٥﴾ قُلْ إِنِّي نُهِيتُ أَنْ أَعْبُدَ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ

रस्ता ज़ाहिर हो जाए¹²² तुम फ़रमाओ मुझे मन्अ किया गया है कि उन्हें पूजूं जिन को तुम **اللَّهُ** के सिवा

اللَّهُ قُلْ لَا أَتَّبِعُ أَهْوَاءَكُمْ قَدْ ضَلَلْتُ إِذَا وَمَا أَنَا مِنَ

पूजते हो¹²³ तुम फ़रमाओ मैं तुम्हारी ख़्वाहिश पर नहीं चलता¹²⁴ यूँ हो तो मैं बहक जाऊँ और राह

الْمُهْتَدِينَ ﴿٥٦﴾ قُلْ إِنِّي عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَكَذَّبْتُمْ بِهِ مَّا عِنْدِي

पर न रहूँ तुम फ़रमाओ मैं तो अपने रब की तरफ़ से रोशन दलील पर हूँ¹²⁵ और तुम उसे झुटलाते हो मेरे पास नहीं

مَا تَسْتَعْجِلُونَ بِهِ إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ يَقُصُّ الْحَقَّ وَهُوَ خَيْرُ

जिस की तुम जल्दी मचा रहे हो¹²⁶ हुक्म नहीं मगर **اللَّهُ** का वोह हक़ फ़रमाता है और वोह सब से बेहतर

الْفَصْلِينَ ﴿٥٧﴾ قُلْ لَوْ أَنَّ عِنْدِي مَا تَسْتَعْجِلُونَ بِهِ لَقُضِيَ الْأَمْرُ

फ़ैसला करने वाला तुम फ़रमाओ अगर मेरे पास होती वोह चीज़ जिस की तुम जल्दी कर रहे हो¹²⁷ तो मुझ में

بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِالظَّالِمِينَ ﴿٥٨﴾ وَعِنْدَهُ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ

तुम में काम ख़त्म हो चुका होता¹²⁸ और **اللَّهُ** ख़ूब जानता है सितम गारों को और उसी के पास हैं कुन्जियां ग़ैब की

उमरा पर सबक़त नहीं रखते तो अगर वोह हक़ होता जिस पर येह गुरबा हैं तो वोह हम पर साबिक़ न होते । 120 : अपने फ़ज़्लो करम से वा'दा

फ़रमाया 121 : ताकि हक़ ज़ाहिर हो और उस पर अमल किया जाए । 122 : ताकि उस से इज्तिनाब किया जाए । 123 : क्यूँ कि येह अक्लो

नक्ल दोनों के खिलाफ़ है । 124 : या'नी तुम्हारा तरीका इत्तिबाए नफ़स व ख़्वाहिशे हवा है, न कि इत्तिबाए दलील, इस लिये इख़्तियार करने

के काबिल नहीं । 125 : और मुझे उस की मा'रिफ़त हासिल है मैं जानता हूँ कि उस के सिवा कोई मुस्तहिक़े इबादत नहीं । रोशन दलील कुरआन

शरीफ़ और मो'जिजात और तौहीद के बराहीने वाजेहा सब को शामिल है । 126 : कुफ़्फ़ार इस्तिहज़ान हुज़ूर सय्यिदे आलम عَلَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

से कहा करते थे कि हम पर जल्दी अज़ाब नाज़िल कराइये, इस आयत में उन्हें जवाब दिया गया और ज़ाहिर कर दिया गया कि हुज़ूर से येह

सुवाल करना निहायत बे जा है । 127 : या'नी अज़ाब 128 : मैं तुम्हें एक साअत की मोहलत न देता और तुम्हें रब का मुख़ालिफ़ देख कर बे दरंग

हलाक कर डालता । लेकिन **اللَّهُ** तआला हलीम है उक़ूबत में जल्दी नहीं फ़रमाता ।

لَا يَعْلَمُهَا إِلَّا هُوَ ۖ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۗ وَمَا تَسْقُطُ مِنْ وَرَقَةٍ إِلَّا

उन्हें वोही जानता है¹²⁹ और जानता है जो कुछ खुशकी और तरी में है और जो पत्ता गिरता है

إِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٌ فِي ظُلْمَةٍ إِلَّا يَأْبِسُ إِلَّا فِي

वोह उसे जानता है और कोई दाना नहीं ज़मीन की अंधेरियों में और न कोई तर और न खुशक जो एक

كِتَابٍ مُّبِينٍ ۝ ٥٩ ۚ وَهُوَ الَّذِي يَتَوَفَّاكُم بِاللَّيْلِ وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُم

रोशन किताब में लिखा न हो¹³⁰ और वोही है जो रात को तुम्हारी रूहें कब्ज़ करता है¹³¹ और जानता है जो कुछ दिन

بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيهِ لِيُقْضَىٰ أَجَلٌ مُّسَيَّءٌ ثُمَّ إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ

में कमाओ फिर तुम्हें दिन में उठाता है कि ठहराई हुई मीआद पूरी हो¹³² फिर उसी की तरफ़ तुम्हें फिरना है¹³³ फिर

يُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۖ ۝ ٦٠ ۚ وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ وَيُرْسِلُ

वोह बता देगा जो कुछ तुम करते थे और वोही ग़ालिब है अपने बन्दों पर और तुम पर

عَلَيْكُمْ حَفْظَةً ۗ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَحَدَكُمْ الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ

निगहबान भेजता है¹³⁴ यहां तक कि जब तुम में किसी को मौत आती है हमारे फिरिश्ते उस की रूह कब्ज़ करते हैं¹³⁵ और वोह

لَا يُفَرِّطُونَ ۖ ۝ ٦١ ۚ ثُمَّ رُدُّوْا إِلَى اللَّهِ مَوْلَاهُمُ الْحَقُّ ۗ أَلَا لَهُ الْحُكْمُ ۚ وَهُوَ

कुसूर नहीं करते¹³⁶ फिर फेरे जाते हैं अपने सच्चे मौला **اللَّهُ** की तरफ़ सुनता है उसी का हुक्म है¹³⁷ और वोह

129 : तो जिसे वोह चाहे वोही ग़ैब पर मुत्तलअ हो सकता है बिगैर उस के बताए कोई ग़ैब नहीं जान सकता। (واحدی) **130** : किताबे मुबीन से लौहे महफूज़ मुराद है **اللَّهُ** तअलाला ने مَا كَانَ وَمَا يَكُونُ (जो कुछ हो चुका और आयिन्दा जो कुछ होगा तमाम) के उलूम उस में मक्तूब फ़रमाए। **131** : तो तुम पर नींद मुसल्लत होती है और तुम्हारे तसर्फ़ात अपने हाल पर बाकी नहीं रहते। **132** : और उज़्र अपनी इन्तिहा को पहुंचे। **133** : आखिरत में। इस आयत में بَعَثَ بَعْدَ الْمَوْتِ या 'नी मरने के बा'द ज़िन्दा होने पर दलील ज़िक्र फ़रमाई गई, जिस तरह रोज़मर्मा सोने के वक़्त एक तरह की मौत तुम पर वारिद की जाती है जिस से तुम्हारे हवास मुअत्तल हो जाते हैं और चलना फिरना पकड़ना और बेदारी के अफ़अल सब मुअत्तल होते हैं इस के बा'द फिर बेदारी के वक़्त **اللَّهُ** तअलाला तमाम कुवा (ताक़तों) को उन के तसर्फ़ात अत्ता फ़रमाता है। येह दलीले बय्यिन है इस बात की, कि वोह ज़िन्दगानी के तसर्फ़ात बा'दे मौत अत्ता करने पर इसी तरह कादिर है। **134** : फिरिश्ते जिन को किरामन कातिबीन कहते हैं वोह बनी आदम की नेकी और बदी लिखते रहते हैं, हर आदमी के साथ दो फिरिश्ते हैं एक दाहने एक बाएं, नेकियां दाहनी तरफ़ का फिरिश्ता लिखता है और बदियां बाई तरफ़ का। बन्दों को चाहिये होशियार रहें और बदियों और गुनाहों से बचें क्यूं कि हर एक अमल लिखा जाता है और रोज़े क़ियामत वोह नामए आ'माल तमाम खल्क के सामने पढा जाएगा तो गुनाह कितनी रुस्वाई का सबब होंगे **اللَّهُ** पनाह दे। (امین ثم امین) **135** : इन फिरिश्तों से मुराद या तन्हा मलकुल मौत हैं इस सूत्र में सीगए जम्अ ता'ज़ीम के लिये है या मलकुल मौत मअ उन फिरिश्तों के मुराद हैं जो उन के आ'वान (मुअविन व मददगार) हैं, जब किसी की मौत का वक़्त आता है मलकुल मौत ब हुक्मे इलाही अपने आ'वान को उस की रूह कब्ज़ करने का हुक्म देते हैं जब रूह हल्क तक पहुंचती है तो खुद कब्ज़ फ़रमाते हैं। (باران) **136** : और ता'मीले हुक्म में उन से कोताही वाक़ेअ नहीं होती और उन के अमल में सुस्ती और ताखीर राह नहीं पाती, अपने फ़राइज़ ठीक वक़्त पर अदा करते हैं। **137** : और उस रोज़ उस के सिवा कोई हुक्म करने वाला नहीं।

أَسْرِعُ الْحُسَيْدِينَ ﴿٢٢﴾ قُلْ مَنْ يُنَجِّكُمْ مِّنْ ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ

सब से जल्द हिसाब करने वाला¹³⁸ तुम फ़रमाओ वोह कौन है जो तुम्हें नजात देता है जंगल और दरिया की आफतों से

تَدْعُونَهُ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً لِّئِنْ أَنْجَانَا مِنْ هَذِهِ لَنَكُونَنَّ مِنَ

जिसे पुकारते हो गिड़गिड़ा कर और आहिस्ता कि अगर वोह हमें इस से बचावे तो हम जरूर

الشَّاكِرِينَ ﴿٢٣﴾ قُلِ اللَّهُ يُنَجِّكُمْ مِنْهَا وَمِنْ كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ أَنْتُمْ

एहसान मानेंगे¹³⁹ तुम फ़रमाओ **اللَّهُ** तुम्हें नजात देता है इस से और हर बेचैनी से फिर तुम

تَشْرِكُونَ ﴿٢٤﴾ قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلَىٰ أَنْ يَبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِّنْ فَوْقِكُمْ

शरीक ठहराते हो¹⁴⁰ तुम फ़रमाओ वोह कादिर है कि तुम पर अज़ाब भेजे तुम्हारे ऊपर से

أَوْ مِنْ تَحْتِ أَرْضِكُمْ أَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيْعًا وَيُذِيقَ بَعْضَكُمْ بَأْسَ

या तुम्हारे पाउं के तले से या तुम्हें भिड़ा दे मुख़लिफ़ गुरौह कर के और एक को दूसरे की सख़्ती

بَعْضٍ ۗ أَنْظُرْ كَيْفَ نَصَّرَفَ الْآيَاتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُونَ ﴿٢٥﴾ وَكَذَّبَ بِهِ

चखाए देखो हम क्यूंकर तरह तरह से आयतें बयान करते हैं कि कहीं उन को समझ हो¹⁴¹ और उसे¹⁴² झुटलाया

تَوْمَكُمْ وَهُوَ الْحَقُّ ۗ قُلْ لَسْتُ عَلَيْكُمْ بِوَكِيلٍ ﴿٢٦﴾ لِكُلِّ نَبِيٍّ مَّسْتَقَرٌّ

तुम्हारी कौम ने और येही हक़ है तुम फ़रमाओ मैं तुम पर कुछ कड़ोड़ा (निगहबान) नहीं¹⁴³ हर ख़बर का एक वक़्त मुक़रर है¹⁴⁴

138 : क्यूं कि उस को सोचने, जांचने, शुमार करने की हाज़त नहीं जिस में देर हो। **139** : इस आयत में कुफ़र को तम्बीह की गई कि खुशकी और तरी के सफ़रों में जब वोह मुब्तलाए आफ़ात हो कर परेशान होते हैं और ऐसे शदाइद व अहवाल पेश आते हैं जिन से दिल कांप जाते हैं और ख़तरात कुलूब को मुज़्तरिब और बेचैन कर देते हैं उस वक़्त बुत परस्त भी बुतों को भूल जाता है और **اللَّهُ** तआला ही से दुआ करता है उसी की जनाब में तज़र्रअ व ज़ारी करता है और कहता है कि इस मुसीबत से अगर तू ने नजात दी तो मैं शुक़ गुज़ार होउंगा और तेरा हक्के ने'मत बजा लाऊंगा। **140** : और बजाए शुक़ गुज़ारी के ऐसी बड़ी ना शुक़ी करते हो और येह जानते हुए कि बुत निकम्मे हैं किसी काम के नहीं फिर उन्हें **اللَّهُ** का शरीक करते हो कितनी बड़ी गुमराही है। **141** : मुफ़स्सरीन का इस में इख़्तिलाफ़ है कि इस आयत से कौन लोग मुराद हैं ? एक जमाअत ने कहा कि इस से उम्मत मुहम्मदियह मुराद है और आयत इन्हीं के हक़ में नाज़िल हुई। बुख़ारी की हदीस में है कि जब येह नाज़िल हुवा कि वोह कादिर है तुम पर अज़ाब भेजे तुम्हारे ऊपर से तो सथियदे आलम **عَلَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया : तेरी ही पनाह मांगता हूं और जब येह नाज़िल हुवा कि या तुम्हारे पाउं के नीचे से तो फ़रमाया : मैं तेरी ही पनाह मांगता हूं और जब येह नाज़िल हुवा या तुम्हें भिड़ावे मुख़लिफ़ गुरौह कर के और एक को दूसरे की सख़्ती चखाए तो फ़रमाया : येह आसान है। मुस्लिम की हदीस शरीफ़ में है कि एक रोज़ सथियदे आलम **عَلَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने मस्जिदे बनी मुआविया में दो रकअत नमाज़ अदा फ़रमाई और इस के बा'द तवील दुआ की, फिर सहाबा की तरफ़ मुतवज्जेह हो कर फ़रमाया : मैं ने अपने रब से तीन सुवाल किये उन में से सिर्फ़ दो कबूल फ़रमाए गए, एक सुवाल तो येह था कि मेरी उम्मत को कहते आम से हलाक न फ़रमाए येह कबूल हुवा, एक येह था कि इन्हें गर्क से अज़ाब न फ़रमाए येह भी कबूल हुवा, तीसरा सुवाल येह था कि इन में बाहम जंगो जिदाल न हो येह कबूल नहीं हुवा। **142** : या'नी कुरआन शरीफ़ को या नुज़ूले अज़ाब को **143** : मेरा काम हिदायत है कुलूब की जिम्मेदारी मुझ पर नहीं। **144** : या'नी **اللَّهُ** तआला ने जो ख़बरें दीं उन के लिये वक़्त मुअय्यन हैं उन का वुकूअ ठीक उसी वक़्त होगा।

وَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٦٤﴾ وَإِذَا رَأَيْتَ الَّذِينَ يَخُوضُونَ فِي آيَاتِنَا فَأَعْرِضْ

और अन्करीब जान जाओगे और ऐ सुनने वाले जब तू उन्हें देखे जो हमारी आयतों में पड़ते हैं¹⁴⁵ तो उन से मुंह

عَنْهُمْ حَتَّىٰ يَخُوضُوا فِي حَدِيثٍ غَيْرِهِ ۗ وَإِمَّا يُبْسِتُ الشَّيْطَانُ فَلَا

फेर ले¹⁴⁶ जब तक और बात में पड़ें और जो कहीं तुझे शैतान भुलावे तो

تَقْعُدُ بَعْدَ الذِّكْرَىٰ مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٦٥﴾ وَمَا عَلَى الَّذِينَ

याद आए पर ज़ालिमों के पास न बैठ और परहेज गारों पर

يَتَّقُونَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِنْ شَيْءٍ ۚ وَلَكِنْ ذِكْرًا لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿٦٦﴾

उन के हिसाब से कुछ नहीं¹⁴⁷ हां नसीहत देना शायद वोह बाज़ आए¹⁴⁸

وَذَرِ الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَهُمْ لِبَآئِهِمْ لَهْوًا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا وَ

और छोड़ दे उन को जिन्होंने ने अपना दीन हंसी खेल बना लिया और उन्हें दुन्या की जिन्दगी ने फ़रेब दिया और

ذَكَرِيهٖ أَنْ تَبْسَلَ نَفْسٌ بِمَا كَسَبَتْ ۖ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيٌّ

कुरआन से नसीहत दो¹⁴⁹ कि कहीं कोई जान अपने किये पर पकड़ी न जाए¹⁵⁰ **अल्लाह** के सिवा न उस का कोई हिमायती हो

وَلَا شَفِيعٌ ۚ وَإِنْ تَعْدِلْ كُلُّ عَدْلٍ لَا يُؤْخَذُ مِنْهَا ۗ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ

न सिफ़ारिशी और अगर अपने इवज़ सारे बदले दे तो उस से न लिये जाएं येह हैं¹⁵¹ वोह जो

أُبْسِلُوا بِمَا كَسَبُوا ۗ لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَيْمٍ وَعَذَابٌ أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا

अपने किये पर पकड़े गए उन्हें पीने को खौलता पानी और दर्दनाक अज़ाब बदला उन के

يَكْفُرُونَ ﴿٦٧﴾ قُلْ أَدْعُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا وَ

कुफ़्र का तुम फ़रमाओ¹⁵² क्या हम **अल्लाह** के सिवा उस को पूजें जो हमारा न भला करे न बुरा¹⁵³ और

145 : ता'न, तशनीअ, इस्तिहज़ा के साथ **146** : और उन की हम नशीनी तर्क कर। **मस्अला** : इस आयत से मा'लूम हुवा कि बे दीनों की जिस मजलिस में दीन का एहतिराम न किया जाता हो मुसल्मान को वहां बैठना जाइज़ नहीं। इस से साबित हो गया कि कुफ़्र और बे दीनों के जल्से जिन में वोह दीन के ख़िलाफ़ तक्रीरें करते हैं उन में जाना सुनने के लिये शिर्कत करना जाइज़ नहीं और रद व जवाब के लिये जाना मुजालसत (शिर्कत करना) नहीं बल्कि इज़हारे हक़ है वोह मन्मूअ नहीं जैसा कि अगली आयत से ज़ाहिर है। **147** : या'नी ता'न व इस्तिहज़ा करने वालों के गुनाह उन्हीं पर हैं, उन्हीं से इस का हिसाब होगा, परहेज गारों पर नहीं। **शाने नुज़ूल** : मुसल्मानों ने कहा था कि हमें गुनाह का अन्देशा है जब कि हम उन्हें छोड़ दें और मन्अ न करें इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **148 मस्अला** : इस आयत से मा'लूम हुवा कि पन्दो नसीहत और इज़हारे हक़ के लिये उन के पास बैठना जाइज़ है। **149** : और अहकामे शरइय्या बताओ। **150** : और अपने जराइम के सबब अज़ाबे जहन्नम में गिरिफ़तार न हो। **151** : दीन को हंसी और खेल बनाने वाले और दुन्या के मफ़तून (शैदाई) **152** : ऐ मुस्फ़ा **153** : और उस में कोई कुदरत नहीं। **ع ١٣**

نُرْدُ عَلَىٰ أَعْقَابِنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْنَا اللَّهَ كَالَّذِي اسْتَهْوَتْهُ الشَّيَاطِينُ فِي

उलटे पाउं पलटा दिये जाएं बा'द इस के कि **अल्लाह** ने हमें राह दिखाई¹⁵⁴ उस की तरह जिसे शैतानों ने

الْأَرْضِ حَيْرَانَ ۖ لَوْلَا أَن صَحَّبَ يَدْعُونَهُ إِلَىٰ الْهُدَىٰ اسْتَبْنَا ۖ قُلْ إِنَّ

जमीन में राह भुला दी¹⁵⁵ हैरान है उस के रफ़ीक़ उसे राह की तरफ़ बुला रहे हैं कि इधर आ तुम फ़रमाओ कि

هُدَىٰ اللَّهُ هُوَ الْهُدَىٰ ۖ وَأَمْرٌ نَّالِئْسَلِمَ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝٤١ وَأَنَّ

अल्लाह ही की हिदायत हिदायत है¹⁵⁶ और हमें हुक्म है कि हम उस के लिये गरदन रख दें¹⁵⁷ जो रब है सारे जहान का और यह कि

أَقْبِسُوا الصَّلَاةَ وَاتَّقُوا ۖ وَهُوَ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ۝٤٢ وَهُوَ الَّذِي

नमाज़ काइम रखो और उस से डरो और वोही है जिस की तरफ़ तुम्हें उठना है और वोही है जिस ने

خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ بِالْحَقِّ ۖ وَيَوْمَ يَقُولُ كُنْ فَيَكُونُ ۖ قَوْلُهُ

आस्मान व ज़मीन ठीक बनाए¹⁵⁸ और जिस दिन फ़ना हुई हर चीज़ को कहेगा हो जा वोह फ़ौरन हो जाएगी उस की बात

الْحَقِّ ۖ وَلَهُ الْمَلِكُ يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ ۖ عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۖ

सच ही है और उसी की सल्तनत है जिस दिन सूर फूँका जाएगा¹⁵⁹ हर छुपे और ज़ाहिर का जानने वाला

وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ ۝٤٣ وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ لِأَبِيهِ إِذْ رَأَىٰ أَن تَتَّخِذُ

और वोही है हिकमत वाला खबरदार और याद करो जब इब्राहीम ने अपने बाप¹⁶⁰ आज़र से कहा क्या तुम

154 : और इस्लाम और तौहीद की ने'मत अता फ़रमाई और बुत परस्ती के बद तरीन ववाल से बचाया। **155 :** इस आयत में हक़ व बातिल की दा'वत देने वालों की एक तम्सील बयान फ़रमाई गई कि जिस तरह मुसाफ़िर अपने रफ़ीकों के साथ था जंगल में भूतों और शैतानों ने उस को रस्ता बहका दिया और कहा मन्ज़िले मक़सूद की येही राह है और उस के रफ़ीक़ उस को राहे रास्त की तरफ़ बुलाने लगे वोह हैरान रह गया किधर जाए ! अन्जाम उस का येही होगा कि अगर वोह भूतों की राह पर चल दे तो हलाक हो जाएगा और रफ़ीकों का कहा माने तो सलामत रहेगा और मन्ज़िल पर पहुंच जाएगा। येही हाल उस शख़्स का है जो तरीक़ए इस्लाम से बहका और शैतान की राह चला मुसल्मान उस को राहे रास्त की तरफ़ बुलाते हैं अगर इन की बात मानेगा राह पाएगा वरना हलाक हो जाएगा। **156 :** या'नी जो तरीक़ **अल्लाह** तआलाला ने अपने बन्दों के लिये वाजेह फ़रमाया और जो दीन इन के लिये मुकर्रर किया वोही हिदायत व नूर है और जो उस के सिवा है वोह दीन बातिल है। **157 :** और उसी की इताअत व फ़रमां बरदारी करें और खास उसी की इबादत करें। **158 :** जिन से उस की कुदरते कामिला और उस का इल्मे मुहीत और उस की हिकमत व सन्अत ज़ाहिर है। **159 :** कि नाम को भी कोई सल्तनत का दा'वा करने वाला न होगा। तमाम जबाबिरा फ़राइना (जालिमो जाबिर बादशाह) और सब दुन्या की सल्तनत का गुरूर करने वाले देखेंगे कि दुन्या में जो वोह सल्तनत का दा'वा रखते थे वोह बातिल था। **160 :** का़मूस में है कि आज़र हज़रते इब्राहीम **عَلَيْهِ السَّلَام** के चचा का नाम है। इमाम अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती ने मसालिकुल हुनफ़ाअ में भी ऐसा ही लिखा है। चचा को बाप कहना तमाम ममालिक में मा'मूल है बिल खुसूस अरब में। कुरआने करीम में है : "نَعْبُدُ إِلَهَكَ وَاللَّهُ إِلَهُكَ وَإِسْحَاقَ إِلَهُهُ وَاحِدًا" इस में हज़रते इस्माईल को हज़रते या'कूब के आबा में ज़िक़र किया गया है बा वुजूदे कि आप अ़म (चचा) हैं। हदीस शरीफ़ में भी हज़रत सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने हज़रते अब्बास **رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ** को **أَبُ** (मफ़रात राफ़ व क़िरोमिरो) फ़रमाया। चुनान्चे इर्शाद किया : "ذُرُّوْا عَلَيَّ أَبِي" और यहां अबी से हज़रते अब्बास मुराद हैं।

أَصَامًا إِلَهَةً إِيَّيَّكَ وَقَوْمَكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٤٣﴾ وَكَذَلِكَ

बुतों को खुदा बनाते हो बेशक मैं तुम्हें और तुम्हारी कौम को खुली गुमराही में पाता हूँ¹⁶¹ और इसी तरह

نُرِيَّ إِبْرَاهِيمَ مَلَكُوتَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلِيَكُونَ مِنَ السُّوقِئِينَ ﴿٤٥﴾

हम इब्राहीम को दिखाते हैं सारी बादशाही आस्मानों और ज़मीन की¹⁶² और इस लिये कि वोह ऐनुल यकीन वालों में हो जाए¹⁶³

فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ اللَّيْلُ رَأَى الْكَوْكَبَ قَالَ هَذَا رَبِّي فَلَمَّا أَفَلَ قَالَ لَا

फिर जब उन पर रात का अंधेरा आया एक तारा देखा¹⁶⁴ बोले इसे मेरा रब ठहराते हो फिर जब वोह डूब गया बोले मुझे

أَحَبُّ الْأَفْلِينَ ﴿٤٦﴾ فَلَمَّا رَأَى الْقَمَرَ بَازِعًا قَالَ هَذَا رَبِّي فَلَمَّا أَفَلَ

खुश नहीं आते डूबने वाले फिर जब चांद चमकता देखा बोले इसे मेरा रब बताते हो फिर जब वोह डूब गया

161 : येह आयत मुश्रिकीने अरब पर हुज्जत है जो हज़रते इब्राहीम عليه الصلوة والسلام को मुअज़्ज़म जानते थे और उन की फज़ीलत के मो'तरिफ़ थे, उन्हें दिखाया जाता है कि हज़रते इब्राहीम عليه الصلوة والسلام बुत परस्ती को कितना बड़ा ऐब और गुमराही बताते हैं अगर तुम उन्हें मानते हो तो बुत परस्ती तुम भी छोड़ दो। **162** : या'नी जिस तरह हज़रते इब्राहीम عليه الصلوة والسلام को दीन में बीनाई अता फ़रमाई ऐसे ही उन्हें आस्मानों और ज़मीन के मुल्क दिखाते हैं। हज़रते इब्ने अब्बास رضي الله عنهما ने फ़रमाया इस से आस्मानों और ज़मीन की खल्क मुराद है। मुजाहिद और सईद बिन जुबैर कहते हैं कि आयाते समावातो अर्ज (ज़मीन व आस्मान के अजाइबात) मुराद हैं। येह इस तरह कि हज़रते इब्राहीम عليه الصلوة والسلام को सखा (एक चट्टान) पर खड़ा किया गया और आप के लिये समावात मख़शूफ़ किये (खोल दिये) गए, यहां तक कि आप ने अर्शों कुर्सी और आस्मानों के तमाम अजाइब और जन्नत में अपने मक़ाम को मुआयना फ़रमाया, आप के लिये ज़मीन कश्फ़ फ़रमा दी गई यहां तक कि आप ने सब से नीचे की ज़मीन तक नज़र की और ज़मीनों के तमाम अजाइब देखे। मुफ़स्सिरान का इस में इख़िलाफ़ है कि येह रूयत ब चश्मे बातिन थी या ब चश्मे सर। **163** : क्यूं कि हर जाहिर व मख़फ़ी चीज़ उन के सामने कर दी गई और खल्क के आ'माल में से कुछ भी उन से न छुपा रहा। **164** : उलमाए तफ़सीर और अस्थावे अख़बारो सियर का बयान है कि नमरूद इब्ने कन्आन बड़ा जाबिर बादशाह था सब से पहले इसी ने ताज सर पर रखा येह बादशाह लोगों से अपनी परस्तिश कराता था, काहिन और मुनज्जिम (नुजूमी) कसरत से इस के दरबार में हाज़िर रहते थे। नमरूद ने ख़ाब देखा कि एक सितारा तुलुअ हुवा है, उस की रोशनी के सामने आफ़ताब महताब बिल्कुल बे नूर हो गए, इस से वोह बहुत ख़ौफ़ज़दा हुवा काहिनों से ता'बीर दरयाफ़्त की, उन्होंने ने कहा : इस साल तेरी क़लम रब (सल्तनत) में एक फ़रज़न्द पैदा होगा जो तेरे ज़वाले मुल्क का बाइस होगा और तेरे दीन वाले उस के हाथ से हलाक होंगे। येह ख़बर सुन कर वोह परेशान हुवा और उस ने हुक्म दे दिया कि जो बच्चा पैदा हो क़त्ल कर डाला जाए और मर्द औरतों से अलाहदा रहें और इस की निगहबानी के लिये एक महक़मा काइम कर दिया गया। तक्दीराले इलाहियह को कौन टाल सकता है हज़रते इब्राहीम عليه الصلوة والسلام की वालिदाए माजिदा हामिला हुई और काहिनों ने नमरूद को इस की भी ख़बर दी कि वोह बच्चा हम्ल में आ गया लेकिन चूँकि हज़रत की वालिदा साहिबा की उम्र कम थी उन का हम्ल किसी तरह पहचाना ही न गया, जब ज़मानए विलादत क़रीब हुवा तो आप की वालिदा उस तहख़ाने में चली गई जो आप के वालिद ने शहर से दूर खोद कर तय्यार किया था, वहां आप की विलादत हुई और वहीं आप रहे, पथ्थरों से उस तहख़ाने का दरवाज़ा बन्द कर दिया जाता था रोज़ाना वालिदा साहिबा दूध पिला आती थीं और जब वहां पहुंचती थीं तो देखती थीं कि आप अपनी सरे अंगुशत चूस रहे हैं और उस से दूध बरआमद होता है आप बहुत जल्द बढ़ते थे एक महीने में इतना जितने दूसरे बच्चे एक साल में, इस में इख़िलाफ़ है कि आप तहख़ाने में कितना अर्सा रहे, बा'ज कहते हैं सात बरस, बा'ज तेरह बरस, बा'ज सतरह बरस। येह मस'अला यकीनी है कि अम्बिया हर हाल में मा'सूम होते हैं और वोह अपनी इब्तिदाए हस्ती से तमाम अवकात वुजूद में आरिफ़ होते हैं। एक रोज़ हज़रते इब्राहीम عليه الصلوة والسلام ने अपनी वालिदा से दरयाफ़्त फ़रमाया : मेरा रब (पालने वाला) कौन है ? उन्होंने ने कहा : मैं। फ़रमाया : तुम्हारा रब कौन है ? उन्होंने ने कहा : तुम्हारे वालिद। फ़रमाया : उन का रब कौन है ? इस पर वालिदा ने कहा : ख़ामोश रहो और अपने शोहर से जा कर कहा कि जिस लड़के की निस्बत येह मशहूर है कि वोह ज़मीन वालों का दीन बदल देगा वोह तुम्हारा फ़रज़न्द ही है और येह गुफ़्तू बयान की। हज़रते इब्राहीम عليه الصलوة والسلام ने इब्तिदा ही से तौहीद की हिमायत और अक़ाइदे कुफ़्रिय्या का इल्बाल शुरूअ फ़रमा दिया और जब एक सूराख़ की राह से शब के वक़्त आप ने जोहरा या मुशतरी सितारे को देखा तो इक़ामते हुज्जत शुरूअ कर दी क्यूं कि उस ज़माने के लोग बुत और कवाकिब की परस्तिश करते थे तो आप ने एक निहायत नफ़ीस और दिल नशीन पैराए में उन्हें नज़र व इस्तिदलाल की तरफ़ राहनुमाई

قَالَ لَيْنٌ لَّمْ يَهْدِنِي رَبِّي لَأَكُونَنَّ مِنَ الْقَوْمِ الضَّالِّينَ ﴿٤٧﴾ فَلَمَّا

कहा अगर मुझे मेरा रब हिदायत न करता तो मैं भी इन्हीं गुमराहों में होता¹⁶⁵ फिर जब

رَأَى الشُّسَّ بَارِغَةً قَالَ هَذَا رَبِّي هَذَا أَكْبَرُ فَلَمَّا أَفَلَتْ قَالَ

सूरज जग मगाता देखा बोले इसे मेरा रब कहते हो¹⁶⁶ यह तो उन सब से बड़ा है फिर जब वोह डूब गया कहा

يَقَوْمِ إِنِّي بُرِيءٌ مِّمَّا تُشْرِكُونَ ﴿٤٨﴾ إِنِّي وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلذِّمَى فَطَرَ

ऐ कौम मैं बेज़ार हूँ उन चीज़ों से जिन्हें तुम शरीक ठहराते हो¹⁶⁷ मैं ने अपना मुंह उस की तरफ़ किया जिस ने

السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ حَنِيفًا وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿٤٩﴾ وَحَاجَّهُ

आस्मान व ज़मीन बनाए एक उसी का हो कर¹⁶⁸ और मैं मुश्रिकों में नहीं और उन की कौम उन से

قَوْمَهُ ﴿٥٠﴾ قَالَ أَتَحَاجُّونِي فِي اللَّهِ وَقَدْ هَدَانِ ﴿٥١﴾ وَلَا أَخَافُ مَا

झगड़ने लगी कहा क्या **अल्लाह** के बारे में मुझ से झगड़ते हो वोह तो मुझे राह बता चुका¹⁶⁹ और मुझे उन का डर नहीं

تُشْرِكُونَ بِهِ إِلَّا أَنْ يُشَاءَ رَبِّي شَيْئًا وَسِعَ رَبِّي كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ﴿٥٢﴾

जिन्हें तुम शरीक बताते हो¹⁷⁰ हां जो मेरा ही रब कोई बात चाहे¹⁷¹ मेरे रब का इल्म हर चीज़ को मुहीत है

أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ﴿٥٣﴾ وَكَيْفَ أَخَافُ مَا أَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُونَ أَنَّكُمْ

तो क्या तुम नसीहत नहीं मानते और मैं तुम्हारे शरीकों से क्योंकर डरूँ¹⁷² और तुम नहीं डरते कि तुम ने

أَشْرَكْتُمْ بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنَزَّلْ بِهِ عَلَيْكُمْ سُلْطَانًا ﴿٥٤﴾ فَأَمَّا الْفَرِيقَيْنِ

अल्लाह का शरीक उस को ठहराया जिस की तुम पर उस ने कोई सनद न उतारी तो दोनों गुरौहों में

की जिस से वोह इस नतीजे पर पहुंचे कि अलम बि तमामिही ह़ादिस है, इलाह नहीं हो सकता, वोह खुद मूजिद व मुदबिब्र का मोहताज है जिस के कुदरतो इख़्तियार से इस में तग़य्युर होते रहते हैं। 165 : इस में कौम को तम्बीह है कि जो कमर को इलाह ठहराए वोह गुमराह है क्यूं कि उस का एक हाल से दूसरे हाल की तरफ़ मुन्तक़िल होना दलीले हुदूसो इम्कान है। 166 : शम्स मुअन्नस ग़ैर ह़कीकी है इस के लिये मुज़क्कर मुअन्नस के दोनों सीगे इस्त'माल किये जा सकते हैं, यहां "هَذَا" मुज़क्कर लाया गया इस में ता'लीमे अदब है कि लफ़्ज़ रब की रिआयत के लिये लफ़्ज़ तानीस न लाया गया, इसी लिहाज़ से **अल्लाह** तआला की सिफ़्त में अल्लाम आता है न कि अल्लामा। 167 : हज़रते इब्राहीम عليه الصّلاة والسلام ने साबित कर दिया कि सितारों में छोटे से बड़े तक कोई भी रब होने की सलाहिय्यत नहीं रखता इन का इलाह होना बाति़ल है और कौम जिस शिर्क में मुब्तला है आप ने उस से बेज़ारी का इज़हार किया और इस के बा'द दीने ह़क़ का बयान फ़रमाया जो आगे आता है। 168 : या'नी इस्लाम के सिवा बाकी तमाम अदयान से जुदा रह कर। **मस्अला** : इस से मा'लूम हुवा कि दीने ह़क़ का क़ियाम व इस्तहक़ाम जब ही हो सकता है जब कि तमाम अदयाने बाति़ला से बेज़ारी हो। 169 : अपनी तौहीद व मा'रिफ़त की 170 : क्यूं कि वोह बेजान बुत हैं न ज़र दे सकते हैं न नफ़अ पहुंचा सकते हैं उन से क्या डरना। येह आप ने मुश्रिकीन से ज़बाब में फ़रमाया था जिन्हों ने आप से कहा था कि बुतों से डरो, उन के बुरा कहने से कहीं आप को कुछ नुक़सान न पहुंच जाए। 171 : वोह होगी क्यूं कि मेरा रब कादिरे मुल्लक़ है। 172 : जो बेजान ज़माद और अज़िजे महुज़ हैं।

أَحْسَٰ بِآلِٰمِنَ ۚ إِنَّ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٨١﴾ الَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا

अमान का ज़ियादा सज़ावार कौन है¹⁷³ अगर तुम जानते हो वोह जो ईमान लाए और अपने ईमान में किसी

إِيْمَانَهُمْ بِطُلْمٍ أُولَٰئِكَ لَهُمُ الْآمِنُونَ وَهُمْ مُّهْتَدُونَ ﴿٨٢﴾ وَتِلْكَ حُجَّتُنَا

नाहक़ की आमेशिश न की उन्हीं के लिये अमान है और वोही राह पर है और येह हमारी दलील है

أَتَيْنَاهَا إِبْرَاهِيمَ عَلَىٰ قَوْمِهِ ۖ نَرَفَعُ دَرَجَاتٍ مِّنْ نَّشَاءٍ ۗ إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ

कि हम ने इब्राहीम को उस की कौम पर अता फ़रमाई हम जिसे चाहें दरजों बुलन्द करे¹⁷⁴ बेशक तुम्हारा रब इल्मो हिकमत

عَلَيْمٌ ﴿٨٣﴾ وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ ۗ كُلًّا هَدَيْنَا ۚ وَنُوحًا هَدَيْنَا

वाला है और हम ने उन्हें इस्हाक़ और या'कूब अता किये उन सब को हम ने राह दिखाई और उन से पहले नूह को

مِّنْ قَبْلٍ وَمِنْ دُرِّيَّتِهِ دَاوُدَ وَسُلَيْمَانَ وَأَيُّوبَ وَيُوسُفَ وَمُوسَىٰ وَ

राह दिखाई और उस की औलाद में से दावूद और सुलैमान और अय्यूब और यूसुफ़ और मूसा और

هَارُونَ ۗ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿٨٤﴾ وَذَكَرْنَا وَيْحَٰبِي وَعِيسَىٰ وَ

हारून को और हम ऐसा ही बदला देते हैं नेकोकारों को और ज़करिय्या और यह्या और ईसा और

إِلْيَاسَ ۗ كُلٌّ مِّنَ الصَّٰلِحِينَ ﴿٨٥﴾ وَإِسْعٰقَ وَيُوسُفَ وَلُوطًا ۗ

इल्यास को येह सब हमारे कुर्ब के लाइक़ हैं और इस्माइल और यसअ और यूनस और लूत को

وَكَوَلَّا فَضَّلْنَا عَلَىٰ الْعَالَمِينَ ﴿٨٦﴾ وَمِنْ آبَائِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ وَإِخْوَانِهِمْ ۚ وَ

और हम ने हर एक को उस के वक्त में सब पर फ़ज़ीलत दी¹⁷⁵ और कुल उन के बाप दादा और औलाद और भाइयों में से बा'ज को¹⁷⁶ और

¹⁷³ : मुवहिहद (तौहीद का काइल) या मुशिक, ¹⁷⁴ : इल्मो अक़ल व फ़हमो फ़ज़ीलत के साथ जैसे कि हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के दरजे बुलन्द फ़रमाए दुन्या में इल्मो हिकमत व नुबुव्वत के साथ और आख़िरत में कुर्ब व सवाब के साथ । ¹⁷⁵ : नुबुव्वत व रिसालत के साथ । **मस्अला** : इस आयत से इस पर सनद लाई जाती है कि अम्बिया मलाएका से अफ़ज़ल हैं क्यूं कि आलम **اَعْلٰوٰت** के सिवा तमाम मौजूदात को शामिल है फिरिश्ते भी इस में दाख़िल हैं तो जब तमाम जहान वालों पर फ़ज़ीलत दी तो मलाएका पर भी फ़ज़ीलत साबित हो गई । यहाँ **اَعْلٰوٰت** तआला ने अट्टारह अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का ज़िक्र फ़रमाया और इस ज़िक्र में तरतीब न ज़माने के ए'तिबार से है न फ़ज़ीलत के न "वाव" तरतीब का मुक्तज़ी, लेकिन जिस शान से कि अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام के अस्मा ज़िक्र फ़रमाए गए इस में एक अज़ीब लतीफ़ा है वोह येह कि **اَعْلٰوٰت** तआला ने अम्बिया की हर जमाअत को एक ख़ास तरह की करामत व फ़ज़ीलत के साथ मुमताज़ फ़रमाया तो हज़रते नूह व इब्राहीम व इस्हाक़ व या'कूब का अव्वल ज़िक्र किया क्यूं कि येह अम्बिया के उसूल (आबाओ अच्चाद) हैं या'नी इन की औलाद में ब कसरत अम्बिया हुए जिन के अन्साब इन्हीं की तरफ़ रूजूअ करते हैं । नुबुव्वत के बा'द मरातिबे मो'तबरा में से मुल्क व इख़्तियार व सल्तनत व इक्वितदार है **اَعْلٰوٰत** तआला ने हज़रते दावूद व सुलैमान को इस का हज़्जे वाफ़िर (बहुत हिस्सा) दिया । और मरातिबे रफ़ीआ में से मुसीबतो बला पर साबिर रहना है, **اَعْلٰوٰत** तआला ने हज़रते अय्यूब को इस के साथ मुमताज़ फ़रमाया, फिर मुल्क व सन्न के दोनों मर्तबे हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को इनायत किये कि आप ने शिद्दतो बला पर मुदतों सन्न फ़रमाया फिर **اَعْلٰوٰत** तआला ने नुबुव्वत के साथ मुल्के मिस्र अता किया । कसरते मो'जिज़ात व कुव्वते बराहीन भी मरातिबे मो'तबरा में से हैं, **اَعْلٰوٰत** तआला ने हज़रते मूसा व हारून को इस के साथ

اجْتَبَيْتَهُمْ وَهَدَيْتَهُمْ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٨٤﴾ ذَلِكَ هُدَى اللَّهِ يَهْدِي

हम ने उन्हें चुन लिया और सीधी राह दिखाई यह **अल्लाह** की हिदायत है

بِهِ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۗ وَلَوْ أَشْرَكُوا لَحِطَّ عَلَيْهِمْ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٨٥﴾

कि अपने बन्दों में जिसे चाहे दे और अगर वोह शिर्क करते तो जरूर उन का किया अकारत जाता

أُولَئِكَ الَّذِينَ اتَّيْنَهُمُ الْكُتُبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ۚ فَإِنْ يَكْفُرْ بِهَا

येह हैं जिन को हम ने किताब और हुकम और नुबुव्वत अता की तो अगर येह लोग¹⁷⁷ इस से

هُوَ لَأَعْتَبُكُمْ فَكُلُّوا مِمَّا لَيْسَ بِهَا قَوْلًا يُكْفِرُونَ ۚ أُولَئِكَ الَّذِينَ هَدَى

मुक्किर हों तो हम ने इस के लिये एक ऐसी कौम लगा रखी है जो इन्कार वाली नहीं¹⁷⁸ येह हैं जिन को **अल्लाह** ने

اللَّهُ فَبِهِدَاهُمْ أَقْتَدِهِ ۗ قُلْ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا ۗ إِنَّهُ هُوَ الَّذِي

हिदायत की तो तुम उन्हीं की राह चलो¹⁷⁹ तुम फ़रमाओ मैं कुरआन पर तुम से कोई उजरत नहीं मांगता वोह तो नहीं मगर नसीहत

لِلْعَالَمِينَ ۙ وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ إِذْ قَالُوا مَا أَنْزَلَ اللَّهُ عَلَى

सारे जहान को¹⁸⁰ और यहूद ने **अल्लाह** की क़द न जानी जैसी चाहिये थी¹⁸¹ जब बोले **अल्लाह** ने किसी आदमी पर

بَشَرٍ مِّنْ شَيْءٍ ۗ قُلْ مَنْ أَنْزَلَ الْكُتُبَ الَّتِي نَزَّلْنَا بِهَا عَلَى نُوُورٍ

कुछ नहीं उतारा * तुम फ़रमाओ किस ने उतारी वोह किताब जो मूसा लाए थे रोशनी और

मुशरफ़ किया। जोहद व तर्क दुन्या भी मरातिबे मो'तबरा में से है, हज़रते ज़करिया व यहूया व ईसा व इलयास को इस के साथ मख़सूस

फ़रमाया। इन हज़रत के बाद **अल्लाह** तआला ने उन अम्बिया का ज़िक्र फ़रमाया कि जिन के न मुतबिइन बाकी रहे न उन की शरीअत जैसे

कि हज़रते इस्माईल, यसअ, यूनुस, लूत **عَلَيْهِمُ السَّلَامُ**। इस शान से अम्बिया का ज़िक्र फ़रमाने में उन की करामतों और खुसूसियतों का

एक अजीब लतीफ़ा नज़र आता है। 176 : हम ने फ़ज़ीलत दी 177 : या'नी अहले मक्का 178 : इस कौम से या अन्सार मुराद हैं या

मुहाजिरिन या तमाम अस्थाबे रसूलुल्लाह **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** या हुज़ूर पर ईमान लाने वाले सब लोग। **फ़ाएदा** : इस आयत में दलालत है कि

अल्लाह तआला अपने नबी **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की नुसरत फ़रमाएगा और आप के दीन को कुव्वत देगा और इस को तमाम अदयान पर ग़ालिब

करेगा। चुनान्चे ऐसा ही हुवा और येह ग़ैबी ख़बर वाकेअ हो गई। 179 **मस्अला** : इलमाए दीन ने इस आयत से येह मस्अला साबित किया

है कि सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** तमाम अम्बिया से अफ़ज़ल हैं क्यूं कि ख़िसाले कमाल व औसाफ़े शरफ़ जो जुदा जुदा अम्बिया को अता

फ़रमाए गए थे नबिय्ये करीम **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** के लिये सब को जम्अ फ़रमा दिया और आप को हुकम दिया "فَبِهِدَاهُمْ أَقْتَدِهِ" (तो तुम इन्हीं की

राह चलो) तो जब आप तमाम अम्बिया के औसाफ़े कमालिया के जामेअ हैं तो बेशक सब से अफ़ज़ल हुए। 180 : इस आयत से साबित हुवा

कि सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** तमाम ख़ल्क की तरफ़ मब्ज़ूस हैं और आप की दा'वत तमाम ख़ल्क को आम और कुल जहान आप की उम्मत।

181 : और उस की मा'रिफ़त से महरूम रहे और अपने बन्दों पर उस को जो रहमतो करम है उस को न जाना। **शाने नुज़ूल** : यहूद

की एक जमाअत अपने हिबरुल अहबार (बड़े आलिम पेशवा) मालिक इब्ने सैफ़ को ले कर सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** से मुजादला करने

आई, सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने उस से फ़रमाया : मैं तुझे उस परवर्दागर की क़सम देता हूं जिस ने हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَامُ** पर तौरैत

नाज़िल फ़रमाई। क्या तौरैत में तू ने येह देखा है "إِنَّ اللَّهَ يَنْفُخُ الْعِزْرَ السَّمِينِ" या'नी **अल्लाह** को मोटा आलिम मबगूज़ है, कहने लगा :

हां ! येह तौरैत में है, हुज़ूर ने फ़रमाया : तू मोटा आलिम ही तो है। इस पर वोह ग़ज़ब नाक हो कर कहने लगा कि **अल्लाह** ने किसी आदमी

पर कुछ नहीं उतारा, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और इस में फ़रमाया गया किस ने उतारी वोह किताब जो मूसा लाए थे ? तो वोह

ला जवाब हुवा और यहूद उस से बरहम हुए और उस को झिड़कने लगे और उस को हिज़्र के ओहदे से मा'ज़ूल कर दिया। (मारक वग़ान)

الْمَزْلُ الثَّانِي (2)

هُدًى لِّلنَّاسِ تَجْعَلُونَهُ قَرَاطِيسَ تُبْدُونَهَا وَتُخْفُونَ كَثِيرًا ۚ وَ

लोगों के लिये हिदायत जिस के तुम ने अलग अलग कागज़ बना लिये ज़ाहिर करते हो¹⁸² और बहुत सा छुपा लेते हो¹⁸³ और

عَلَيْكُمْ مَّا لَمْ تَعْلَمُوا أَنْتُمْ وَلَا آبَاؤُكُمْ ۗ قُلِ اللَّهُ لَا شَمَّ ذَرَّهُمْ فِي

तुम्हें वोह सिखाया जाता है¹⁸⁴ जो न तुम को मा'लूम था न तुम्हारे बाप दादा को **अल्लाह** कहे¹⁸⁵ फिर उन्हें छोड़ दो उन की

خَوْضِهِمْ يَلْعَبُونَ ﴿٩١﴾ وَهَذَا كِتَابٌ أَنْزَلْنَاهُ مُبْرَكٌ مُّصَدِّقُ الَّذِي

बेहूदगी में खेलता¹⁸⁶ और यह है बरकत वाली किताब कि हम ने उतारी¹⁸⁷ तस्दीक़ फ़रमाती उन किताबों की

بَيْنَ يَدَيْهِ وَلِتُنذِرَ أُمَّ الْقُرَىٰ وَمَنْ حَوْلَهَا ۗ وَالَّذِينَ يُؤْمِنُونَ

जो आगे थीं और इस लिये कि तुम डर सुनाओ सब बस्तियों के सरदार को¹⁸⁸ और जो कोई सारे जहान में इस के गिर्द हैं और वोह जो आख़िरत पर

بِالْآخِرَةِ يُؤْمِنُونَ بِهِ وَهُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ﴿٩٢﴾ وَمَنْ أَظْلَمُ

ईमान लाते हैं¹⁸⁹ इस किताब पर ईमान लाते हैं और अपनी नमाज़ की हिफ़ाज़त करते हैं और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन

مِّنْ أَفْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ قَالَ أُوحِيَ إِلَيَّ وَلَمْ يُوحَ إِلَيْهِ شَيْءٌ ۗ وَ

जो **अल्लाह** पर झूट बांधे¹⁹⁰ या कहे मुझे वह्य हुई और उसे कुछ वह्य न हुई¹⁹¹ और

مَنْ قَالَ سَأُنزِلُ مِثْلَ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ ۗ وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الظَّالِمُونَ فِي

जो कहे अभी मैं उतारता हूँ ऐसा जैसा खुदा ने उतारा¹⁹² और कभी तुम देखो जिस वक़्त ज़ालिम

182 : उन में से बा'ज को जिस का इज़हार अपनी ख़्वाहिश के मुताबिक़ समझते हो **183** : जो तुम्हारी ख़्वाहिश के ख़िलाफ़ करते हैं जैसे कि

तौरैत के वोह मज़ामीन जिन में सथियेदे आलाम **عَلَى اللَّهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की ना'त व सिफ़त मज़कूर है। **184** : सथियेदे आलाम **عَلَى اللَّهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की ता'लीम

और कुरआने करीम से **185** : या'नी जब वोह उस का जवाब न दे सकें कि वोह किताब किस ने उतारी तो आप फ़रमा दीजिये **अल्लाह** ने

186 : क्यूं कि जब आप ने हुज्जत काइम कर दी और इन्ज़ार व नसीहत निहायत को पहुंचा दी और उन के लिये जाए उज़्र न छोड़ी इस पर

भी वोह बाज न आएँ तो उन्हें उन की बेहूदगी में छोड़ दीजिये, येह कुफ़्फ़ार के हक़ में वईद व तहदीद है। **187** : या'नी कुरआन शरीफ़। **188** :

मक्कए मुकर्रमा है क्यूं कि वोह तमाम ज़मीन वालों का क़िब्ला है। **189** : और क़ियामत व आख़िरत और मरने के बा'द उठने का

यक़ीन रखते हैं और अपने अन्जाम से गा़फ़िल और बे ख़बर नहीं हैं। **190** : और नुबुव्वत का झूटा दा'वा करे। **191** शाने नुज़ूल : येह आयत

मुसैलमा कज़ाब के बारे में नाज़िल हुई जिस ने यमामा अलाक़ए यमन में नुबुव्वत का झूटा दा'वा किया था। क़बीलए बनी हनीफ़ा के चन्द

लोग उस के फ़रेब में आ गए थे, येह कज़ाब ज़मानए ख़िलाफ़ते हज़रते अबू बक्र सिदीक़ में वहशी क़ातिले अमीर हम्ज़ा **رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ** के हाथ

से क़त्ल हुवा। **192** शाने नुज़ूल : येह अब्दुल्लाह बिन अबी सरह क़ातिले वह्य के हक़ में नाज़िल हुई। जब आयत "وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ" (और

बेशक हम ने आदमी को चुनी हुई मिट्टी से बनाया) नाज़िल हुई उस ने इस को लिखा और आख़िर तक पहुंचते पहुंचते पैदाइश इन्सान की

तफ़सील पर मुत्तलअ़ हो कर मुतअज़्जिब हुवा और इस हालत में आयत का आख़िर "فَبَارِكْ لِلَّهِ أَحْسَنَ الْخَالِقِينَ" (तो बड़ी बरकत वाला

है **अल्लाह** सब से बेहतर बनाने वाला) बे इज़्तिथार उस की ज़बान पर जारी हो गया, इस पर उस को येह घमन्ड हुवा कि मुज़्र पर वह्य आने

लगी और मुरतद हो गया येह न समझा कि नूरे वह्य और कुव्वत व हुस्ने कलाम से आयत का आख़िर कलिमा ज़बान पर आ गया इस में

उस की क़ाबिलियत का कोई दख़ल न था जोरे कलाम खुद अपने आख़िर को बता दिया करता है जैसे कभी कोई शाइर नफीस मज़मून पढ़े

वोह मज़मून खुद क़ाफ़िया बता देता है और सुनने वाले शाइर से पहले क़ाफ़िया पढ़ देते हैं उन में ऐसे लोग भी होते हैं जो हरगिज़ वैया शे'र

कहने पर क़ादिर नहीं तो क़ाफ़िया बताना उन की क़ाबिलियत नहीं कलाम की कुव्वत है और यहां तो नूरे वह्य और नूरे नबी से सीने में रोशनी

غَمْرَاتِ النَّوْتِ وَالْمَلِكَةِ بَاسِطُوا أَيْدِيَهُمْ ۖ أَخْرَجُوا أَنْفُسَكُمْ ۖ الْيَوْمَ

मौत की सख्तियों में हैं और फिरिश्ते हाथ फैलाए हुए हैं¹⁹³ कि निकालो अपनी जानें आज

تُجْرُونَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنْتُمْ تَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَكُنْتُمْ

तुम्हें ख़वारी का अज़ाब दिया जाएगा बदला उस का कि **अल्लाह** पर झूट लगाते थे¹⁹⁴ और

عَنْ آيَاتِهِ تَسْتَكْبِرُونَ ۝ ٩٣ ۖ وَلَقَدْ جِئْتُمُونَا فِرَادَىٰ كَمَا خَلَقْنَاكُمْ أَوَّلَ

उस की आयतों से तकबुर करते और बेशक तुम हमारे पास अकेले आए जैसा हम ने तुम्हें पहली बार पैदा किया

مَرَّةٍ ۖ وَتَرَكْتُمْ مَا خَوَّلْنَاكُمْ وَرَاءَ ظُهُورِكُمْ ۖ وَمَا نَرَىٰ مَعَكُمْ شُفَعَاءَكُمُ

था¹⁹⁵ और पीठ पीछे छोड़ आए जो मालो मताअ हम ने तुम्हें दिया था और हम तुम्हारे साथ तुम्हारे उन सिफारिशियों को नहीं देखते

الَّذِينَ زَعَمْتُمْ أَنَّهُمْ فِيكُمْ شُرَكَاءُ ۖ لَقَدْ تَقَطَّعَ بَيْنَكُمْ وَضَلَّ عَنْكُمْ

जिन का तुम अपने में साझा बताते थे¹⁹⁶ बेशक तुम्हारे आपस की डोर कट गई¹⁹⁷ और तुम से गए

مَا كُنْتُمْ تَزْعُمُونَ ۝ ٩٤ ۖ إِنَّ اللَّهَ فَالِقَ الْحَبِّ وَالنَّوَىٰ ۖ يُخْرِجُ الْحَيَّ

जो दा'वे करते थे¹⁹⁸ बेशक **अल्लाह** दाने और गुठली को चीरने वाला है¹⁹⁹ जिन्दा को

مِنَ الْبَيْتِ وَمُخْرِجَ الْبَيْتِ مِنَ الْحَيِّ ۖ ذَلِكُمْ اللَّهُ فَالِقُ ثَوْفِكَوْنٍ ۝ ٩٥

मुर्दा से निकाले²⁰⁰ और मुर्दा को जिन्दा से निकालने वाला²⁰¹ यह है **अल्लाह** तुम कहां औंधे जाते हो²⁰²

فَالِقِ الْإِصْبَاحِ ۖ وَجَعَلَ اللَّيْلَ سَكَنًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ۖ ذَلِكُمْ

तारीकी चाक कर के सुब्द निकालने वाला और उस ने रात को चैन बनाया²⁰³ और सूरज और चांद को हिसाब²⁰⁴ यह

आती थी। चुनान्चे मजलिस शरीफ से जुदा होने और मुरतद हो जाने के बा'द फिर वोह एक जुम्ला भी ऐसा बनाने पर कादिर न हुवा जो नज्मे कुरआनी से मिल सकता, आखिर कार ज़मानए अक्दस ही में कबल फद्हे मक्का फिर इस्लाम से मुशरफ हुवा। 193 : अरवाह कब्ज करने के लिये झिड़कते जाते हैं और कहते जाते हैं 194 : नुबुव्वत और वह्य के झूटे दा'वे कर के और **अल्लाह** के लिये शरीक और बीबी बच्चे बता कर। 195 : न तुम्हारे साथ माल है न जाह न औलाद जिन की महब्वत में तुम उग्र भर गिरिफ्तार रहे न वोह बुत जिन्हें पूजा किये (करते थे) आज उन में से कोई तुम्हारे काम न आया। येह कुफ़्फ़ार से रोचे क्रियामत फरमाया जावेगा। 196 : कि वोह इबादत के हक़दार होने में **अल्लाह** के शरीक हैं। 197 : (مَعَاذَ اللَّهِ) और अ़लाके (तअल्लुकात) टूट गए जमाअत मुन्तशिर हो गई। 198 : तुम्हारे वोह तमाम झूटे दा'वे जो तुम दुन्या में किया करते थे बातिल हो गए। 199 : तौहीद व नुबुव्वत के बयान के बा'द **अल्लाह** तआला ने अपने कमाले कुदरत व इल्मो हिकमत के दलाइल ज़िक्र फरमाए क्यूं कि मक्सूदे आ'ज़म **अल्लाह** سُبْحَانَهِ और उस के तमाम सिफ़ात व अफ़्आल की मा'रिफ़त है और येह जानना कि वोही तमाम चीज़ों का पैदा करने वाला है और जो ऐसा हो वोही मुस्तहिक्के इबादत हो सकता है न कि वोह बुत जिन्हें मुशिरकीन पूजते हैं। खुश्क दाना और गुठली को चीर कर उन से सब्ज़ा और दरख़्त पैदा करना और ऐसी संगलाख़ ज़मीनों में इन के नर्म रेशों को रवां करना जहां आहनी मेख़ भी काम न कर सके उस की कुदरत के कैसे अज़ाइबात हैं। 200 : जानदार सब्जे को बेजान दाने और गुठली से और इन्सान व हैवान को नुफ़्से से और परिन्द को अन्डे से। 201 : जानदार दरख़्त से बेजान गुठली और दाने को, और इन्सान व हैवान से नुफ़्से को और परिन्द से अन्डे को, येह उस के अज़ाइबे कुदरतो हिकमत हैं। 202 : और ऐसे बराहीन काइम होने के बा'द क्यूं ईमान नहीं लाते और मौत के

تَقْدِيرِ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ٩٦) وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمْ النُّجُومَ لِتَهْتَدُوا

साधा (मुकरर किया हुवा) है जबर दस्त जानने वाले का और वोही है जिस ने तुम्हारे लिये तारे बनाए कि इन से राह

بِهَافِي ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ٩٧) قَدْ فَصَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ٩٨)

पाओ खुशकी और तरी के अंधेरो में हम ने निशानियां मुफ़स्सल बयान कर दीं इल्म वालों के लिये

وَهُوَ الَّذِي أَنْشَأَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَمُسْتَوْدَعٌ ٩٩)

और वोही है जिस ने तुम को एक जान से पैदा किया²⁰⁵ फिर कहीं तुम्हें ठहरना है²⁰⁶ और कहीं अमानत रहना²⁰⁷

قَدْ فَصَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَفْقَهُونَ ٩٨) وَهُوَ الَّذِي أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ

बेशक हम ने मुफ़स्सल आयतें बयान कर दीं समझ वालों के लिये और वोही है जिस ने आस्मान से

مَاءً ٩٩) فَأَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نُخْرَجُ

पानी उतारा तो हम ने उस से हर उगने वाली चीज़ निकाली²⁰⁸ तो हम ने उस से निकाली सब्जी जिस में

مِنْهُ حَبًّا مُتَرَاكِبًا وَمِنَ النَّخْلِ مِنْ طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ وَجَنَّاتٍ

से दाने निकालते हैं एक दूसरे पर चढ़े हुए और खजूर के गाभे से पास पास गुच्छे और अंगूर

مِّنْ أَعْنَابٍ وَالزَّيْتُونَ وَالرُّمَّانَ مُشْتَبِهًا وَغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ١٠٠) أَنْظُرُوا

के बाग़ और जैतून और अनार किसी बात में मिलते और किसी बात में अलग उस का

إِلَى شَرَةٍ إِذَا أَثْرَوْا وَيُعِهِ ١٠١) إِنَّ فِي ذَلِكُمْ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ١٠٢)

फल देखो जब फले और उस का पकना बेशक इस में निशानियां हैं ईमान वालों के लिये

وَجَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ وَخَرَقُوا لَهُ بَنِينَ وَبَنَاتٍ بِغَيْرِ

और²⁰⁹ **अल्लुह** का शरीक ठहराया जिन्नों को²¹⁰ हालांकि उसी ने इन को बनाया और उस के लिये बेटे और बेटियां गढ़ लीं

बा'द उठने का यकीन नहीं करते, जो बेजान नुत्फे से जानदार हैवान पैदा करता है उस की कुदरत से मुर्दा को ज़िन्दा करना क्या बर्द है।

203 : कि खल्क इस में चैन पाती है और दिन की तकान व मांदगी को इस्तिराहत से दूर करती है और शब बेदार ज़हिद तन्हाई में अपने रब

की इबादत से चैन पाते हैं। **204** : कि इन के दौरे और सैर (गर्दिश करने) से इबादात व मुआमलात के अवकात मा'लूम हों। **205** : या'नी

हज़रते आदम से। **206** : मां के रेहूम में या ज़मीन के ऊपर **207** : बाप की पुशत में या क़ब्र के अन्दर **208** : पानी एक, और इस से जो चीज़ें

उगाई वोह किस्म किस्म और रंगारंग **209** : बा वुजूदे कि इन दलाइले कुदरत व अज़ाइबे हिकमत और इस इन्'आमो इक्वाम और इन ने'मतों

के पैदा करने और अ़ता फ़रमाने का इक्तिज़ा था कि उस करीम कारसाज़ पर ईमान लाते बजाए इस के बुत परस्तों ने येह सितम किया (जो

आयत में आगे मज़कूर है) कि **210** : कि उन की इताअत कर के बुत परस्त हो गए।

عِلْمٌ سُبْحَانَهُ وَتَعْلَىٰ عَمَّا يُصِفُونَ ﴿١٠﴾ بَدِيعُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ط

जहालत से पाकी और बर तरी है उस को उन की बातों से बे किसी नुमूने के आस्मानों और ज़मीन का बनाने वाला

أَنِّي يَكُونُ لَهُ وِلْدٌ وَلَمْ تَكُنْ لَهُ صَاحِبَةً ط وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ ج

उस के बच्चा कहां से हो हालां कि उस की औरत नहीं²¹¹ और उस ने हर चीज़ पैदा की²¹²

وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١١﴾ ذَلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ خَالِقُ

और वोह सब कुछ जानता है येह है **अल्लाह** तुम्हारा रब²¹³ उस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं हर चीज़ का

كُلِّ شَيْءٍ فَاعْبُدُوهُ ج وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ﴿١٢﴾ لَا تَدْرِكُهُ

बनाने वाला तो उसे पूजो और वोह हर चीज़ पर निगहबान है²¹⁴ आंखें उसे

الْأَبْصَارُ وَهُوَ يُدْرِكُ الْأَبْصَارَ ج وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ ﴿١٣﴾ قَدْ

इहाता नहीं करती²¹⁵ और सब आंखें उस के इहाते में हैं और वोही है निहायत बातिन पूरा ख़बरदार तुम्हारे पास

جَاءَكُمْ بِصَائِرٍ مِّنْ رَبِّكُمْ ج فَمَنْ أَبْصَرَ فَلِنَفْسِهِ ج وَمَنْ عَمِيَ فَعَلَيْهَا ط

आंखें खोलने वाली दलीलें आई तुम्हारे रब की तरफ़ से तो जिस ने देखा तो अपने भले को और जो अन्धा हुवा तो अपने बुरे को

وَمَا أَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيظٍ ﴿١٤﴾ وَكَذَلِكَ نَصْرَفُ الْأَيْتِ وَلِيَقُولُوا

और मैं तुम पर निगहबान नहीं और हम इसी तरह आयतें तरह तरह से बयान करते हैं²¹⁶ और इस लिये कि काफ़िर बोल उठें

211 : और बे औरत औलाद नहीं होती और ज़ौजा उस की शान के लाइक नहीं क्यूं कि कोई शै उस की मिस्ल नहीं। **212** : तो जो है वोह उस की मख्लूक है और मख्लूक औलाद नहीं हो सकती तो किसी मख्लूक को औलाद बताना बातिल है। **213** : जिस की सिफ़ात मज़्ज़ूर हुई और जिस की येह सिफ़ात हों वोही मुस्तहिके इबादत है। **214** : ख़्वाह वाह रिज़क हो या अजल या हम्ल। **215** : **मसाइल** : इद्राक के मा'ना हैं मरई के जवानिब व हुदूद पर वाकिफ़ होना, इसी को इहाता कहते हैं। इद्राक की येही तफ़सीर हज़रते सईद इब्ने मुसय्यब और हज़रते इब्ने अब्बास **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** से मन्कूल है और जम्हूर मुफ़स्सरीन इद्राक की तफ़सीर इहाता से फ़रमाते हैं और इहाता उसी चीज़ का हो सकता है जिस के हुदूद व जिहात हों, **अल्लाह** तआला के लिये हद व जिहत मुहाल है तो उस का इद्राक व इहाता भी ना मुम्किन, येही मज़हब है अहले सुन्नत का। खवारिज व मो'तज़िला वगैरा गुमराह फ़िके इद्राक और रूयत में फ़र्क नहीं करते, इस लिये वोह इस गुमराही में मुब्तला हो गए कि उन्हों ने दीदारे इलाही को मुहाले अक्ली करार दे दिया, बा वुजूद कि नफिये रूयत नफिये इल्म को मुस्तल्ज़म है वरना जैसा कि बारी तआला ब ख़िलाफ़ तमाम मौजूदात के बिना कैफ़ियत व जिहत जाना जा सकता है, ऐसे ही देखा भी जा सकता है, क्यूं कि अगर दूसरी मौजूदात बिगैर कैफ़ियत व जिहत के देखी नहीं जा सकती तो जानी भी नहीं जा सकती। राज़ इस का येह है कि रूयत व दीद के मा'ना येह हैं कि बसर किसी शै को जैसी कि वोह हो वैसा जाने तो जो शै जिहत वाली होगी उस की रूयत व दीद जिहत में होगी और जिस के लिये जिहत न होगी उस की दीद बे जिहत होगी। **दीदारे इलाही** : आख़िरत में **अल्लाह** तआला का दीदार मोमिनीन के लिये अहले सुन्नत का अक्कीदा और कुरआन व हदीस व इज्माए सहाबा व सलफ़े उम्मत के दलाइले कसीरा से साबित है। कुरआने करीम में फ़रमाया : **“رُجُوهُ يُؤَمِّدُ نَاصِرَهُ إِلَىٰ رَبِّهَا نَاطِرَهُ”** (कुछ मुंह उस दिन तरो ताज़ा होंगे अपने रब को देखते) इस से साबित है कि मोमिनीन को रोज़े कियामत उन के रब का दीदार मुयस्सर होगा। इस के इलावा और बहुत आयात और सिहाह की कसीर अहादीस से साबित है, अगर दीदारे इलाही ना मुम्किन होता तो हज़रते मूसा **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** दीदार का सुवाल न फ़रमाते, **“رَبِّ أَرِنِي أَنْظُرْ إِلَيْكَ”** (ऐ रब मेरे ! मुझे अपना दीदार दिखा कि मैं तुझे देखू) इश्आद न करते और उन के जवाब में **“إِنِ اسْتَفْرَغْنَا مِنْكَ فَسَوْفَ تَرَانِي”** (येह पहाड़ अगर अपनी जगह ठहरा रहा तो तू अन्क़रीब मुझे देख लेगा) न फ़रमाया जाता। इन दलाइल से साबित हो गया कि आख़िरत में मोमिनीन के लिये दीदारे इलाही शरअ में साबित है और इस का इन्कार गुमराही। **216** : कि हुज़त लाज़िम हो।

دَرَسْتَ وَلِنَبِيِّنَا لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿١٠٥﴾ اتَّبِعْ مَا أَوْحَىٰ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ ٢

कि तुम तो पढ़े हो और इस लिये कि उसे इल्म वालों पर वाज़ेह कर दें उस पर चलो जो तुम्हें तुम्हारे रब की तरफ़ से वह्य होती है²¹⁷

لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ وَأَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٠٦﴾ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا

उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुश्रिकों से मुंह फेर लो और **अल्लाह** चाहता तो वोह

أَشْرَكُوا ۗ وَمَا جَعَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ حَفِيظًا ۚ وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيلٍ ﴿١٠٧﴾ وَ

शरीक न करते और हम ने तुम्हें उन पर निगहबान नहीं किया और तुम उन पर कड़ोड़े (निगहबान) नहीं और

لَا تَسْبُوا الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ فَيَسْبُوا اللَّهَ عَدُوًّا بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ

उन्हें गाली न दो जिन को वोह **अल्लाह** के सिवा पूजते हैं कि वोह **अल्लाह** की शान में बे अदबी करेंगे ज़ियादती और जहालत से²¹⁸

كَذَلِكَ زَيَّنَّا لِكُلِّ أُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ثُمَّ إِلَىٰ رَأْسِهِمْ مَرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُم

यूँही हम ने हर उम्मत की निगाह में उस के अमल भले कर दिये हैं फिर उन्हें अपने रब की तरफ़ फिरना है और वोह उन्हें बता देगा

بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٠٨﴾ وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَاءَتْهُمْ

जो करते थे और उन्होंने ने **अल्लाह** की क़सम खाई अपने हल्फ़ में पूरी कोशिश से कि अगर उन के पास कोई निशानी

آيَةٌ لِّيَوْمٍ مِّنْ بَہَا ۖ قُلْ إِنَّمَا الْآيَاتُ عِنْدَ اللَّهِ وَمَا يُشْعِرُكُمْ أَنَّهَا إِذَا

आई तो ज़रूर उस पर ईमान लाएंगे तुम फ़रमा दो कि निशानियां तो **अल्लाह** के पास हैं²¹⁹ और तुम्हें²²⁰ क्या ख़बर कि जब

جَاءَتْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٠٩﴾ وَنُقَلِّبُ أَفْئِدَتَهُمْ وَأَبْصَارَهُمْ كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوا

वोह आएँ तो येह ईमान न लाएंगे और हम फेर देते हैं उन के दिलों और आंखों को²²¹ जैसा वोह पहली बार उस पर

بِهِ أَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ وَنَذَرُهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿١١٠﴾ ع

ईमान न लाए थे²²² और उन्हें छोड़ देते हैं कि अपनी सरकशी में भटका करें

217 : और कुफ़र की बेहूदा गोइयों की तरफ़ इल्लिफ़ात न करो। इस में नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की तस्कीने खातिर है कि आप कुफ़र की यावह गोइयों से रन्जीदा न हों, येह उन की बद नसीबी है कि वोह ऐसी वाज़ेह बुरहानों से फ़ाएदा न उठाएँ। 218 : क़तादा का कौल है कि मुसल्मान कुफ़र के बुतों की बुराई किया करते थे ताकि कुफ़र को नसीहत हो और वोह बुत परस्ती के ऐब से बा ख़बर हों मगर उन ना खुदा शनास जाहिलों ने बजाए पन्द पजीर होने के शाने इलाही में बे अदबी के साथ ज़बान खोलनी शुरू की। इस पर येह आयत नाज़िल हुई अगर्चे बुतों को बुरा कहना और उन की हकीकत का इज़हार ताअत व सवाब है लेकिन **अल्लाह** और उस के रसूल صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की शान में कुफ़र की बद गोइयों को रोकने के लिये इस को मन्अ फ़रमाया गया। इन्ने अम्बारी का कौल है कि येह हुक्म अव्वल ज़माने में था जब **अल्लाह** तआला ने इस्लाम को कुव्वत अता फ़रमाई मन्सूख़ हो गया। 219 : वोह जब चाहता है हस्बे इक़तज़ाए हिकमत नाज़िल फ़रमाता है। 220 : ऐ मुसल्मानो ! 221 : हक़ के मानने और देखने से 222 : उन आयत पर जो नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ के दस्ते अक्दस पर जाहिर हुई थीं मिस्ल शक्कुल क़मर वगैरा मो'जिज़ाते बाहिरात के।

وَلَوْ أَنَّنَا لَنَأْتِيَهُمُ الْمَلَايِكَةُ وَكَلِمَهُمُ الْمَوْتَىٰ وَحَشَرْنَا عَلَيْهِمْ

और अगर हम उन की तरफ़ फ़िरिश्ते उतारते²²³ और उन से मुर्दे बातें करते और हम हर चीज़

كُلِّ شَيْءٍ قَبْلًا مَا كَانُوا يَوْمِنَا إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ

उन के सामने उठा लाते जब भी वोह ईमान लाने वाले न थे²²⁴ मगर येह कि खुदा चाहता²²⁵ लेकिन उन में बहुत

يَجْهَلُونَ ۝ وَكَذَلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَيْطِينِ الْإِنْسِ

निरे जाहिल हैं²²⁶ और इसी तरह हम ने हर नबी के दुश्मन किये हैं आदमियों

وَالْجِنِّ يُوحِي بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُورًا ۗ وَلَوْ

और जिनों में के शैतान कि उन में एक दूसरे पर खुफ़या डालता है बनावट की बात²²⁷ धोके को और तुम्हारा

شَاءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوهُ فَذُرَّهُمْ وَمَا يَقْتُرُونَ ۝ وَلِتَصْغَىٰ إِلَيْهِ

रब चाहता तो वोह ऐसा न करते²²⁸ तो उन्हें उन की बनावटों पर छोड़ दो²²⁹ और इस लिये कि उस²³⁰ की तरफ़

أَفْدَاةَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ وَلِيَرَوْهُ وَليَقْتَرِفُوا مَا هُمْ

उन के दिल झुकें जिन्हें आखिरत पर ईमान नहीं और उसे पसन्द करें और गुनाह कमाएं जो उन्हें

مُقْتَرِفُونَ ۝ أَفَعَيَّرَ اللَّهُ أَبْتِغَىٰ حَكْمًا وَهُوَ الَّذِي أَنْزَلَ إِلَيْكُمُ

गुनाह कमाना है तो क्या **अल्लाह** के सिवा मैं किसी और का फ़ैसला चाहूं और वोही है जिस ने तुम्हारी तरफ़

الْكِتَابَ مُفَصَّلًا ۗ وَالَّذِينَ آتَيْنَهُمُ الْكِتَابَ يَعْلَمُونَ أَنَّهُ مُنَزَّلٌ مِّنْ

मुफ़्सल किताब उतारी²³¹ और जिन को हम ने किताब दी वोह जानते हैं कि येह तेरे रब की तरफ़ से

223 शाने नुजूल : इब्ने जरिर का कौल है कि येह आयत इस्तिहज़ा करने वाले कुरैश की शान में नाज़िल हुई जिन्हों ने सथियदे आलम **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** से कहा था कि ऐ मुहम्मद ! **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** आप हमारे मुर्दों को उठा लाइये हम उन से दरयाफ़्त कर लें कि आप जो फ़रमाते हैं येह हक़ है या नहीं और हमें फ़िरिश्ते दिखाइये जो आप के रसूल होने की गवाही दें या **अल्लाह** और फ़िरिश्तों को हमारे सामने लाइये । इस के जवाब में येह आयते करीमा नाज़िल हुई । **224** : वोह अहले शक़ावत हैं । **225** : उस की मशिय्यत जो होती है वोही होता है जो उस के इल्म में अहले सआदत हैं वोह ईमान से मुशरफ़ होते हैं । **226** : नहीं जानते कि येह लोग वोह निशानियां बल्कि उस से ज़ियादा देख कर भी ईमान लाने वाले नहीं । **227** : या'नी वस्वसे और फ़रेब की बातें इग़्वा करने (बहकाने) के लिये । **228** : लेकिन **अल्लाह** तआला अपने बन्दों में से जिसे चाहता है इम्तिहान में डालता है ताकि उस के मेहनत पर साबिर रहने से ज़ाहिर हो जाए कि येह जज़ील सवाब पाने वाला है । **229** : **अल्लाह** उन्हें बदला देगा, रुस्वा करेगा और आप की मदद फ़रमाएगा । **230** : बनावट की बात **231** : या'नी कुरआन शरीफ़ जिस में अम्र व नही, वा'दा व वईद और हक़ व बातिल का फ़ैसला और मेरे सिद्क की शहादत और तुम्हारे इफ़्तारा का बयान है । **शाने नुजूल** : सथियदे आलम **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** से मुशिरकीन कहा करते थे कि आप हमारे और अपने दरमियान एक हक़म मुकर्र कीजिये । उन के जवाब में येह आयत नाज़िल हुई ।

رَبِّكَ بِالْحَقِّ فَلَاتُكُونَنَّ مِنَ الْمُسْتَرِينَ ۝ (١١٣) وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ

सच उतरा है²³² तो ऐ सुनने वाले तू हरगिज शक वालों में न हो और पूरी है तेरे रब की बात

صِدْقًا وَعَدْلًا ۗ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَتِهِ ۗ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ (١١٥) وَإِنْ

सच और इन्साफ़ में उस की बातों का कोई बदलने वाला नहीं²³³ और वोही है सुनता जानता और ऐ सुनने

تُطِعْ أَكْثَرَ مَنْ فِي الْأَرْضِ يُضِلُّوكَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۗ إِنْ يَتَّبِعُونَ

वाले ज़मीन में अक्सर वोह हैं कि तू उन के कहे पर चले तो तुझे **अल्लाह** की राह से बहका दें वोह सिर्फ़ गुमान के

إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ۝ (١١٦) إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ مَنْ يَضِلُّ

पीछे है²³⁴ और निरी अटकलें [फुजूल अन्दाजे] दौड़ाते है²³⁵ तेरा रब खूब जानता है कि कौन बहका

عَنْ سَبِيلِهِ ۗ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ۝ (١١٧) فَكُلُوا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللَّهِ

उस की राह से और वोह खूब जानता है हिदायत वालों को तो खाओ उस में से जिस पर **अल्लाह** का नाम

عَلَيْهِ إِنْ كُنْتُمْ بِآيَاتِهِ مُؤْمِنِينَ ۝ (١١٨) وَمَالِكُمْ أَلا تَأْكُلُوا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ

लिया गया²³⁶ अगर तुम उस की आयतें मानते हो और तुम्हें क्या हुवा कि उस में से न खाओ जिस²³⁷

اللَّهِ عَلَيْهِ وَقَدْ فَصَّلَ لَكُمْ مَا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ إِلَّا مَا اضْطُرِرْتُمْ إِلَيْهِ ۗ

पर **अल्लाह** का नाम लिया गया वोह तो तुम से मुफ़्स्सल बयान कर चुका जो कुछ तुम पर ह़राम हुवा²³⁸ मगर जब तुम्हें उस से मजबूरी हो²³⁹

وَإِنَّ كَثِيرًا لَيُضِلُّونَ بِأَهْوَاءِهِمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ

और बेशक बहुतेरे अपनी ख़्वाहिशों से गुमराह करते हैं बे जाने बेशक तेरा रब हद से बढ़ने

232 : क्यूं कि उन के पास इस की दलीलें हैं । 233 : न कोई उस की कृपा का तब्दील करने वाला न हुक्म का रद करने वाला न उस का वा'दा

ख़िलाफ़ हो सके । बा'ज़ मुफ़स्सरीन ने फ़रमाया कि कलाम जब ताम है तो वोह काबिले नक्स व तग़यीर नहीं और वोह क्रियामत तक तहरीफ़

व तग़यीर से महफूज़ है । बा'ज़ मुफ़स्सरीन फ़रमाते हैं : मा'ना येह हैं कि किसी की कुदरत नहीं कि कुरआने पाक की तहरीफ़ कर सके क्यूं कि

अल्लाह तआला इस की हिफ़ाज़त का ज़ामिन है । (تفسير الرازي) 234 : अपने जाहिल और गुमराह बाप दादा की तक्लीद करते हैं, बसीरत व

हक़ शनासी से महरूम हैं । 235 : कि येह हलाल है येह ह़राम और अटकल से कोई चीज़ हलाल ह़राम नहीं होती जिसे **अल्लाह** और उस

के रसूल ने हलाल किया वोह हलाल और जिसे ह़राम किया वोह ह़राम । 236 : या'नी जो **अल्लाह** के नाम पर ज़ब्द किया गया न वोह

जो अपनी मौत मरा या बुतों के नाम पर ज़ब्द किया गया वोह ह़राम है, हिल्लत **अल्लाह** के नाम पर ज़ब्द होने से मुतअल्लिक है, येह

मुशिरकीन के उस ए'तिराज़ का जवाब है कि जो उन्होंने ने मुसल्मानों पर किया था कि तुम अपना क़त्ल किया हुवा तो खाते हो और **अल्लाह**

का मारा हुवा या'नी जो अपनी मौत मरे उस को ह़राम जानते हो । 237 : ज़बीहा 238 मस्अला : इस से साबित हुवा कि ह़राम चीज़ों का

मुफ़स्सल ज़िक्र होता है और सुबूते हुरमत के लिये हुक्मे हुरमत दरकार है और जिस चीज़ पर शरीअत में हुरमत (ह़राम होने) का हुक्म न हो

वोह मुबाह है । 239 : तो इन्दल इज़्तिरार क़दरे ज़रूरत रखा है । (या'नी शदीद मजबूरी के वक़्त ब क़दरे ज़रूरत जाइज़ है)

بِالْمُعْتَرِينَ ١١٩ ﴿۱۱۹﴾ وَذَرُّوا ظَاهِرَ الْأَثَمِ وَبَاطِنَهُ ۗ إِنَّ الْزَيْنَ

वालों को खूब जानता है और छोड़ दो खुला और छुपा गुनाह वोह जो

يَكْسِبُونَ الْأَثَمَ سَيَجْزُونَ بِمَا كَانُوا يَقْتَرِفُونَ ﴿۱۲۰﴾ وَلَا تَأْكُلُوا مِمَّا

गुनाह कमाते हैं अन्करीब अपनी कमाई की सज़ा पाएंगे और उसे न खाओ जिस

لَمْ يُذْكَرْ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَإِنَّهُ لَفِسْقٌ ۗ وَإِنَّ الشَّيْطَانَ لِيُوحِيَ إِلَىٰ

पर **अल्लाह** का नाम न लिया गया²⁴⁰ और वोह बेशक हुक्म उदूली है और बेशक शैतान अपने दोस्तों के

أُولِيئِهِمْ لِيُجَادِلُوكُمْ وَإِنْ أَطَعْتُمُوهُمْ إِنَّكُمْ لَمُشْرِكُونَ ﴿۱۲۱﴾ أَوْ مَنْ

दिलों में डालते हैं कि तुम से झगड़ें और अगर तुम उन का कहना मानो²⁴¹ तो उस वक़्त तुम मुश्रिक हो²⁴² और क्या

كَانَ مَيِّتًا فَاحْيَيْنَاهُ ۗ وَجَعَلْنَا لَهُ نُورًا يَشِيءُ بِهِ فِي النَّاسِ كَسَنُ

वोह कि मुर्दा था तो हम ने उसे ज़िन्दा किया²⁴³ और उस के लिये एक नूर कर दिया²⁴⁴ जिस से लोगों में चलता है²⁴⁵ वोह उस

مَثَلُهُ فِي الظُّلُمَاتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ مِّنْهَا ۗ كَذَلِكَ زُيِّنَ لِلْكَافِرِينَ

जैसा हो जाएगा जो अंधेरियों में है²⁴⁶ उन से निकलने वाला नहीं यूँही काफ़िरों की आंख में उन के

240 : वक़्ते ज़ब्द न तहक़ीकन न तक्दीरन, ख़्वाह इस तरह कि वोह जानवर अपनी मौत मर गया हो या इस तरह कि उस को बिग़ैर तस्मिया के या ग़ैरे खुदा के नाम पर ज़ब्द किया गया हो येह सब ह़राम हैं लेकिन जहां मुसलमान ज़ब्द करने वाला वक़्ते ज़ब्द **بِسْمِ اللَّهِ الْأَكْبَرِ** कहना भूल गया वोह ज़ब्द जाइज़ है वहां ज़िक्र तक्दीरी है जैसा कि हदीस शरीफ में बारिद हुवा। **241** : और **अल्लाह** के ह़राम किये हुए को हलाल जानो **242** : क्यूं कि दीन में हुक्मे इलाही को छोड़ना और दूसरे के हुक्म को मानना **अल्लाह** के सिवा और को हाकिम करार देना शिर्क है।

243 : मुर्दा से काफ़िर और ज़िन्दा से मोमिन मुराद है क्यूं कि कुफ़्र कुलूब के लिये मौत है और ईमान हयात। **244** : नूर से ईमान मुराद है जिस की बदौलत आदमी कुफ़्र की तारीकियों से नजात पाता है। क़तादा का कौल है कि नूर से किताबुल्लाह या'नी कुरआन मुराद है।

245 : और बीनाई हासिल कर के राहे हक़ का इम्तियाज़ कर लेता है। **246** : कुफ़्र व जहल व तीरह बातिनी की येह एक मिसाल है जिस में मोमिन व काफ़िर का हाल बयान फ़रमाया गया है कि हिदायत पाने वाला मोमिन उस मुर्दे की तरह है जिस ने ज़िन्दगानी पाई और उस को नूर मिला जिस से वोह मक़सूद की राह पाता है और काफ़िर उस की मिस्ल है जो तरह तरह की अंधेरियों में गिरिफ़तार हुवा और उन से निकल न सके हमेशा हैरत में मुब्तला रहे, येह दोनों मिसालें हर मोमिन व काफ़िर के लिये आ़ाम हैं अगचें बकौल हज़रते इब्ने अब्बास **رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا** इन का शाने नुज़ूल येह है कि अबू जहल ने एक रोज़ सथियदे आ़लम **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** पर कोई नजिस चीज़ फेंकी थी उस रोज़ हज़रते अमीर हम्ज़ा **رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ** शिकार को गए हुए थे जिस वक़्त वोह हाथ में कमान लिये हुए शिकार से वापस आए तो उन्हें इस वाकिए की ख़बर दी गई, गो अभी तक वोह ईमान से मुशरफ़ न हुए थे मगर येह ख़बर सुन कर उन को निहायत तैश आया वोह अबू जहल पर चढ़ गए और उस को कमान से मारने लगे और अबू जहल आजिजी व खुशामद करने लगा और कहने लगा ऐ अबू या'ला ! (हज़रत अमीर हम्ज़ा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** की कुन्यत है) क्या आप ने नहीं देखा कि मुहम्मद (मुस्तफ़ा **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ**) कैसा दीन लाए और उन्होंने हमारे मा'बूदों को बुरा कहा और हमारे बाप दादा की मुख़ालफ़त की और हमें बद अक्ल बताया, इस पर हज़रत अमीर हम्ज़ा ने फ़रमाया : तुम्हारे बराबर बद अक्ल कौन है कि **अल्लाह** को छोड़ कर पथरों को पूजते हो, मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद मुस्तफ़ा **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** **अल्लाह** के रसूल हैं, उसी वक़्त हज़रत अमीर हम्ज़ा इस्लाम ले आए। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई तो हज़रत अमीर हम्ज़ा का हाल उस के मुशाबेह है जो मुर्दा था ईमान न रखता था **अल्लाह** तआला ने उस को ज़िन्दा किया और नूरे बातिन अता फ़रमाया और अबू जहल की शान येही है कि वोह कुफ़्र व जहल की तारीकियों में गिरिफ़तार है और

مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢٢﴾ وَكَذَلِكَ جَعَلْنَا فِي كُلِّ قَرْيَةٍ أَكْبَرًا مُّجْرِمِيهَا

आ'माल भले कर दिये गए हैं और इसी तरह हम ने हर बस्ती में उस के मुजरिमों के सर्गने किये

لِيَكْرَهُوا فِيهَا ۖ وَمَا يَكْرَهُونَ إِلَّا بِأَنْفُسِهِمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿١٢٣﴾ وَإِذَا

कि उस में दाउं खेलें²⁴⁷ और दाउं नहीं खेलते मगर अपनी जानों पर और उन्हें शुक्र नहीं²⁴⁸ और जब

جَاءَتْهُمْ آيَةٌ قَالُوا لَنْ نُؤْمِنَ حَتَّى نُؤْتَىٰ مِثْلَ مَا أُوتِيَ رُسُلَ اللَّهِ ۗ

उन के पास कोई निशानी आए कहते हैं हम हरगिज़ ईमान न लाएंगे जब तक हमें भी वैसा ही न मिले जैसा **अल्लाह** के रसूलों को मिला²⁴⁹

اللَّهُ أَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهُ ۗ سَيُصِيبُ الَّذِينَ أَجْرَمُوا صَغَارٌ

अल्लाह खूब जानता है जहां अपनी रिसालत रखे²⁵⁰ अन्करीब मुजरिमों को **अल्लाह**

عِنْدَ اللَّهِ وَعَذَابٌ شَدِيدٌ بِمَا كَانُوا يَكْرَهُونَ ﴿١٢٤﴾ فَمَنْ يُرِدِ اللَّهُ

के यहां ज़िल्लत पहुंचेगी और सख़्त अज़ाब बदला उन के मक्र का और जिसे **अल्लाह**

أَنْ يَهْدِيَهُ يَشْرَحْ صَدْرَهُ لِلْإِسْلَامِ ۗ وَمَنْ يُرِدْ أَنْ يُضِلَّهُ يَجْعَلْ

राह दिखाना चाहे उस का सीना इस्लाम के लिये खोल देता है²⁵¹ और जिसे गुमराह करना चाहे उस का

صَدْرَهُ ضَيْقًا حَرَجًا ۗ كَانَّمَا يَصْعَدُ فِي السَّمَاءِ ۗ كَذَلِكَ يَجْعَلُ

सीना तंग खूब रुका हुवा कर देता है²⁵² गोया किसी की ज़बर दस्ती से आस्मान पर चढ़ रहा है **अल्लाह** यूँही

اللَّهُ الرَّجْسَ عَلَى الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٢٥﴾ وَهَذَا صِرَاطُ رَبِّكَ

अज़ाब डालता है ईमान न लाने वालों को और येह²⁵³ तुम्हारे रब की सीधी

مُسْتَقِيمًا ۗ قَدْ فَصَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَذَّكَّرُونَ ﴿١٢٦﴾ لَهُمْ دَارُ السَّلَامِ

राह है हम ने आयतें मुफ़स्सल बयान कर दीं नसीहत मानने वालों के लिये उन के लिये सलामती का घर है

247 : और तरह तरह के हीलों और फ़रेबों और मक्कारियों से लोगों को बहकाते और बातिल को रवाज देने की कोशिश करते हैं । 248 : कि इस का वबाल उन्हीं पर पड़ता है । 249 : या'नी जब तक हमारे पास वह्य न आए और हमें नबी न बनाया जाए । शाने नुजूल : वलीद बिन मुगीरा ने कहा था कि अगर नुबुव्वत हक़ हो तो इस का ज़ियादा मुस्तहिक़ में हूँ क्यूँ कि मेरी उम्र सथियदे आलम (صلى الله عليه وسلم) से ज़ियादा है और माल भी, इस पर येह आयत नाज़िल हुई । 250 : या'नी **अल्लाह** जानता है कि नुबुव्वत की अहलिय्यत और इस का इस्तहकाक़ किस को है किस को नहीं, उम्र व माल से कोई मुस्तहिक़े नुबुव्वत नहीं हो सकता, येह नुबुव्वत के तलब गार तो हसद, मक्र, बद अहदी वगैरा कबाएह अफ़आल और रज़ाइल ख़िसाल में मुब्तला हैं, येह कहां और नुबुव्वत का मन्सबे आली कहां । 251 : उस को ईमान की तौफ़ीक़ देता है और उस के दिल में रोशनी पैदा करता है । 252 : कि उस में इल्म और दलाइले तौहीद व ईमान की गुन्जाइश न हो तो उस की ऐसी हालत होती है कि जब उस को ईमान की दा'वत दी जाती है और इस्लाम की तरफ़ बुलाया जाता है तो वोह उस पर निहायत शाक़ होता है और उस को बहुत दुश्वार मा'लूम होता है । 253 : दीने इस्लाम

عِنْدَ رَبِّهِمْ وَهُوَ وَلِيُّهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢٤﴾ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ

अपने रब के यहां और वोह उन का मौला है येह उन के कामों का फल है और जिस दिन उन सब को उठाएगा

جَمِيعًا ۚ يَعْشَرُ الْجِنِّ قَدِ اسْتَكْثَرْتُمْ مِنَ الْإِنْسِ ۚ وَقَالَ

और फ़रमाएगा ऐ जिन् के गुरौह तुम ने बहुत आदमी घेर लिये²⁵⁴ और उन के

أُولَئِهِمْ مِنَ الْإِنْسِ رَبَّنَا اسْتَمَعَ بَعْضُنَا بِبَعْضٍ وَبَلَّغْنَا آجَلَنَا

दोस्त आदमी अर्ज करेगे ऐ हमारे रब हम में एक ने दूसरे से फ़ाएदा उठाया²⁵⁵ और हम अपनी उस मीआद को पहुंच गए

الَّذِي أَجَلْتَنَا ۚ قَالَ النَّارُ مَثْوَاكُمْ خُلْدًا ۖ فِيهَا إِلَّا مَا شَاءَ

जो तू ने हमारे लिये मुकरर फ़रमाई थी²⁵⁶ फ़रमाएगा आग तुम्हारा ठिकाना है हमेशा इस में रहो मगर जिसे खुदा

اللَّهُ ۚ إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿١٢٨﴾ وَكَذَلِكَ نُؤَيِّبُ بَعْضَ الظَّالِمِينَ

चाहे²⁵⁷ ऐ महबूब बेशक तुम्हारा रब हिकमत वाला इल्म वाला है और यूंही हम ज़ालिमों में एक को दूसरे

بَعْضًا بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿١٢٩﴾ يَعْشَرُ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ أَلَمْ يَأْتِكُمْ

पर मुसल्लत करते हैं बदला उन के किये का²⁵⁸ ऐ जिन्नों और आदमियों के गुरौह क्या तुम्हारे पास

رَسُولٌ مِّنْكُمْ يَقْضُونَ عَلَيْكُمْ أَيْتِي وَيُنذِرُوكُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ

तुम में के रसूल न आए थे तुम पर मेरी आयतें पढ़ते और तुम्हें येह दिन²⁵⁹ देखने से

هَذَا ۚ قَالُوا شَهِدْنَا عَلَىٰ أَنفُسِنَا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا وَشَهِدُوا

डराते²⁶⁰ कहेगे हम ने अपनी जानों पर गवाही दी²⁶¹ और उन्हें दुन्या की ज़िन्दगी ने फ़रेब दिया और खुद

عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ أَنَّهُمْ كَانُوا كَافِرِينَ ﴿١٣٠﴾ ذَلِكَ أَن لَّمْ يَكُنِ رَبُّكَ مُهْلِكَ

अपनी जानों पर गवाही देगे कि वोह काफ़िर थे²⁶² येह²⁶³ इस लिये कि तेरा रब बस्तियों को²⁶⁴

254 : उन को बहकाया और इग्वा किया। 255 : इस तरह कि इन्सानों ने शहवात व मआसी में उन से मदद पाई और जिन्नों ने इन्सानों को अपना मुतीअ बनाया आखिर कार इस का नतीजा पाया। 256 : वक्त गुजर गया क़ियामत का दिन आ गया हस्तो नदामत बाकी रह गई। 257 : हज़रते इब्ने अब्बास رضي الله عنهما ने फ़रमाया कि येह इस्तिस्ना उस कौम की तरफ़ राजेअ है जिस की निस्वत इल्मे इलाही में है कि वोह इस्लाम लाएंगे और नबिये करीम صلی الله عليه وسلم की तस्दीक करेगे और जहन्नम से निकाले जाएंगे।

258 : हज़रते इब्ने अब्बास رضي الله عنهما ने फ़रमाया कि **al-nalus** जब किसी कौम की भलाई चाहता है तो अच्छों को उन पर मुसल्लत करता है बुराई चाहता है तो बुरों को, इस से येह नतीजा बरआमद होता है कि जो कौम ज़ालिम होती है उस पर ज़ालिम बादशाह मुसल्लत किया जाता है तो जो उस ज़ालिम के पन्ने जुल्म से रिहाई चाहें उन्हें चाहिये कि जुल्म तर्क करें। 259 : या'नी रोज़े क़ियामत

260 : और अज़ाबे इलाही का खौफ़ दिलाते 261 : काफ़िर जिन् और इन्सान इक्कार करेगे कि रसूल उन के पास आए और उन्होंने ने ज़बानी पयाम पहुंचाए और इस दिन के पेश आने वाले हालत का खौफ़ दिलाया लेकिन काफ़िरों ने उन की तक्ज़ीब की और उन पर इमान न लाए, कुफ़र का येह इक्कार उस वक्त होगा जब कि उन के आ'जा व जवारेह उन के शिक व कुफ़ की शहादतें देगे।

262 : येह इक्कार उन के गुरौह में था 263 : येह इक्कार उन के गुरौह में था 264 : येह इक्कार उन के गुरौह में था

265 : येह इक्कार उन के गुरौह में था 266 : येह इक्कार उन के गुरौह में था 267 : येह इक्कार उन के गुरौह में था

268 : येह इक्कार उन के गुरौह में था 269 : येह इक्कार उन के गुरौह में था 270 : येह इक्कार उन के गुरौह में था

الْقُرَىٰ يَظْلِمُونَ ۖ وَأَهْلَهَا غَفْلُونَ ﴿١٣١﴾ وَلِكُلِّ دَرَجَةٍ مِّمَّا عَمِلُوا ۖ وَمَا

जुल्म से तबाह नहीं करता कि उन के लोग बे खबर हों²⁶⁵ और हर एक के लिये²⁶⁶ उन के कामों से दरजे हैं और

رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُونَ ۖ وَرَبُّكَ الْغَنِيُّ ذُو الرَّحْمَةِ ۖ إِنَّ يَسْأَلُ

तेरा रब उन के आ'माल से बे खबर नहीं और ऐ महबूब तुम्हारा रब बे परवा है रहमत वाला ऐ लोगो वोह चाहे तो

يُذْهِبْكُمْ وَيَسْتَخْلِفْ مِنْ بَعْدِكُمْ مَا يَشَاءُ كَمَا أَنْشَأَكُمْ مِنْ ذُرِّيَّتِهِ

तुम्हें ले जाए²⁶⁷ और जिसे चाहे तुम्हारी जगह लाए जैसे तुम्हें औरों

قَوْمٍ آخَرِينَ ۖ إِنَّ مَا تُوْعَدُونَ لَأْتٍ ۖ وَمَا أَنْتُمْ بِبُعْجَرِينَ ﴿١٣٢﴾

की औलाद से पैदा किया²⁶⁸ बेशक जिस का तुम्हें वा'दा दिया जाता है²⁶⁹ ज़रूर आने वाली है और तुम थका नहीं सकते

قُلْ يَقَوْمِ اعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنِّي عَامِلٌ ۖ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۚ مَنْ

तुम फरमाओ ऐ मेरी कौम तुम अपनी जगह पर काम किये जाओ मैं अपना काम करता हूँ तो अब जानना चाहते हो किस

تَكُونُ لَهُ عَاقِبَةُ الدَّارِ ۖ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ﴿١٣٥﴾ وَجَعَلُوا لِلَّهِ مِمَّا

का रहता है आखिरत का घर बेशक ज़ालिम फ़लाह नहीं पाते और²⁷⁰ **اللَّهُ** ने जो

ذَرَأَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْأَنْعَامِ نَصِيبًا فَقَالُوا هَذَا لِلَّهِ بِزَعْمِهِمْ وَهَذَا

खेती और मवेशी पैदा किये उन में उसे एक हिस्सेदार ठहराया तो बोले येह **اللَّهُ** का है उन के खयाल में और येह

لِشْرَكَائِنَا ۚ فَمَا كَانَ لِشُرَكَائِهِمْ فَلَا يَصِلُ إِلَى اللَّهِ ۚ وَمَا كَانَ لِلَّهِ

हमारे शरीकों का²⁷¹ तो वोह जो उन के शरीकों का है वोह तो खुदा को नहीं पहुंचता और जो खुदा का है

262 : कियामत का दिन बहुत तवील होगा और उस में हालात बहुत मुख्तलिफ पेश आएंगे । जब कुफ़ार मोमिनीन के इन्'आमो इक़ाम और इज़्ज़तो मन्ज़िलत को देखेंगे तो अपने कुफ़्रो शिर्क से मुन्किर हो जाएंगे और इस खयाल से कि शायद मुकर जाने से कुछ काम बने येह कहेंगे "وَاللَّهُ رَبَّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِينَ" या'नी खुदा की कसम ! हम मुशिरक न थे, उस वक्त उन के मूहों पर मोहरें लगा दी जाएंगी और उन के आ'जा उन के कुफ़्रो शिर्क की गवाही देंगे इसी की निस्बत इस आयत में इशाद हुवा : "وَفَهَذَا عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ أَنَّهُمْ كَانُوا كٰفِرِينَ" 263 : या'नी रसूलों की बि'सत 264 : उन की मा'सियत और 265 : बल्कि रसूल भेजे जाते हैं वोह उन्हें हिदायतें फ़रमाते हैं हुज्जतें काइम करते हैं इस पर भी वोह सरकशी करते हैं तब हलाक किये जाते हैं । 266 : ख़्वाह वोह नेक हो या बद, नेकी और बदी के दरजे हैं उन्ही के मुताबिक़ सवाब व अज़ाब होगा । 267 : या'नी हलाक कर दे 268 : और उन का जा नशीन बनाया । 269 : वोह चीज़ ख़्वाह कियामत हो या मरने के बा'द उठना या हि़साब या सवाब व अज़ाब । 270 : ज़मानए जाहिलियत में मुशिरकीन का तरीका था कि वोह अपनी खेतियों और दरख़्तों के फलों और चौपायों और तमाम मालों में से एक हिस्सा तो **اللَّهُ** का मुकरर करते थे और एक हिस्सा बुतों का तो जो हिस्सा **اللَّهُ** के लिये मुकरर करते थे उस को तो मेहमानों और मिस्कीनों पर सर्फ़ कर देते थे और जो बुतों के लिये मुकरर करते थे वोह ख़ास उन पर और उन के खादिमों पर सर्फ़ करते, जो हिस्सा **اللَّهُ** के लिये मुकरर करते अगर उस में से कुछ बुतों वाले हिस्से में मिल जाता तो उसे छोड़ देते और अगर बुतों वाले हिस्से में से कुछ इस में मिलता तो उस को निकाल कर फिर बुतों ही के हिस्से में शामिल कर देते, इस आयत में उन की इस जहालत और बद अक्ली का ज़िक़्र फ़रमा कर उन पर तम्बीह फ़रमाई गई । 271 : या'नी बुतों का ।

فَهُوَ يَصِلُ إِلَى شُرَكَائِهِمْ ۖ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ﴿١٣٦﴾ وَكَذَلِكَ زَيَّنَ

वोह उन के शरीकों को पहुंचता है क्या ही बुरा हुकम लगाते हैं²⁷² और यू ही बहुत मुशिकों

لِكَثِيرٍ مِّنَ الشُّرَكِيِّنَ قَتَلَ أَوْلَادِهِمْ شُرَكَاءُ وَهُمْ لَيُرَدُّوهُمْ

की निगाह में उन के शरीकों ने औलाद का क़त्ल भला कर दिखाया है²⁷³ कि उन्हें हलाक करें

وَلِيَلْبِسُوا عَلَيْهِمْ دِينَهُمْ ۖ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا فَعَلُوهُ فَذَرْهُمْ وَمَا

और उन का दीन उन पर मुशतबह कर दें²⁷⁴ और **अल्लाह** चाहता तो ऐसा न करते तो तुम उन्हें छोड़ दो वोह हैं और

يَفْتَرُونَ ﴿١٣٧﴾ وَقَالُوا هَذِهِ أَنْعَامٌ وَحَرْتُ حِجْرًا لَا يَطْعَمُهَا إِلَّا مَنْ

उन के इफ़्तिरा और बोले²⁷⁵ यह मवेशी और खेती रोकी हुई²⁷⁶ है इसे बोही खाए जिसे हम

نَشَاءُ بِزُعْبِهِمْ وَأَنْعَامٌ حُرِّمَتْ ظُهُورُهَا وَأَنْعَامٌ لَا يَذْكُرُونَ أَسْمَ

चाहें अपने झूटे खयाल से²⁷⁷ और कुछ मवेशी हैं जिन पर चढ़ना हराम ठहराया²⁷⁸ और कुछ मवेशी के जब्द पर

اللَّهِ عَلَيْهَا افْتَرَاءٌ عَلَيْهِ ۖ سَيَجْزِيهِمْ بِمَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿١٣٨﴾

अल्लाह का नाम नहीं लेते²⁷⁹ यह सब **अल्लाह** पर झूट बांधना है अन्करीब वोह उन्हें बदला देगा उन के इफ़्तिराओं का

وَقَالُوا مَا فِي بُطُونِ هَذِهِ الْأَنْعَامِ خَالِصَةٌ لِلَّذِينَ كُفِرْنَا وَمَحْرَمٌ عَلَى

और बोले जो उन मवेशी के पेट में है वोह निरा [खालिस] हमारे मर्दों का है²⁸⁰ और हमारी औरतों पर

أَزْوَاجِنَا ۚ وَإِنْ يَكُنْ مَيْتَةً فَهُمْ فِيهِ شُرَكَاءُ ۖ سَيَجْزِيهِمْ

हराम है और मरा हुवा निकले तो वोह सब²⁸¹ उस में शरीक हैं करीब है कि **अल्लाह** उन्हें उन की

272 : और इन्तिहा दरजे के जहल में गिरिफ़्तार हैं, ख़ालिके मुन्डम के इज़्ज़तो जलाल की उन्हें ज़रा भी मा'रिफ़त नहीं और फ़सादे अक्ल इस हद तक पहुंच गया कि उन्होंने ने बेजान बुतों पथ्थर की तस्वीरों को कारसाजे आलम के बराबर कर दिया और जैसा उस के लिये हिस्सा मुकर्रर किया ऐसा ही बुतों के लिये भी किया बेशक यह बहुत ही बुरा फ़ै'ल और इन्तिहा का जहल और अज़ीम ख़ता व ज़लाल (गुमराही) है, इस के बा'द उन के जहल और ज़लालत की एक और हालत जिक्क़ फ़रमाई जाती है। **273** : यहां शरीकों से मुराद वोह शयातीन हैं जिन की इत्ताअत के शौक में मुशिकीन **अल्लाह** तआला की ना फ़रमानी और उस की मा'सियत गवारा करते थे और ऐसे क़बाएह अफ़आल और जाहिलाना अफ़आल के मुरतकिब होते थे जिन को अक्ले सहीह कभी गवारा न कर सके और जिन की क़बाहत में अदना समझ के आदमी को भी तरदुद न हो, बुत परस्ती की शामत से वोह ऐसे फ़सादे अक्ल में मुब्तला हुए कि हैवानों से बदतर हो गए और औलाद जिस के साथ हर जानदार को फ़ितूरतन महबूब होती है शयातीन के इत्तिबाअ में उस का बे गुनाह खून करना उन्होंने ने गवारा किया और इस को अच्छा समझने लगे।

274 : हज़रते इब्ने अब्बास **رضي الله عنهما** ने फ़रमाया कि यह लोग पहले हज़रते इस्माईल **عليه السلام** के दीन पर थे शयातीन ने उन को इग़्वा कर के इन गुमराहियों में डाला ताकि उन्हें दिने इस्माईली से मुन्हरिफ़ करें **275** : मुशिकीन अपने बा'जू मवेशियों और खेतियों को अपने बातिल मा'बूदों के साथ नामजुद कर के कि **276** : मम्नुअल इन्तिफ़ाअ (फ़ाएदा उठाना मन्अ) **277** : या'नी बुतों की खिदमत करने वाले वग़ैरा।

278 : जिन को बहीरा, साइबा, हामी कहते हैं। **279** : बल्कि उन बुतों के नाम पर जब्द करते हैं और इन तमाम अफ़आल की निस्वत यह खयाल करते हैं कि इन्हें **अल्लाह** ने इस का हुकम दिया है। **280** : सिर्फ़ उन्हीं के लिये हलाल है अगर ज़िन्दा पैदा हो। **281** : मर्द व औरत

وَصَفَهُمْ ۗ إِنَّهُ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿١٣٩﴾ قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ قَتَلُوا أَوْلَادَهُمْ

उन बातों का बदला देगा बेशक वोह इल्म, हिकमत वाला है बेशक तबाह हुए वोह जो अपनी औलाद को कत्ल करते हैं

سَفَهًا بِغَيْرِ عِلْمٍ وَحَرْمُوا مَارَزَقَهُمُ اللَّهُ افْتِرَاءً عَلَى اللَّهِ ۗ قَدْ

अहमकाना जहालत से²⁸² और ह्राम ठहराते हैं वोह जो **अल्लाह** ने उन्हें रोजी दी²⁸³ **अल्लाह** पर झूट बांधने को²⁸⁴ बेशक

ضَلُّوا وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ۗ وَهُوَ الَّذِي أَنشَأَ جَنَّتٍ مَّعْرُوشٍ

वोह बहके और राह न पाई²⁸⁵ और वोही है जिस ने पैदा किये बाग़ कुछ ज़मीन पर छए [छए] हुए²⁸⁶

وَغَيْرِ مَّعْرُوشٍ وَالنَّخْلِ وَالزَّرْعِ مُخْتَلِفًا أُكْلُهُ وَالرَّيْتُونَ

और कुछ बे छए [बे फैले] और खजूर और खेती जिस में रंग रंग के खाने²⁸⁷ और जैतून

وَالرُّمَّانَ مُتَشَابِهًا وَغَيْرِ مُتَشَابِهٍ ۗ كُلُوا مِنْ ثَمَرِهِ إِذَا أَثَرَ

और अनार किसी बात में मिलते²⁸⁸ और किसी में अलग²⁸⁹ खाओ उस का फल जब फल लाए

وَاتُوا حَقَّهُ يَوْمَ حَصَادِهِ ۗ وَلَا تَسْرِفُوا ۗ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ ﴿١٤١﴾

और उस का हक़ दो जिस दिन कटे²⁹⁰ और बे जा न खर्चों²⁹¹ बेशक बे जा खर्चने वाले उसे पसन्द नहीं

وَمِنَ الْأَنْعَامِ حَمُولَةٌ وَفَرَسَاتٌ ۗ كُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعُوا

और मवेशी में से कुछ बोझ उठाने वाले और कुछ ज़मीन पर बिछे²⁹² खाओ उस में से जो **अल्लाह** ने तुम्हें रोजी दी और शैतान

282 शाने नुज़ूल : यह आयत ज़मानए जाहिलियत के उन लोगों के हक़ में नाज़िल हुई जो अपनी लड़कियों को निहायत संगदिली और बे रहमी के साथ ज़िन्दा दरगोर कर दिया करते थे, रबीआ व मुज़र वगैरा क़बाइल में इस का बहुत रवाज था और जाहिलियत के बा'ज लोग लड़कों को भी कत्ल करते थे और बे रहमी का यह आलम था कि कुत्तों की परवरिश करते और औलाद को कत्ल करते थे उन की निस्बत यह इशार्द हुवा कि तबाह हुए। इस में शक नहीं कि औलाद **अल्लाह** तआला की ने'मत है और इस की हलाकत से अपनी ता'दाद कम होती है अपनी नस्ल मिटती है यह दुन्या का ख़सारा है घर की तबाही है और आख़िरत में इस पर अज़ाबे अज़ीम है तो यह अमल दुन्या और आख़िरत दोनों में तबाही का बाइस हुवा और अपनी दुन्या और आख़िरत दोनों को तबाह कर लेना और औलाद जैसी अज़ीज और प्यारी चीज़ के साथ इस क़िसम की सफ़फ़ाकी और बे दर्दी गवारा करना इन्तिहा दरजे की हमाक़त और जहालत है। **283** : या'नी बहरे, साइबा, हामी वगैरा जो मज़कूर हो चुके। **284** : क्यूं कि वोह यह गुमान करते हैं कि ऐसे मज़ूम अफ़ाल का **अल्लाह** ने हुक़म दिया है कि उन का यह ख़याल **अल्लाह** पर इफ़्तरा है। **285** : हक़ व सवाब की। **286** : या'नी टेटों (सहारे) पर काइम किये हुए मिस्ल अंगूर वगैरा के **287** : रंग और मजे और मिक्दार और ख़ुशबू में बाहम मुख़लिफ़ **288** : मसलन रंग में या पत्तों में **289** : मसलन जाएके और तासीर में। **290** : मा'ना यह है कि यह चीज़ें जब फलें खाना तो उसी वक़्त से तुम्हारे लिये मुबाह है और उस की ज़कात या'नी उशर उस के कामिल होने के बा'द वाजिब होता है जब खेती काटी जाए या फल तोड़े जाएं। **मसअला** : लकड़ी, बांस, घास के सिवा ज़मीन की बाक़ी पैदावार में अगर यह पैदावार बारिश से हो तो उस में उशर वाजिब होता है और अगर रहट (चरखे) वगैरा से हो तो निस्फ़ उशर। **291** : हज़रते मुतज़िम **فَدَسْ سُوْهُ** ने इसराफ़ का तरजमा बे जा खर्च करना फ़रमाया, निहायत ही नफ़ीस तरजमा है अगर कुल माल खर्च कर डाला और अपने अयाल को कुछ न दिया और खुद फ़कीर बन बैठा तो सुदी का कौल है कि यह खर्च बे जा है और अगर सदका देने ही से हाथ रोक लिया तो यह भी बे जा और दाख़िले इसराफ़ है जैसा कि सईद बिन मुसय्यब **رَضِيَ اللهُ عَنْهُ** ने फ़रमाया। सुफ़यान का कौल है कि **अल्लाह** की ताअत के सिवा और काम में जो माल खर्च किया जावे वोह क़लील भी हो तो इसराफ़ है। ज़ोहरी का कौल है कि इस के मा'ना यह है कि मा'सियत में खर्च न करो। मुजाहिद ने कहा : हक़कुल्लाह

خُطُوتِ الشَّيْطَانِ ۖ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿١٣٢﴾ ثَنِیَّةَ أَرْوَاجٍ ۚ مِنَ الضَّانِّ

के कदमों पर न चलो बेशक वोह तुम्हारा सरीह दुश्मन है आठ नर और मादा एक जोड़ा भेड़

اِثْنَيْنِ وَمِنَ الْمَعْرَاضَيْنِ ۖ قُلْ لِّلذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ أَمَّا الْاُنْثَيَيْنِ

का और एक जोड़ा बकरी का तुम फ़रमाओ क्या उस ने दोनों नर ह़राम किये या दोनों मादा

أَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ أَرْحَامُ الْأُنْثَيَيْنِ ۖ نَبِّئُونِي بِعِلْمٍ إِن كُنْتُمْ

या वोह जिसे दोनों मादा पेट में लिये हैं²⁹³ किसी इल्म से बताओ अगर तुम

صَادِقِينَ ۚ ﴿١٣٣﴾ وَمِنَ الْإِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْبَقَرِ اثْنَيْنِ ۖ قُلْ

सच्चे हो और एक जोड़ा ऊंट का और एक जोड़ा गाय का तुम फ़रमाओ

لِّلذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ أَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ أَرْحَامُ

क्या उस ने दोनों नर ह़राम किये या दोनों मादा या वोह जिसे दोनों मादा पेट में

الْاُنْثَيَيْنِ ۖ أَمْ كُنْتُمْ شُهَدَاءَ إِذْ وَصَّيَكُمُ اللَّهُ بِهَذَا ۚ فَمَنْ أَظْلَمُ

लिये हैं²⁹⁴ क्या तुम मौजूद थे जब **اللَّهُ** ने तुम्हें येह हुक्म दिया²⁹⁵ तो उस से बढ़ कर ज़ालिम

में कोताही करना इसराफ़ है और अगर अबू कुबैस पहाड़ सोना हो और उस तमाम को राहें खुदा में खर्च कर दो तो इसराफ़ न हो और एक दिरहम मा'सियत में खर्च करो तो इसराफ़। 292 : चौपाए दो किसम के होते हैं : कुछ बड़े जो लादने के काम में आते हैं कुछ छोटे मिसल बकरी वगैरा के जो इस काबिल नहीं, इन में से जो **اللَّهُ** तआला ने हलाल किये उन्हें खाओ और अहले जाहिलियत की तरह **اللَّهُ** की हलाल फ़रमाई हुई चीज़ों को ह़राम न ठहराओ। 293 : या'नी **اللَّهُ** तआला ने न भेड़ बकरी के नर ह़राम किये न उन की मादाएं ह़राम कीं न उन की औलाद, इन में तुम्हारा येह फ़ैल कि कभी नर ह़राम ठहराओ कभी मादा कभी उन के बच्चे येह सब तुम्हारा इख़्तिराअ है (या'नी तुम्हारी ईजाद है) और हवाए नफ़स का इत्तिबाअ। कोई हलाल चीज़ किसी के ह़राम करने से ह़राम नहीं होती। 294 : इस आयत में अहले जाहिलियत को तौबीख़ की गई जो अपनी तरफ़ से हलाल चीज़ों को ह़राम ठहरा लिया करते थे जिन का ज़िक्र ऊपर की आयत में आ चुका है। जब इस्लाम में अहकाम का बयान हुवा तो उन्होंने ने नबिये करीम **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** से जिदाल (झगड़ा) किया और उन का ख़तीब मालिक बिन औफ़ जुशमी सख़ियदे आलम **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की ख़िदमत में हाज़िर हो कर कहने लगा कि या मुहम्मद ! (**صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ**) हम ने सुना है की आप उन चीज़ों को ह़राम करते हैं जो हमारे बाप दादा करते चले आए हैं, हुज़ूर ने फ़रमाया : तुम ने बिगैर किसी अस्ल के चन्द किसमें चौपायों की ह़राम कर लीं और **اللَّهُ** तआला ने आठ नर व मादा अपने बन्दों के खाने और उन के नफ़अ उठाने के लिये पैदा किये, तुम ने कहां से उन्हें ह़राम किया ? उन में हुरमत नर की तरफ़ से आई या मादा की तरफ़ से ? मालिक बिन औफ़ येह सुन कर साकित और मुतहय्यिर (हैरान) रह गया और कुछ न बोल सका, नबी **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया : बोलता क्यूं नहीं ? कहने लगा : आप फ़रमाइये मैं सुनूंगा ! **سُبْحَانَ اللهِ !** सख़ियदे आलम **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** के कलाम की कुव्वत और ज़ोर ने अहले जाहिलियत के ख़तीब को साकित व हैरान कर दिया और वोह बोल ही क्या सकता था अगर कहता कि नर की तरफ़ से हुरमत आई तो लाज़िम होता कि तमाम नर ह़राम हों अगर कहता कि मादा की तरफ़ से तो ज़रूरी होता कि हर एक मादा ह़राम हो और अगर कहता जो पेट में है वोह ह़राम है तो फिर सब ही ह़राम हो जाते क्यूं कि जो पेट में रहता है वोह नर होता है या मादा। वोह जो तख़्सीसें काइम करते थे और बा'ज को हलाल और बा'ज को ह़राम क़रार देते थे इस हुज़्जत ने उन के इस दा'वए तहरीम को बातिल कर दिया, इलावा बरीं उन से येह दरयाफ़्त करना कि **اللَّهُ** ने नर ह़राम किये हैं या मादा या उन के बच्चे येह मुन्किरे नुबुव्वत मुख़ालिफ़ को इक़ारे नुबुव्वत पर मजबूर करता था क्यूं कि जब तक नुबुव्वत का वासिता न हो तो **اللَّهُ** तआला की मरज़ी और उस का किसी चीज़ को ह़राम फ़रमाना कैसे जाना जा सकता है। चुनाच्चे अगले जुम्ले ने इस को साफ़ किया है। 295 : जब येह नहीं है और नुबुव्वत का तो इक़ार नहीं करते तो इन अहकामे हुरमत को **اللَّهُ** की तरफ़ निस्वत करना किज़ब व बातिल व इफ़्तिराए ख़ालिस है।

مِمَّنْ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا لِّيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ إِنَّ اللَّهَ

कौन जो अल्लाह पर झूट बांधे कि लोगों को अपनी जहालत से गुमराह करे बेशक अल्लाह

لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝ ۱۳۳ قُلْ لَا أَجِدُ فِي مَا أُوحِيَ إِلَيَّ مُحَرَّمًا

ज़ालिमों को राह नहीं दिखाता तुम फ़रमाओ²⁹⁶ मैं नहीं पाता उस में जो मेरी तुरफ़ वहुय हुई किसी खाने

عَلَى طَاعِمٍ يَطْعَمُهُ إِلَّا أَنْ يَكُونَ مَيْتَةً أَوْ دَمًا مَّسْفُوحًا أَوْ لَحْمَ

वाले पर कोई खाना ह्राम²⁹⁷ मगर यह कि मुर्दार हो या रगों का बहता खून²⁹⁸ या बद जानवर का

خنزير فَإِنَّهُ رَجَسٌ أَوْ فِسْقًا أُهْلًا لِّغَيْرِ اللَّهِ بِهِ ۗ فَمَنْ اضْطُرَّ غَيْرَ

गोशत कि वोह नजासत है या वोह बे हुक्मी का जानवर जिस के ज़ब्त में ग़ैर खुदा का नाम पुकारा गया तो जो नाचार हुवा²⁹⁹ न यूं कि आप ख़्वाहिश

بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَإِنَّ رَبَّكَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ ۱۳۵ وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا

करे और न यूं कि ज़रूरत से बड़े तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है³⁰⁰ और यहूदियों पर हम ने

حَرَّمَ كُلَّ ذِي ظُفْرٍ ۚ وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ حَرَّمَ عَلَيْهِنَّ شَحُومَهُمَا

ह्राम किया हर नाखुन वाला जानवर³⁰¹ और गाय और बकरी की चरबी उन पर ह्राम की

إِلَّا مَا حَصَلَتْ ظُهُورُهُمَا أَوِ الْحَوَايَا أَوْ مَا اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ ۗ ذَلِكَ

मगर जो उन की पीठ में लगी हो या आंत में या हड्डी से मिली हो हम ने

جَزَائِهِمْ بِبَغْيِهِمْ ۗ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ۝ ۱۳۶ فَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقُلْ رَبُّكُمْ

येह उन की सरकशी का बदला दिया³⁰² और बेशक हम ज़रूर सच्चे हैं फिर अगर वोह तुम्हें झुटलाएं तो तुम फ़रमाओ कि तुम्हारा रब

ذُو رَحْمَةٍ وَاسِعَةٍ ۚ وَلَا يُرَدُّ بَأْسُهُ عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِينَ ۝ ۱۳۷

वसीअ़ रहमत वाला है³⁰³ और उस का अज़ाब मुजरिमों पर से नहीं टाला जाता³⁰⁴

²⁹⁶ : उन जाहिल मुश्रिकों से जो हलाल चीजों को अपनी ख़्वाहिशे नफ़्स से ह्राम कर लेते हैं। ²⁹⁷ : इस में तम्बीह है कि हुरमत जिहते शरअ़ से साबित होती है, न हवाए नफ़्स से। **मसअला** : तो जिस चीज़ की हुरमत शरअ़ में वारिद न हो उस को ना जाइज़ व ह्राम कहना बातिल। सुबूते हुरमत ख़्वाह वहुये कुरआनी से हो या वहुये हदीस से येही मो'तबर है। ²⁹⁸ : तो जो खून बहता न हो मिस्ल जिगर व तिल्ली के वोह ह्राम नहीं। ²⁹⁹ : और ज़रूरत ने उसे इन चीजों में से किसी के खाने पर मजबूर किया ऐसी हालत में मुज़्तर हो कर उस ने कुछ खाया। ³⁰⁰ : इस पर मुआख़ज़ा न फ़रमाएगा। ³⁰¹ : जो उंगली रखता हो ख़्वाह चौपाया हो या परिन्द इस में ऊंट और शतुर मुर्ग़ दाखिल हैं। (سرك) बा'ज़ मुफ़स्सरीन का कौल है कि यहां शतुर मुर्ग़ और बत् (बत्ख) और ऊंट खास तौर पर मुराद हैं। ³⁰² : यहद अपनी सरकशी के बाइस उन चीजों से महरूम किये गए लिहाजा येह चीजें उन पर ह्राम रहीं और हमारी शरीअ़त में गाय बकरी की चरबी और ऊंट और बत् और शतुर मुर्ग़ हलाल हैं इसी पर सहाबा और ताबिईन का इज्माअ़ है। (تفسير احمدی) ³⁰³ : मुक़ज़िबीन (झुटलाने वालों) को मोहलत देता है और अज़ाब में जल्दी नहीं फ़रमाता ताकि उन्हें ईमान लाने का मौक़अ़ मिले। ³⁰⁴ : अपने वक्त पर आ ही जाता है।

سَيَقُولُ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَشْرَكْنَا وَلَا آبَاؤُنَا

अब कहेंगे मुश्रिक कि³⁰⁵ **अल्लाह** चाहता तो न हम शिक्र करते न हमारे बाप दादा

وَلَا حَرَمْنَا مِنْ شَيْءٍ ۗ كَذَلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ حَتَّى ذَاقُوا

न हम कुछ ह्राम ठहराते³⁰⁶ ऐसा ही इन से अगलों ने झुटलाया था यहां तक कि हमारा

بِأَسْنَاءِ قُلُوبِ هَلْ عِنْدَكُمْ مِنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوهُ لَنَا ۗ إِنْ تَتَّبِعُونَ إِلَّا

अज्ञाब चखा³⁰⁷ तुम फरमाओ क्या तुम्हारे पास कोई इल्म है कि उसे हमारे लिये निकालो तुम तो निरे गुमान

الظَّنَّ وَإِنْ أَنْتُمْ إِلَّا تَخْرُصُونَ ﴿١٣٨﴾ قُلْ فَلِلَّهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ ۗ فَلَوْ

के पीछे हो और तुम यूँही तख्मीने करते हो³⁰⁸ तुम फरमाओ तो **अल्लाह** ही की हुज्जत पूरी है³⁰⁹ तो वोह

شَاءَ لَهْدَكُمْ أَجْعَبِينَ ﴿١٣٩﴾ قُلْ هَلْ مِنْكُمْ شَهِدٌ آءَكُمُ الَّذِينَ يَشْهَدُونَ

चाहता तो तुम सब को हिदायत फरमाता तुम फरमाओ लाओ अपने वोह गवाह जो गवाही दें

أَنَّ اللَّهَ حَرَّمَ هَذَا ۗ فَإِنْ شَهِدُوا فَلَا تَشْهَدُ مَعَهُمْ ۗ وَلَا تَتَّبِعْ

कि **अल्लाह** ने इसे ह्राम किया³¹⁰ फिर अगर वोह गवाही दे बैठें³¹¹ तो ऐ सुनने वाले उन के साथ गवाही न देना और उन की ख्वाहिशों

أَهْوَاءِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ وَهُمْ

के पीछे न चलना जो हमारी आयतें झुटलाते हैं और जो आखिरत पर ईमान नहीं लाते और अपने

بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُونَ ﴿١٤٠﴾ قُلْ تَعَالَوْا أَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبِّي عَلَيْكُمْ أَلَّا

रब का बराबर वाला ठहराते हैं³¹² तुम फरमाओ आओ मैं तुम्हें पढ़ सुनाऊं जो तुम पर तुम्हारे रब ने ह्राम किया³¹³ यह कि

تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا ۗ وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ مِنْ

उस का कोई शरीक न करो और मां बाप के साथ भलाई³¹⁴ और अपनी औलाद कत्ल न करो

305 : यह खबरे ग़ैब है कि जो बात वोह कहने वाले थे वोह बात पहले से बयान फरमा दी। **306** : हम ने जो कुछ किया यह सब **अल्लाह** की मशियत से हुवा, यह दलील है इस की, कि वोह इस से राजी है। **307** : और यह उज्रें बातिल उन के कुछ काम न आया क्यूं कि किसी अम्र का मशियत में होना उस की मरजी व मामूर होने को मुस्तल्जिम नहीं, मरजी वोही है जो अम्बिया के वासिते से बताई गई और उस का अम्र फरमाया गया। **308** : और ग़लत अट्कलें चलाते हो। **309** : कि उस ने रसूल भेजे किताबें नाज़िल फरमाई और राहे हक़ वाजेह कर दी। **310** : जिसे तुम अपने लिये ह्राम करार देते हो और कहते हो कि **अल्लाह** तआला ने हमें इस का हुक्म दिया है। यह गवाही इस लिये तलब की गई कि जाहिर हो जाए कि कुफ़्फ़ार के पास कोई शाहिद नहीं है और जो वोह कहते हैं वोह उन की तराशीदा बात है। **311** : इस में तम्बीह है कि अगर यह शहादत वाकेअ़ हो भी तो वोह महज़ इत्तिबाए हवा और किञ्च व बातिल होगी। **312** : बुतों को मा'बूद मानते हैं और शिक्र में गिरिफ़्तार हैं। **313** : उस का बयान यह है **314** : क्यूं कि तुम पर उन के बहुत हुकूक हैं उन्हों ने तुम्हारी परवरिश की, तुम्हारे साथ शफ़क़त और मेहरबानी का सुलूक किया, तुम्हारी हर ख़तरे से निगहबानी की, उन के हुकूक का लिहाज़ न करना और उन के साथ हुस्ने सुलूक का तर्क करना ह्राम है।

إِمْلَاقٍ ۖ نَحْنُ نَرِزُقُكُمْ وَإِيَّاهُمْ ۖ وَلَا تَقْرُبُوا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ

मुफ़िलसी के बाइस हम तुम्हें और उन्हें सब को रिज़्क देंगे³¹⁵ और बे हयाइयों के पास न जाओ जो इन में

مِنْهَا وَمَا بَطَّنَ ۚ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ ۖ

खुली हैं और जो छुपी³¹⁶ और जिस जान की **ALLAH** ने हुरमत रखी उसे नाहक़ न मारो³¹⁷

ذِكْمٌ وَصُكْمٌ بِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٥١﴾ وَلَا تَقْرَبُوا أَمْوَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا

येह तुम्हें हुक्म फ़रमाया है कि तुम्हें अक्ल हो और यतीमों के माल के पास न जाओ मगर

بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ حَتَّىٰ يَبْلُغَ أَشُدَّهُ ۚ وَأَوْفُوا بِالْكِيلِ وَالْبَيْزَانِ

बहुत अच्छे तरीके से³¹⁸ जब तक वोह अपनी जवानी को पहुंचे³¹⁹ और नाप और तोल इन्साफ़ के साथ

بِالْقِسْطِ ۚ لَا تُكْفِفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ۚ وَإِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوا وَلَوْ كَانَ

पूरी करो हम किसी जान पर बोझ नहीं डालते मगर उस के मक़दूर भर और जब बात कहो तो इन्साफ़ की कहे अगर्चे तुम्हारे

ذَاقِرْبَىٰ ۚ وَبِعَهْدِ اللَّهِ أَوْفُوا ۖ ذِكْمٌ وَصُكْمٌ بِهِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٥٢﴾

रिश्तेदार का मुआमला हो और **ALLAH** ही का अहद पूरा करो येह तुम्हें ताकीद फ़रमाई कि कहीं तुम नसीहत मानो

وَأَنَّ هَذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ فَاتَّبِعُوهُ ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ

और येह कि³²⁰ येह है मेरा सीधा रास्ता तो इस पर चलो और और राहें न चलो³²¹ कि तुम्हें

بِكُمْ عَنْ سَبِيلِهِ ۖ ذِكْمٌ وَصُكْمٌ بِهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿٥٣﴾ ثُمَّ آتَيْنَا

उस की राह से जुदा कर देंगी येह तुम्हें हुक्म फ़रमाया कि कहीं तुम्हें परहेज़ गारी मिले फिर हम ने

مُوسَى الْكِتَابَ تَمَامًا عَلَىٰ الَّذِي أَحْسَنَ وَتَفْصِيلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ

मूसा को किताब अता फ़रमाई³²² पूरा एहसान करने को उस पर जो निकोकार है और हर चीज़ की तफ़्सील

315 : इस में औलाद को जिन्दा दरगोर करने और मार डालने की हुरमत बयान फ़रमाई गई जिस का अहले जाहिलियत में दस्तूर था कि वोह अक्सर नादारी के अन्देशे से औलाद को हलाक करते थे उन्हें बताया गया कि रोज़ी देने वाला तुम्हारा, उन का, सब का **ALLAH** है फिर तुम क्यूं क़त्ल जैसे शदीद जुर्म का इरतिकाब करते हो। **316** : क्यूं कि इन्सान जब खुले और जाहिर गुनाह से बचे और छुपे गुनाह से परहेज़ न करे तो उस का जाहिर गुनाह से बचना भी लिल्लाहियत से नहीं लोगों के दिखाने और उन की बदगोई से बचने के लिये है और **ALLAH** की रिज़ा व संवाब का मुस्तहिक् वोह है जो उस के ख़ौफ़ से गुनाह तर्क करे। **317** : वोह उमूर जिन से क़त्ल मुबाह होता है येह हैं : मुरतद होना या क़िसास या बियाहे हुए का जिना। बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया : कोई मुसल्मान जो "إِلَّا لِلَّهِ مُسْتَقِيمٌ رَسُولُ اللَّهِ" की गवाही देता हो उस का खून हलाल नहीं मगर इन तीन सबबों में से किसी एक सबब से या तो बियाहे होने के बा वुजूद उस से जिना सरज़द हुवा हो या उस ने किसी को नाहक़ क़त्ल किया हो और उस का क़िसास उस पर आता हो या वोह दीन छोड़ कर मुरतद हो गया हो। **318** : जिस से उस का फ़ाएदा हो। **319** : उस वक़्त उस का माल उस के सिपुर्द कर दो। **320** : इन दोनों आयतों में जो हुक्म दिया। **321** : जो इस्लाम के ख़िलाफ़ हों यहूदियत हो या

وَهُدًى وَرَحْمَةً لِّعَالَمِهِمْ بِإِقْدَارٍ ۗ وَهَذَا كِتَابٌ

और हिदायत और रहमत कि कहीं वोह³²³ अपने रब से मिलने पर ईमान लाए³²⁴ और येह बरकत वाली किताब³²⁵

أَنْزَلْنَاهُ مُبَارَكٌ فَاتَّبِعُوهُ وَاتَّقُوا الْعَلَّمَ تَرْحَمُونَ ۗ أَنْ تَقُولُوا

हम ने उतारी तो इस की पैरकी करो और परहेज गारी करो कि तुम पर रहम हो कभी कहे

إِنَّمَا أَنْزَلَ الْكِتَابَ عَلَى طَائِفَتَيْنِ مِنْ قَبْلِنَا ۗ وَإِنْ كُنَّا عَنْ

कि किताब तो हम से पहले दो गुरीहों पर उतरी थी³²⁶ और हमें उन के

دِرَاسَتِهِمْ لَغَفِيلِينَ ۗ أَوْ تَقُولُوا لَوْ أَنَّا أَنْزَلْنَا الْكِتَابَ لَكُنَّا

पढ़ने पढ़ाने की कुछ खबर न थी³²⁷ या कहे कि अगर हम पर किताब उतरती तो हम उन से

أَهْدَى مِنْهُمْ ۗ فَقَدْ جَاءَكُمْ بَيِّنَةٌ مِنْ رَبِّكُمْ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ

ज़ि़यादा ठीक राह पर होते³²⁸ तो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की रोशन दलील और हिदायत और रहमत आई³²⁹

فَنَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَّبَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَصَدَفَ عَنْهَا ۗ سَنَجْزِي الَّذِينَ

तो उस से ज़ि़यादा ज़ालिम कौन जो **अल्लाह** की आयतों को झुटलाए और उन से मुंह फेरे अन्क़रीब वोह जो हमारी

يَصْدِفُونَ عَنْ آيَاتِنَا سُوءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا يَصْدِفُونَ ۗ هَلْ

आयतों से मुंह फेरते हैं हम उन्हें बुरे अज़ाब की सज़ा देंगे बदला उन के मुंह फेरने का काहे के

يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمُ الْمَلَائِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ رَبُّكَ أَوْ يَأْتِيَ بَعْضُ آيَاتِ

इन्तिज़ार में हैं³³⁰ मगर येह कि आएँ उन के पास फ़िरिश्ते³³¹ या तुम्हारे रब का अज़ाब आए या तुम्हारे रब की एक निशानी

رَبِّكَ ۗ يَوْمَ يَأْتِي بَعْضُ آيَاتِ رَبِّكَ لَا يَنْفَعُ نَفْسًا إِيْمَانُهَا لَمْ تَكُنْ

आए³³² जिस दिन तुम्हारे रब की वोह एक निशानी आएगी किसी जान को ईमान लाना काम न देगा जो पहले

नसरानिय्यत या और कोई मिल्लत 322 : तौरैत 323 : या'नी बनी इसराईल 324 : और बअस व हिसाब और सवाब व अज़ाब और दीदार इलाही की तस्दीक करें । 325 : या'नी कुरआन शरीफ़ जो कसीरुल ख़ैर और कसीरुल नफ़अ और कसीरुल बरकत है और कियामत तक बाकी रहेगा और तहरीफ़ व तब्दील व नस्ख़ से महफूज़ रहेगा । 326 : या'नी यहूदो नसारा पर तौरैत और इन्जील 327 : क्यूं कि वोह हमारी ज़बान ही में न थी न हमें किसी ने उस के मा'ना बताए **अल्लाह** तआला ने कुरआने करीम नाज़िल फ़रमा कर उन के इस उज़्र को क़त्अ़ फ़रमा दिया । 328 : कुफ़र की एक जमाअत ने कहा था कि यहूदो नसारा पर किताबें नाज़िल हुईं मगर वोह बद अक्ली में गिरफ़्तार रहे उन किताबों से मुन्तफ़ेअ़ (नफ़अ उठाने वाले) न हुए हम उन को तरह ख़फ़ीफ़ुल अक्ल (कम अक्ल) और नादान नहीं हैं हमारी अक्ले सहीह हैं हमारी अक्लो ज़हानत और फ़हमो फ़िरासत ऐसी है कि अगर हम पर किताब उतरती तो हम ठीक राह पर होते, कुरआन नाज़िल फ़रमा कर उन का येह उज़्र भी क़त्अ़ फ़रमा दिया । चुनान्चे आगे इर्शाद होता है 329 : या'नी येह कुरआने पाक जिस में हुज्जते वाज़ेहा और बयाने साफ़ और हिदायत व रहमत है । 330 : जब वहदानिय्यत व रिसालत पर ज़बर दस्त हुज्जतें काइम हो चुकीं और ए'तिकादाते कुफ़्रो ज़लाल का बुतलान ज़ाहिर कर दिया गया तो अब ईमान लाने में क्यूं तवक्कुफ़ है क्या इन्तिज़ार बाकी है ? 331 : उन

أَمِنْتَ مِنْ قَبْلُ أَوْ كَسَبَتْ فِي إِيمَانِهَا خَيْرًا ۗ قُلْ انْتَظِرُوا إِنَّا

ईमान न लाई थी या अपने ईमान में कोई भलाई न कमाई थी³³³ तुम फ़रमाओ रस्ता देखो³³⁴ हम

مُنْتَظِرُونَ ﴿٥٨﴾ إِنَّ الَّذِينَ فَرَقُوا دِينَهُمْ وَكَانُوا شِيعًا لَسْتَ مِنْهُمْ

भी देखते हैं वोह जिन्होंने ने अपने दीन में जुदा जुदा राहें निकालीं और कई गुरौह हो गए³³⁵ ऐ महबूब तुम्हें उन से कुछ

فِي شَيْءٍ ۗ إِنبَاءٌ لَهُمْ إِلَى اللَّهِ ثُمَّ يَنْبِئُهُمْ بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿٥٩﴾

अलाका (तअल्लुक) नहीं उन का मुआमला **अल्लाह** ही के हवाले है फिर वोह उन्हें बता देगा जो कुछ वोह करते थे³³⁶

مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ عَشْرٌ أَمْثَلِهَا ۖ وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا

जो एक नेकी लाए तो उस के लिये उस जैसी दस हैं³³⁷ और जो बुराई लाए तो उसे

يُجْزَى إِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٦٠﴾ قُلْ إِنِّي هَدَيْتُنِي رَبِّي إِلَىٰ

बदला न मिलेगा मगर उस के बराबर और उन पर जुल्म न होगा तुम फ़रमाओ बेशक मुझे मेरे रब ने

صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۚ دِينًا قَبِيلاً مِّلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا ۚ وَمَا كَانَ مِنَ

सीधी राह दिखाई³³⁸ ठीक दीन इब्राहीम की मिल्लत जो हर बातिल से जुदा थे और मुश्रिक

الشُّرِكِينَ ﴿٦١﴾ قُلْ إِن صَّلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ

न थे³³⁹ तुम फ़रमाओ बेशक मेरी नमाज़ और मेरी कुरबानियां और मेरा जीना और मेरा मरना सब **अल्लाह** के लिये है

की अरवाह कब्ज़ करने के लिये **332** : क़ियामत की निशानियों में से । जुम्हूर मुफ़स्सरीन के नज़्दीक इस निशानी से आप्ताब का मग़रिब से तुलूअ होना मुराद है । तिरमिज़ी की हदीस में भी ऐसा ही वारिद है । बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि क़ियामत काइम न होगी जब तक आप्ताब मग़रिब से तुलूअ न करे और जब वोह मग़रिब से तुलूअ करेगा और उसे लोग देखेंगे तो सब ईमान लाएंगे और येह ईमान नफ़्अ न देगा **333** : या'नी ताअत न की थी, मा'ना येह हैं कि निशानी आने से पहले जो ईमान न लाए निशानी के बा'द उस का ईमान कबूल नहीं इसी तरह जो निशानी से पहले तौबा न करे बा'द निशानी के उस की तौबा कबूल नहीं लेकिन जो ईमानदार पहले से नेक अमल करते होंगे निशानी के बा'द भी उन के अमल मकबूल होंगे । **334** : उन में से किसी एक का या'नी मौत के फ़िरिशतों की आमद या अज़ाब या निशानी आने का । **335** : मिस्ल यहूदो नसारा के । हदीस शरीफ़ में है यहूद इक्वत्तर फ़िके हो गए उन से सिर्फ़ एक नाजी (नजात पाने वाला) है बाकी सब नारी और नसारा बहत्तर फ़िके हो गए एक नाजी बाकी सब नारी और मेरी उम्मत तिहत्तर फ़िके हो जाएगी । वोह सब के सब नारी होंगे सिवाए एक के जो सवादे आ'ज़म या'नी बड़ी जमाअत है और एक रिवायत में है कि जो मेरी और मेरे अस्थाब की राह पर है । **336** : और आख़िरत में उन्हें अपने किरदार का अन्जाम मा'लूम हो जाएगा । **337** : या'नी एक नेकी करने वाले को दस नेकियों की जज़ा और येह भी हद व निहायत के तरीके पर नहीं बल्कि **अल्लाह** तआला जिस के लिये जितना चाहे उस की नेकियों को बढ़ाए एक के सात सो करे या बे हिसाब अता फ़रमाए, अस्ल येह है कि नेकियों का सवाब महज़ फ़ज़ल है येही मज़हब है अहले सुन्नत का और बदी की इतनी ही जज़ा येह अद्ल है । **338** : या'नी दीने इस्लाम जो **अल्लाह** को मकबूल है । **339** : इस में कुपफ़ारे कुरैश का रद है जो गुमान करते थे कि वोह दीने इब्राहीमी पर हैं **अल्लाह** तआला ने फ़रमाया कि हज़रते इब्राहीम **عليه السلام** मुश्रिक व बुत परस्त न थे तो बुत परस्ती करने वाले मुश्रिकीन का येह दा'वा कि वोह इब्राहीमी मिल्लत पर हैं बातिल है ।

